

## ॥ अनुक्रमणिका ॥

अंक	प्रत्येक लावणीनु प्रथम पद	पृष्ठांक
	प्रथम श्री जिनदासजी कृत घन०	१
१	चख चेतन श्रव ठठ कर अपने जिन०	३
२	तुम नजो जिनेसर देव सुगति पद पाड०	४
३	कथ देखु जिनवर देव ०	६
४	एक जिनवरका निज नाम हैयामें खेनां०	७
५	खघर नहीं या जुगमें पक्षकी रे०	८
६	हारे तु कुमति कखेसण नार, खगी०	९
७	तुम तजो जगतका ख्याल इसकका०	११
८	सुगुरुकी शीख हिये धरनां रे सु०	१२
९	तु ठखज्यो हे जजोख जगतमें०	१३
१०	सुकृतकी बात तेरे हाथ रति ना रहीरे०	१५
११	अने हारे खान नहि खीयो जिनंद०	१६
१२	तजो काम मद मान खाल जिनघर०	१७
१३	अगम पथ जानां हे नाइ रे अगम०	१९
१४	सुरग आस मत करे कखेशी०	२०
१५	अरी अरी माछ मेरो नेम गयो०	२२
१६	सजन समजायो अपने माकुरे०	२३

१७ में अबला हूं अजाण लाल तेरे०	२४
१८ अने हारे पिया विन जुर जुर में	२७
१९ सज्जन विन गुना तजी हमकुं सती०	२८
२० तुम तज कर राजुल नार, तज्या०	३०
२१ दे गया दगा दिलदार सुनो मेरी माइ०	३१
२२ श्री आदिनाथ निरवाणी नमुं ऐसे०	३१
२३ अब सदा नमुं सरसती तेरी किरतकुं०	३४
२४ श्री संखेश्वर पास जिनेसर अरज०	३५
२५ मूलक बीच मगसी पारसका बाज०	३६
२६ मन सुण रे तेरी सफल घन्ती श्रावककी०	३७
२७ सिद्ध सरूपी सदा पद तेरो, तुं मूरख०	३९
२८ आप समजका घर नहि पाया०	३९
२९ वीत गयो नरजवको अवसर०	४१
३० ओगुण कव लग कहुं दिल तेरा०	४३
३१ गइ सब तेरी शील समता, लपट०	४४
३२ सदा नमुं जिनराज चरनकुं कीयो०	४४
३३ कृपा करो संखेसर साहेब, गुणधामी०	४६
३४ वंदत हे कोइ सभेतशिखरकुं, दुरगति०	४६
३५ सुणजो वाता राव सदाशिव मत चरु०	४७

३६ जगत त्रिविक्रम कज महेर अर्नत गुण०	४०
३७ सुम समुद्र विजयका तक्ष, थरज सुन०	५१
३८ आनद वरते मंगलप्रभु नाम लीला०	५३
३९ दु ख दुष्ट भुगता दृष्टो नरकवासी०	५४
४० श्रद्धापदवी जीत दृवा नेत्रधारी०	५५
४१ कुजाप जपतां घणो कास खीयो०	५६
४२ नेमनाथ जिनवरको वदन मुख०	५७
४३ सुणो सखीरी रग महेसमें में फीरतीथी०	५८
४४ मेरे दिखके महेरम तुही श्रीनाजिनदन०	५९
४५ रूपज वैष तु यका वैष हे, देखनकी०	६०
४६ खना खना प्रभु अरज करता०	६१
४७ अरिहतजीके समवसरणमे शोशठ इंदर०	६४
४८ गिरिवरकु गये गुरु ग्यानी, राजुस मन०	६६
४९ पारस पूजन जोग जगतमें मगसीके०	६६
५० टगा वे गया पति गिरनारी कहो रे०	६७
५१ में नित्य नमावु शीश साध संतनकु०	६८
५२ अर्नत वली जिनराजी जगतपति०	७०
५३ मरणसय कूप को न जाने । फरे०	७१
५४ वस जावो रे मुसाफर यार, प्रीत सब तेरी०	७३

५५ आयो अब समकितके घरमें, पडे०	७४
५६ नमुं नमुं में गुरु निर्ग्रथकु, वे जिनमु०	७५
५७ तजुं तजुं मे उन कुगुरुकुं कनक०	७६
५८ चतुर परनारी मत निरखो, श्रावण०	७६
५९ कोन जगतमें तारा चेतन, कोन०	७७
६० जगतमें नवपद जयकारी, पूजतां०	७८
६१ शहेर जुनेरमें शांति विराजे, अंग चर०	७९
६२ धर सुमतिसें ध्यान, चेतन संवरमें०	८१
६३ श्रीऋषभ देव महाराज केसरीयां०	८४
६४ फागुण महीना फागमे होरी खेलनां०	८५
६५ कुमतिकी संगत नहि करिये रे कु०	८६
६६ श्रीशांतिनाथ महाराज बिराजे मांरुवगढ०	८७
६७ तेरे सुरत सोहेणी देख, मेरा मन हरखे०	८८
६८ सिद्ध नमो अरिहंत नमो वली, आचा०	८९
६९ माता त्रिशला जूलावे नंदनकुं रे०	८९
७० उत्तम जीव जब उदर आये०	९२
७१ नाइ कलकी खबर नहीं किसी घड़ीमें०	९४
७२ सिद्धगिरि रे सिद्धगिरि०	९७
७३ नव दव दहन निवारवा०	९९

७४ चेत चतुर नर कहत सद्गुरु कि०	१००
७५ तुमे निरजन नाथ हमारा०	१०३
७६ श्रीकृष्णनाथ करम काट मुक्ति मोज पाया०	१०३
७७ श्रीनेमि निरजन बालपणे ब्रह्मचारी०	१०३
७८ गुणधंता श्रीजिनराय सजामें आवे०	१०५
७९ हरस्यो हरि निज चित्त सजामें आवे०	१०६
८० मस्यो जादव केरो वृद ठपल कृष कोहे०	१०७
८१ अग्ररुषम् अग्ररुषम् वाजे शोधका०	१०८
८२ श्रीधीतराग जिनदेष नमु शिर नामी०	११२
८३ प्रजु करो सेव चित्त छाव, जाय अघ तेरा०	११८
८४ मजन चीर तिलक आद्यद चतुर सण०	१२०
८५ सुणो श्री जैनधर्म नखि प्राणी०	१२२
८६ आदिकरन आदि जगत आदि०	१२६
८७ नेमनाथ मोरी अरज सुनीजे में हु०	१३५
८८ तेना गावत रगवगशु, ह्यानप्यानमें०	१३७
८९ पारसनाथ विख्यात जगतमें०	१३७
९० प्रजु पारस नज खे नार्ह, ह्यान प्यान०	१४१
९१ प्रजु पास जिणंदा, दरिसन०	१४३
९२ सत्यधर्मकु ठोरु अधमें परनां ना०	१४५

ए३ मेरो बालम बनमें गयोरी, सा मेरो बा०	१४७
ए४ निर्धनका धनवान हुवा तब०	१४७
ए५ मेरा हठ मत कर रे जननी०	१४९
ए६ कहे विन्नीषण सुण जाई रावण०	१४९
ए७ सुणियो रे सुणियो सुगुण तमे०	१५१
ए८ सुणो सयणा ऐसे साई सलुणा०	१५३
ए९ गयो महेलको खेल०	१५५
१०० नेमजी जान बनी चारी०	१५७
१०१ सरसती साता सुमतिकी दाता०	१५९
१०२ अरज हमारी सुणो दिनपति०	१६१
१०३ सद्गुरुजी महारा सरण०	१६३
१०४ देख पराई रीत रोवे क्युं होसुं रे०	१६४
१०५ बे कर जोकी शीश नमाके०	१६४
१०६ सुनियो रे प्यारे बात हमारी०	१६६
१०७ सकल सुखदायक नरनारी	१६७
१०८ आरति करुं श्रीपार्श्व प्रभुकी०	१६८
१०९ आदि जिनेसर कियो पारणो०	१६९
११० ठाही घटा गगनमें कारी	१७०

१११ श्रीश्रजितनाथ महाराज०	१७२
११२ ककरकु शकर करी माने०	१७३
११३ श्रीशखेश्वर गाम धिराजे०	१७३
११४ डुरमति डूर खनी रहारी०	१७४
११५ चतुर नर दिखकु समजार्ना०	१७६
११६ सुगुण नर श्रीजिन गुण गार्ना०	१७७
११७ पीया खला ।गरिवरकु०	१७८
११८ पोढो पोढोजी रुपन धिहारे०	१७९
११९ साहिबा धीसीमंधर साहिबा०स्तवन	१७९
१२० दोखत विपे दोहा०	१८१
१२१ दैव सोरठा०	१८२
१२२ वाक्यामृत	१८३

## सहायमाला

भक्ति रमिक पूर्वाचार्यो रचित विविध

५०० सप्तायांनो समग्र

किंमत ४-०-०

॥ अथ ॥

॥ श्री जैनदावणीसंग्रहप्रारंभः ॥

॥ प्रथम श्रीजिनदासजीकृत घन ॥

॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार, उनसें लतरोगे ज-  
वपार ॥ होय तेरी कायाका लड्डार, सफल कर ले  
अपनो अवतार ॥ ध्यान तुम धरो मनमें नर नार, खाण  
दुःखकी ए हे संसार ॥ करो प्रभु न्याल अब जिन-  
दास, रखो प्रभु मुऊ चरणोके पास ॥ १ ॥ सरक जा  
कुमति नार काली, तेरी संगतसे गइ लाली ॥ सोबत  
समताकी में टाली, आतमा तपमें नहि घाली ॥ अ-  
नंत जब वीन गया खाली, वेदना निगोदकी जाली ॥  
अमरपद जिनदास सागे, सदा पद प्रभुजीकों लागे ॥  
२ ॥ शीश नित नमुं नाजिनंदन, चरणपर चडे केसर  
चंदन ॥ करत सब इंद्रादिक वंदन, कटत हे करमोंका  
फंदन ॥ साध्यो तें शिवपुरको साधन, सर्व जीवनकुं  
सुखकंदन ॥ जिणंद गुण जिनदास गावे, शीश चर-  
णोंमें नमावे ॥ ३ ॥ बोलत हैया मेरा हसकर, चढावुं  
चंदन चूवा घसकर ॥ पेठा मे धर्मोंमें धसकर, पापदल



डूर गया खसकर ॥ चेतन हुआ खना कमर कसकर,  
 हठाया कर्मोका लशकर ॥ श्रीजिनराज जिहाज खा  
 सा, शरण जिनदास छिया वासा ॥ ४ ॥ समज मन  
 मेरा मतवाला, तुझे नहि कोइ हटकणवाला ॥ वस्या  
 तेरे हैये कुगुरु काखा, दिया तें सुरगतिकु ताखा ॥ फे  
 रतो ममताकी माझा, वाखतो जगवत पर जाखा ॥  
 दयासें दे दिया ताखा, देखो जिनदासका चाखा ॥ ५ ॥  
 कीया में गखधर प्रेमपति, मुणे वरदायक हे सरसती ॥  
 करी निर्मल निर्मथ मति, पूठ पर खड़े जागता जति ॥  
 मुजे वखवत जई सोख सती, मिटी मेरी दुर्गतिकी सच  
 गती ॥ एसा घन जिनदास गावे, अचख पद जकितें  
 पावे ॥ ६ ॥ थिकट घट दुरगतका जारी, नीर ज्यां  
 जरती कुमति नारी ॥ धरठी ऊन नैनोकी मारी,  
 मुब्या केई कामी संसारी ईनोंकी हो रही खूश्वारी,  
 जीत्या कोइ सख धरमधारी ॥ प्रजु तुम परमारथ पाया,  
 शरण अथ जिनदास आया ॥ ७ ॥ चेत नर निगोदक  
 वासी, करार जगमें त हांती ॥ कुमतिकी पनी गखेपांती,  
 सुमतिसु रखी हे उदासी ॥ कुमति वसी सेज खासी,  
 मान रखो ममताकु मासी ॥ हियो खोख अरिहतकों

परखो, करो जिनदास आप सरखो ॥ ७ ॥ अफल  
 नर तेरो जिदगानी, शीख सूत्रोंकी नहि मानी ॥  
 किया नहि गुरु निर्ग्रथ ग्यानी, कानसे लागी कुमति  
 रानी ॥ जगतमें उतर गया पानी, गति तेरी दुरग-  
 तकी ठानी ॥ सेवक तोरा जिनदास बाजे, सुधारोगे  
 तुमही काजें ॥ ८ ॥ सफल नर तेरी जिंदगानी, शी-  
 ख सूत्रोंकी तें मानी ॥ किया निज गुरु निर्ग्रथ ग्या-  
 नी, कानसें लगी सुमति रानी ॥ जगतमें अधिक च-  
 ढ्यो पानी, गति तेरी सुरगतकी ठानी, सेवक तेर  
 जिनदास बाजे, सुधारोगे तुमही काजें ॥ १० ॥ इति वन ।

॥ अथ शीखामणनी लावणी पहेली ॥

॥ चल चेतन अब उठ कर अपने, जिनमंदिर जश्यें ॥  
 किसीकी चूंकी नां कहियें, किसकी बूरी नां कहियें ॥  
 चल ॥ १ ॥ आं कणी ॥ चरण जिवनरजीका जेटो ॥ चरण ॥  
 जव जव संचित पाप करम सब, तन मनका मेटो ॥ सु-  
 कृत कीजें, महाराज ॥ सुकृत ॥ जिनवरका गुण जज  
 लीजें, समकित अमृत रस पीजें, लाज जिनजक्तिको  
 लहिये रे ॥ लाज ॥ चल ॥ २ ॥ करोजी मत मुखसें  
 बरुई ॥ करो ॥ तज तामस तन मनकी, समतासें

रहेनां जाई ॥ रीतसें थोखो, मेरी जान ॥ रीत० ॥  
 आतम समतामें तोखो, मत मरम पारका खाखो,  
 मौन कर तन मनसें रहियें रे ॥ मौन० ॥ चख० ॥  
 ॥१॥ जोधन दिन चार तणो संगी रे ॥ जोवन० ॥  
 अत समय चेतन उठ घाखे, काया पनी नगो ॥ प्रीत  
 सब तुटी, मेरी जान ॥ प्रीत० ॥ आठम्हाकी खरची  
 खूटी, चेतसें काया रूठी, सुख दुःख आण किया  
 सहियें रे ॥ सुख० ॥ चख० ॥ ३ ॥ जगतसें रहेनां उ  
 दासी रे ॥ जग० ॥ परख्या में जिनराज हरो, मेरी  
 दुरगतकी फांसी ॥ तजो सब धदा, मेरी जान ॥ तजो० ॥  
 जिनवर मुख पूनमचदा जिनदास तुमारा बंदा मेरे  
 एक जिनदर्शन चहियें रे ॥ मेरे० ॥ चख० ॥ ४ ॥  
 ॥ अथ शीखामणनी छावणी धीजी ॥  
 ॥ तुम तजो जिनेसर देव, मुगतिपद पाई ॥ मुग० ॥  
 अथ अचख अखनित ज्योति, सदा सुखदायी ॥ ए आं  
 कणी ॥ में रुख्यो चोरासीमांहे, चूख्यो में जरम ॥ चू  
 ख्यो० ॥ महारे उदये अनतां दुःख, पांघ्यां जब करम  
 ॥ में कदियेक ठुठ रंक, फरपो तज शरम ॥ फर्यो०  
 ॥ अरु कदियेक राजा तयो, गरथको गरम ॥ जब ग  
 रव आण कर धोख्यो, पारका मरम ॥ पार० ॥

पण निर्मल जुगमें जैन, कियो नहि धरम ॥ अब मनख  
 जनममें चेत, घनी शुभ आई ॥ घनी० ॥ अब॥१॥  
 में सुर नरका सुख, वार अनंती पाया ॥अन० ॥ महा-  
 रे शिव समताका सुख, हाथ नहि आया ॥ में कुयुरुने  
 कुदेव, जला कर ध्याया ॥ जला० ॥ में उलज्यो अना-  
 दि अग्यान, विषय जोग जाया ॥ में पड्यो लोचके  
 फंद, जोरुतो भाया ॥ जोरु० ॥ पण लाग्यो अंत जव  
 आया, कोलने खाया ॥ अब परिहर सब परमाद, धर्म  
 कर जाइ ॥ धर्म० ॥ अब० ॥१॥ अब दुर्लज अवसर  
 लही, तुं सुकृत कर रे ॥ तुं सुकृ० ॥ अब दान शीयल  
 तप जाव, हियामें धर रे ॥ तुं करमकी माला काट, पाप  
 परिहर रे ॥ पाप० ॥ अब वार वार कहुं तोहे, जगतसें  
 तर रे ॥ तुं शीनिर्मल नयणें देख, नरकस् कर रे ॥ न-  
 र० ॥ तुं शीख सुगुरुकी मान, अग्यानी नर रे ॥ अब  
 परत्रीय कर जान, बेन ने माई ॥बेन० ॥अब० ॥ ३ ॥  
 अब जिनवर मुऊ मन जायो, सदा गुण गाऊं ॥ सदा०  
 ॥ अब इतनी किरपा करो, नरक नाह जाऊं ॥ अब  
 जव जवमांहि देव, जिनेसर पाऊं ॥ जिने० ॥ में मन  
 वच काया करी, चरण चित्त लाऊं ॥ ए दयाधरम  
 हितकार, सदा में चाहुं ॥सदा० ॥ ए चोरासीके

मांहे, फेर नहि आऊ ॥ यु अरज करे जिनदास, कि  
रत ए गाई ॥ कीरत० ॥ अथ० ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ अथ शीवामणनी सावणी श्रीजो ॥

॥ कथ देखुं जिनवर देव, जगतगुरु ग्यानी ॥जग०॥  
कोइ आप समो नहि श्वोर, जो अतरण्यानी ॥ ए  
आंकणी ॥ अथ विषम धन मसार, जगतमें नटक्यो ॥  
॥ जग० ॥मुजे अनमत्तने से जाइ, नरकमें पटक्यो ॥  
अथ छट्टु दरिसन जिनवरका, श्यो दिन कव ठगे ॥  
श्यो० ॥ मुज मनकी वठित आस, अधिक सध पूगे ॥  
॥अ जिन दरिसन धिन नयन, ऊरे मुजपानी ॥ ऊरे०  
॥ कोई० ॥ १ ॥ थारे कुगुरुको उपदेश, हियामें ठायो ॥  
॥ हिया० ॥ पण सरस जेद समकितको, जीव नहि  
पायो ॥ अथ जैन धर्म निज मास, मूर्खा मत खोवे ॥  
मूर्ख० ॥ ए सुमति सुरगको पंथ, अमरगत होवे ॥  
अथ दुर्खज जिनजक्तिका, छहीनिज टानी ॥ छही०  
॥ कोई० ॥ २ ॥ अथ सुर नर गावे गीत, अजय जनु  
खागी ॥ अजघ० ॥ जिहां नाचत नृत्य अनेक, आस  
सकु त्यागी ॥ अथ मोहत मन नरपतिका, गगनधुनि  
गरजे ॥ गग० ॥ ए जिनवर महिमा अनस, प्यान दिख  
धरजे ॥ एसी अधिक टधी ।जनजीकी, मेरे मन मानी

॥ मेरे० ॥ कोई० ॥ ३ ॥ अब जिन चरणोंसे रंग, अ-  
धिक दिल लागो ॥ अधिक० ॥ में पेखो जिन गुण अ-  
जब, सुरंगी वाघो ॥ आ सफल घकि समकितकी, हाथ  
अब आइ ॥ हाथ० ॥ मे गगन गमनकी पांख, अमू-  
लक पाइ ॥ अब बोलत युं जिनदास, जिनवानी ॥  
सुनो० ॥ कोई० ॥ ४ ॥ ॥ ३ ॥

॥ अथ शीखामणनी लोवणी चोयी ॥

॥ एक जिनवरको निज नाम, हियोमें लेनो ॥ हि०  
अब लगी लगन जिनवरसे, खुश रहेनां ॥ सदा खुश  
रहेनां ॥ ए आंकणी ॥ अब निरखुं जिन दिदार, दरस  
कव पाऊ ॥ दर० ॥ जगसें जिनवर निज नाम, निरंजन  
ध्याऊ ॥ अब रहे नयन लोनाय, हियो नित फरके ॥  
हियो० ॥ मोहे जिनदर्शनकी आस, पाप सब सरके ॥  
अब सुरपति निरखत रूप, नजर नर नेनां ॥ नजर०  
॥ अब ॥ १ ॥ अब मिथ्यो मरण जय जवको, आस मुऊ  
पूरो ॥ आस० ॥ में जपुं जिणंदको नाम, मेढु नहि  
दूरो ॥ घनघाति ए घाते घेर, करम सब चूरो ॥ कर० ॥  
में दुर्गति जमतां आयो, आप हजूरो ॥ अब शुन  
नजरां मुख निरखी, मुक्तिपद देनां ॥ मुक्ति० ॥ अब०  
॥ २ ॥ अब हे हीरोकी खान, ग्यान निज करणी ॥

ग्यान० ॥ ए मुगति पथ दातार, सुमतिकी धरणी ॥  
 अथ शुकस ग्यानकी पेढी, चढा नीसरणी ॥ चढा० ॥  
 एसा जगमे संत सुजान, मुक्तिपद धरणी ॥ अथ आ पो  
 सया कर करके, अमर सुख वेनां ॥ अमर० ॥ अथा० ॥  
 ३ ॥ अथ बैठ करुं म मोज, आनदके घरमें ॥ आ० ॥  
 में परक्या श्रीजिनराज, जगत कृण नरमे ॥ में दु ख  
 जोगता हुं अनन, करे कृण सेखो ॥ करे० ॥ में अरज  
 करु तन मनसें, नजर नर देखो ॥ अथ घोषत यु जि  
 नदास, सर्व रस वेनां सर्व० ॥ अथ० ॥ ४ ॥

॥ अथ उपदेशनी छावणी पांचमी ॥

॥ खयर नहीं या जुगमें पञ्चकी रे ॥ खबर० ॥ ॥  
 सुदृढ करना होय तो कर से प्यारे, फोन जाने कञ्चकी  
 ॥ ए आरुणी ॥ या दास्ती हे जगस्रवासकी काया  
 मंखकी ॥ काया० ॥ सास उसास समर से साहिव,  
 आयु घट पञ्चकी ॥ खयर० ॥ १ ॥ तारामन्त्र रधि चडमा,  
 सब हे चपनेकी ॥ दिवस धारका चमस्कार ज्यु, वि  
 जखियां जखकी ॥ खबर० ॥ २ ॥ कूरु कपट कर माया  
 जोनी, करि धातां ठखकी ॥ पापकी पोटखी थांधी सि  
 रपर, केस होय हखकी ॥ खबर० ॥ ३ ॥ या जुग हे  
 सुपनेकी माया, जैसो युगं जखकी ॥ विणमंतां तो वार

न लागे, दुनिया जाय खन्नकी ॥ खवर० ॥ ४ ॥ मान तात  
 सुत बंधव दाइ, सब जग मतलबकी ॥ काया माया  
 नार हवेली, ए तेरी कबको ॥ खवर० ॥ ५ ॥ मन  
 मावत तन चंचल हस्ती, मस्ती हे बलकी ॥ सत गुरु  
 अंकुश धरो सीसपर, चल मारग सतकी ॥ खवर० ॥ ६ ॥  
 जब लग हंसा रहे देहमें, खुसीयां मंगलकी ॥ हंसा  
 ठोर चढ्या जब देही, मटी यां जंगलकी ॥ खवर० ॥ ७ ॥  
 पर उपकार समो नहि सुकृत, धर समता सुखकी ॥  
 पाप नहिं पर प्राणी पीसन, हर हिंसा दुःखकी ॥ ख-  
 वर० ॥ ८ ॥ कोइ गोरा कोइ काळा पीला, नयणे निर-  
 खनकी ॥ ए देखी मत राचो प्राणी, रचना पुजलकी ॥  
 खवर० ॥ ९ ॥ अनुभवज्ञानें आतम बूजी, कर वातां  
 घरकी ॥ अमरपद अरिहंतकुं ध्याया, पदवी अविचलकी  
 ॥ खवर० ॥ १० ॥ दयाधरम साहिवको समरन, ए वा-  
 तां सतकी ॥ राग द्वेष उपजे नहि जिनकुं, बिनती  
 अखमलकी ॥ खवर० ॥ ११ ॥ ॥ ५ ॥

॥ अथ सुमति कुमतिनी लावणी ठठी ॥

॥ हारे तुं कुमति कलेसण नार, लगी क्युं केडे ॥  
 ॥ लगीण ॥ चल सरक खनी रहे पूर. तुजे कुण ठेडे ॥  
 ॥ ए आंकणी ॥ हारे तुं सुमतिको जरमायो, मुजे क्युं



ठोमी ॥ मुजे० ॥ मेरी सदा शाश्वती प्रीत, तिनरुमे  
 तोमी ॥ तुज विन सूनी मेरी सेज, कहु कर जोमी ॥  
 कहु० ॥ उठ चलो हमारे संग, सुखे रहो पहोडी ॥ यु  
 जुर जुंर कुमति आंनु, आंखसें रेडे ॥ आंख० ॥ तु कु  
 मति० ॥ चख० ॥ १ ॥ हारे तेरी नरकनिगोदकी सेहेज,  
 सेति मे रुख्यो ॥ सेति० ॥ पकळ्यो साचो जिनराज,  
 संग तेरो तुश्यो ॥ तेरी मूरख माने घात, हैयाको फूटयो  
 ॥ हैया० ॥ में सहेज हुषो हु छूर, तार तेरो झूटयो । तु  
 कर छूरसें घात, आष मत नडे ॥ आ० ॥ चख० ॥ १ ॥  
 मेरी अनस काखकी प्रीत, पलक नहि पाखी ॥ पख० ॥  
 सुमतिके छागो सग, मुजे ष्यो टाखी ॥ तु सुमतिको  
 सिरदार, सुणावे गाखी ॥ सु० ॥ तेरी हम दोनु हे नार,  
 गोरी और काखी ॥ तु हमकु वेखे छूर, सुमतिकु तेडे ॥  
 सुम० ॥ चख० ॥ ३ ॥ अथ कुमतिको लखचायो, रति  
 नहि रुगियो ॥ रति० ॥ सुन कर सूत्रोंकी शीख, साच  
 होय लगियो ॥ चेतन कुमतिके सहेज, छूरसू जगियो  
 ॥ छूर० ॥ जिनराज यधनको ग्यान, हैयेम जगियो ॥  
 जिनदाज कुमति तु घात, खोटी मत खेडे ॥ खोटी० ॥  
 ॥ चख० ॥ ४ ॥ ॥ ६ ॥

## ॥ अथ उपदेशनी लावणी सातमी ॥

॥ तुम तजो जगतका ख्याल, इसकका गानां ॥ इस०  
 ॥ तेरी अल्प उमर खुट जाय, नरक उठ जानां ॥ तें  
 दिनां चार जुग बीच, लिया हे वासा ॥ लिया० ॥  
 तेरे सिरपर बेठा काल, करत हे हांसा ॥ में बोलुं  
 साची बात, जूठ नहि मासा ॥ जूठ० ॥ तुं सूता हे  
 कुण निंद, किसी कर आसा ॥ अब सेव देव जिनराज,  
 खलकमें खासा ॥ खल० ॥ तेरा जोवन पतंगका  
 रंग, जूठ सब आसा ॥ अब हिये धरो मेरी सीख,  
 समज रे दीवाना ॥ सम० ॥ तुम० ॥ १ ॥ अब बूरी  
 चली सब बात, मून कर रीजें ॥ मून० ॥ ए मुख  
 मीठा सांसार, जेद नहि दीजें ॥ कर वीतराग विसवा-  
 स, हिये धर लीजे ॥ हिये० ॥ पण नीच नारका  
 संग, मांहे मत चीजे अब सात विसनको संग,  
 प्रात मत कीजे ॥ प्रीत० ॥ तोहे दुरगतदे प-  
 होंचाय, तेरो तन बीजे ॥ तुं सुख दुःखका सि-  
 रदार, रंक नहि राना ॥ रंक० ॥ तुम० ॥ २ ॥  
 तुं विसर गया जुग बीच, नाम जिवनरका ॥ नाम० ॥  
 पच रह्या कुटुंबके काज, किया फंद घरका ॥ ते दया-  
 धरम विन खोया, जनम सब नरक ॥ जनम० ॥

तें पछे घांप्यां पाप, फसाड सरखा ॥ अथ खिया नहि  
 तें खान, घखत पर करका ॥ यखन० ॥ तेरी घीती  
 यात सब जाय, जनम ज्यु खरका ॥ अथ सुणो  
 सीख सूतरकी, सुखट रे शाणा ॥ सुखट ० ॥ तुम० ॥  
 ॥३॥ तेरी चरण सेज पर पोड्या, आनंद दिख आया ॥  
 आन० ॥ मेरी जगी चूख सथ प्यास, सुधारस पाया  
 ॥ मेरे सिरपर तुम सिरदार, जिनेसर राया ॥ जिने०  
 ॥ मे घाट्टु चरणकी सेव, सफल कर काया ॥ अथ  
 यो दोखत दरसनकी, मेरे पही माया ॥ मेरे० ॥ युं  
 अरज करे जिनदास, अरुप गुन गाया ॥ अथ बुरा  
 कुगुरु उपदेश, धरो मत काना ॥ धरो० ॥ तुम० ॥४॥७॥

॥ अथ उपदेशनी खवणी आठमी ॥

॥ सुगुरुकी शीख छिये धरनां रे ॥ सुगुरु० ॥ अम  
 रापुरको पंथ सदा, धीजैन धर्म करनां ॥ सु० ॥ ॥ परमप  
 रमारथ तें टाखो रे ॥ पर० ॥ सार जगतमें जैन धरम,  
 जुगतिसें नहि पाखो ॥ प्रभुको नाम नहि छीनो रे  
 ॥ प्रभु० ॥ महा इच्छाइख विषय विकट, मिथ्यामतसें  
 जीनो ॥ चेतन युं बहुविध दुःख पावे रे ॥ चेत० ॥ छप  
 टपो छालचमांछे पांच, इडिके सुख बहावे ॥ जीव अथ  
 पाप परीहरनां रे ॥ जीव० ॥ अमरापुर० ॥ १ ॥ दया

चेतनकुं सुखकारी रे ॥ दया० ॥ श्रीजिनराज परपी  
 जैसी, केसरकी क्यारी ॥ जगतमे तीरथ हे चारी रे ॥  
 जग० ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, हुआ व्रतधारी ॥  
 इनुंकुं कहिये ब्रह्मचारी रे ॥ इनुं० ॥ समता संयज्ञ सार  
 करीने, कर्म हणयां जारी ॥ इनुंने मेठ्या जन्म मरणां  
 रे ॥ इनुं० ॥ अमरा० ॥ १ ॥ पंच इंद्रिसे लपटायो रे ॥  
 पंच० ॥ दुःख अनंतां सह्यां रे बहुदां, प्राणी पठतायो ॥  
 बहु दुर्गतिमें जमी आयो रे ॥ बहु० ॥ शुच मंत्र नवकार  
 सार, दुर्लभ अब मे पायो ॥ मेरो मन जिनवरसुं जायो  
 रे ॥ मेरो० ॥ कुगुरुको सब संग अशुच, मिथ्या मत बट-  
 कायो ॥ इणविध नवजलसें तरणां रे ॥ इण० अम० ॥  
 ३ ॥ रहो जिनवाणीमे राता रे ॥ रहो० ॥ अनत सुखो-  
 की खाण, सदा शिव मंगलकी दाता ॥ सदा जिनवर  
 नक्ति करजो रे ॥ सदा० ॥ चित्त धरी हैयामे नवि तुम,  
 पाप परां हरजो ॥ अटप जिनवरका गुण गाया रे ॥  
 अटप० ॥ कर जोनी जिनदास कहे, जिननक्तिसे न्हाया  
 ॥ सदा मे चाहुं जिन चरणो रे ॥ सदा० ॥ अमरा-  
 पुरको पंथ ॥ सदा० ॥ ४ ॥ ॥ ७ ॥

॥ अथ उपदेशनी द्वावणी नवमी ॥

॥ तुं उलज्या हे जंजाल जगतमे, विकल नइ सब

तेरी मति ॥ श्याप मुग श्रनिमानी जीवना, श्यागे की  
 णधिध होय गति ॥ तु० ॥ ए श्यांरणी ॥ सुखज सीतावी  
 साथ समकितकु, सुगुरु शीख दिखमे श्याणो ॥ तजो  
 सकल मिष्यात घातकु, कुगुरु तणो पत्र मत तणो ॥  
 द्वायिक समकित खरा खजाना, सो श्रपनां कर कर  
 जोणो ॥ कठण पुण्यसे श्याय मिष्यो तोहे, दुर्खज नर  
 जघको टोणो ॥ ग्यान नजर कर देख जीवना, जीत  
 गया हे साथ सती ॥ तु० ॥ २ ॥ घेर घेर नरजवको श्र  
 वसर, फिर फिर हाथ नहीं श्यावे ॥ घात धीत गह  
 खात्री मूठि रही, जघ परजवमे पठतावे ॥ दान शीयल  
 तप जाव चूलकर, नहीं पीव पानी पावे ॥ सजु की  
 सुणी शीख मानधी, मनमे रीश श्रधिको लावे ॥ एसा  
 करम कर दुर्गति पहोंचे, वाकी वखत जय श्रान खती  
 ॥ तु० ॥ ३ ॥ एसो जानकर समज जीवना, समकित  
 श्रमृतरस पीजे ॥ नरजव हे निरवाणको मारग, नि  
 पस ठनकु मत कीज ॥ तुष्ट जिंदगानी सुण श्रनि  
 मानी, जगतजात्रमें क्यों रीजे ॥ सुकृत हे सरगको  
 मारग, धनि श्रात्रे तो कर लीजें ॥ तज जकि सय श्रोर  
 देवकी, कर शिरपर जिनराज पति ॥ तु० ॥ ३ ॥ जिन  
 श्यागमकी शीख सुनी तोहे, गणभर सूतरमें श्रटके ॥

वांकी वांफो क्युं फिरे जीवना, जुवानी जोवनके मटके  
 ॥ परखे नहि परत्रवकुं प्राणी, कात्र आन पत्रमे  
 घटके ॥ शीख देत जिनदास ओरकुं, आप, पथरपर  
 पग पटके ॥ मे आपनो पिरु जस्थो पापसे, पुण्य कियो  
 नहि एक रति ॥ तुं ॥ ४ ॥ ए ॥

॥ अथ उपदेशनी लावणी दशमो ॥

॥ सुकृतकी बात तेरे हाथ, रति नां रही रे ॥ रति०  
 गां ॥ पुजलमे मान्यो सुख, कटपना कही रे ॥ सुकृ०  
 । जगमांहे जैन निज सार, संघाते आवे ॥ संघा० ॥  
 शुकुं तजकर क्युं बेगो, विषयगुण गावे ॥ अमरतकुं  
 अन्नगो ढोल, विसन विष खावे ॥ विसन० ॥ मुक्तको  
 मारग मेट, उवटमे जावे ॥ थारी तुह जिंदगानी मांहे,  
 विकल बुद्धि जई रे ॥ विकल० ॥ पुजल० ॥ १ ॥ थारे  
 नध दोलत चंकार, जस्थ हे मोती ॥ जरथा० ॥ शत्रु  
 सज्जन सब वने, जगत होय गोती ॥ कीइ मसले तेल  
 फूलेत्र, धोवे कोय धोती ॥ धोवे० ॥ सन्मुख उठ  
 आवे अत्रला, तेरो मुख जोती ॥ एसी संपत एक त्रि  
 नमांहे, सर्व क्षय जई रे ॥ सर्व० ॥ पुजल० ॥ २ ॥ तें  
 खटरस खाय खूत्र, खजाना खोया ॥ ख ० ॥ निसि  
 दिन सुखजर सुंदरीकी, सेजमें सोया ॥ सजिया सोझे

शण्णगर, नारीसें मोक्षा ॥ नारी० ॥ त अजर घटका  
 मेख, रति नहों धोया ॥ या नरक निगोदकी षाट, प  
 करु कर लही रे ॥ पक० ॥ पु० ॥ ३ ॥ मन मातो  
 आठ मदमांहे, गर्वसें शोखे ॥ ग० ॥ में सुख संपतका  
 नाथ, मेरी कृण तोखे ॥ दुर्वस करता पोकार, पसक  
 नहि खोखे ॥ प० ॥ चारक होय रक्षा हजूर, अमर  
 शिर बोखे ॥ अथ अवरसर आयो हाथ, चेत तु सही रे  
 ॥ चेत० ॥ पु० ॥ ४ ॥ कायासें कीयो सारु घनाई  
 चगी ॥ घना० ॥ पसजर परवार्या पुण्य, तणो तिहां  
 जगी ॥ पकनी परजष बाट, होय कृण संगी ॥ हो० ॥  
 तेरो हस गयो आकाश, काया पनी नगी ॥ जिनदास  
 कहे कर्मोसु, जोर तेरो नहां रे ॥ जो० ॥ पु० ॥ ५ ॥ १० ॥

॥ अथ उपदेशनी छावणी अग्यारमी ॥

॥ अने हारे सान नहि सियो, जिनद जजके रे ॥  
 सान० ॥ सुमतिकी सेज गयो तजके ॥ ५ आं० ॥  
 पापमें रात दिवस जाता रे ॥ पापमें० ॥ धर्ममारग  
 में नहि आता ॥ अने हारे शोखतां मुखसें मीठी  
 वातां रे ॥ शोख० ॥ सास परका ठग ठग खाता ॥  
 अ० ॥ बनाया दिस शोत मातारे ॥ घना० ॥ सदा थि  
 पयारससें राता ॥ अ० ॥ कर्म तं किया खुष रचके रे ॥

कर्म० ॥ सुमतिकी सेज गयो तजकें ॥ अ० ॥ १ ॥  
 अ० ॥ खलकका ख्याल खूब जोता रे ॥ खल० ॥ निं-  
 दनर सेजामें सोता ॥ अ० ॥ जाण जंजात सब थोथा  
 रे ॥ जाण० ॥ गगन उरु गया हंस तोता ॥ अ० ॥ स-  
 जन सब जेला होय रोता रे ॥ सजन० ॥ एकेदा  
 आप खाया गोता ॥ अ० ॥ चलत चरु पूठ गरव गजके  
 रे ॥ चलत० ॥ सुमति० ॥ २ ॥ अ० ॥ खावतो खीर  
 हाथ रांवी रे ॥ खाव० ॥ घणां घरमें सोना चांदी ॥ अ० ॥  
 आतमा हुइ तेरी आंवी रे ॥ आ० ॥ सुरगकी कीर्ति  
 नहि साधी ॥ अ० ॥ कालने आये फांसी फांदी रे ॥ का० ॥  
 आनी कुण होय वीवी वांदी ॥ नरक उठ चले पाप  
 सजके ॥ नरक० ॥ सुमति० ॥ ३ ॥ अ० ॥ रोपी अत्र  
 जाय काल खूटी रे ॥ रोपी० ॥ प्रीत सब देहकी टूटी  
 ॥ अ० ॥ ऊठ कर चढयो खोल मूठी रे ॥ ऊठ० ॥ बाल  
 कर गयो जगमें जूठी ॥ अ० ॥ लोचने काया तेरी लूंटी रे  
 ॥ लोच० ॥ कहे जिनदास आस बुटी ॥ अ० ॥ किया रे  
 चव धूत कुगुरु जजकें ॥ किया० ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ ११ ॥  
 ॥ अथ उपदेशनी दावणी बारमी ॥

॥ तजो काम मद मान बाल जिनवर गुण जज  
 लीजें, कमाई सुकृतकी कीजें ॥ कमा० ॥ तजो० ॥



ष अर्धाङ्गी ॥ तें नर्हीं परख्या जिनराज, धधम होय  
 रक्षा धीतो ॥ सुखदायी संवर समताको, रस फ्यो  
 नहि पीतो ॥ छाख तुम मनुष्यातन जीतो रे ॥ छाख ० ॥  
 दान शीख तप जाव विना तेरो, जन्म जाय रीतो ॥  
 धर्म दिन फारज नहि सीके रे ॥ धर्म ० ॥ तजो ० ॥ १ ॥  
 निशिदिन छल्लसे नयन, मेरो दिख जिन दरिसन  
 चहावे रे ॥ मेरो ० ॥ हणयो जगतजजाख छाख, जिन  
 घर जक्ति जावे ॥ सवी सुरनर मंगल गावे रे ॥ सवी ०  
 ॥ सुगरु कठ सुरपतिको अजय धुनि, अवर गरजावे  
 ॥ जजन भन छाखचमें रीजे रे ॥ जजन ० ॥ तजो ० ॥  
 २ ॥ जिनगानी दिन चार जीव तु, मनम ष्यु मेला रे  
 ॥ जीव तु ० ॥ जोअनफी गुमराइ गर्वमें, खूब घन्यो  
 घेलो ॥ घाण जिनघाणीका जीखो रे ॥ घाण ० ॥ तप  
 तरवार जाव कर जाखा, घैरी करम यु ठेलो ॥ करम  
 कृ दाघानल दीजे रे ॥ करम ० ॥ तजो ० ॥ ३ ॥ जिन  
 मुख घरसे मेघ, मिटपो जाजत जव जव फेरा ॥ जी  
 जत ० ॥ दरिसन यो अरिहंत प्रभु, तरसे तन मन मे  
 रा ॥ मेटो मुऊ घनघातका घेरा ॥ मेटो ० ॥ अरज  
 करे जिनदास दिया तुम, मुक्तिमाहे डेरा ॥ मेरोत  
 न दर्शन दिन ठीजे रे ॥ मेरो ० ॥ मेरो ० ॥ ४ ॥ १२ ॥

## ॥ अथ उपदेशनी लावणी तेरमी ॥

॥ अगम पंथ जानां हे जाई रे ॥ अगम० ॥ ग्यान  
 ध्यान समकित संजमसें, सुधरे कमाई ॥ अगम० ॥ ए  
 आंकणी ॥ मेल मन अंतरकी आंटी रे ॥ मेल० ॥ कर्म  
 उदय चेतनकुं पनी हे, निगोदकी घांटी ॥ महा दुःख  
 पाया ॥ महाराज, महा दुःख पाया ॥ श्रीजिनवर मुखसें  
 नहीं गाया ॥ निज प्राणीकुं नहीं समजाया ॥ नही  
 तिलजर साता पाई ॥ न० ॥ ग्यान ॥ १ ॥ तन धन  
 ज़ोवन नहीं अपनां रे ॥ तन० ॥ कुटुंब कवीला वेन जा-  
 नेजा, रजनीका सुपनां ॥ सवी विरलावे ॥ महाराज सबी  
 विरलावे ॥ फिर चेतन मन पठतावे ॥ कतु संपत संग  
 नहीं आवे ॥ धर्म निज कर ले सुखदाई रे ॥ धर्म० ॥  
 ग्यान० ॥ २ ॥ जरम तुज अंतर घट लागो रे ॥ जरम० ॥  
 उदय हेत कुयति संगसें, विशय पवन लागो ॥ पाप संग  
 चाले ॥ महाराज, पाप संग चाले ॥ चेतनकुं नरकमें घाले  
 ॥ जिन मारग शुद्ध नाहि पाले ॥ जपो जिनवरकुं लय लाई  
 रे ॥ जपो० ॥ ग्यान० ॥ ३ ॥ पाप मेरो जवजवको कापो रे  
 ॥ पाप मे० ॥ मुक्तिदान अमर फल पदवी, सेवककुं  
 आपो ॥ वीनती मानो ॥ महाराज, वीनती मानो ॥

श्ररदास हीयायं श्रानो ॥ सेवककु श्रपनो जानो ॥ देव  
 दीठा जिनवर न्यायी रे ॥ देव दी० ॥ ग्यान० ॥ ४ ॥ श्रर  
 ज श्रध सेवक यु करता रे ॥ श्ररज० ॥ जबजखसें पार  
 बहारो, निगोदसें हे करता ॥ श्रीजिनघानी ॥ महाराज,  
 श्रीजिनघानी ॥ अमृतसें श्रधिकी जानी ॥ जिनदास ही  
 यामें श्रानी ॥ कीरति जिनयरफी में गाई रे ॥ कीरति०  
 ॥ ग्यान० ॥ ५ ॥ १३ ॥

॥ अथ उपदेशनी छावणी चौदमी ॥

॥ सुरग श्रास मत करे कलेशी, कुमति संग ठायो ॥  
 जिनद जस जगमें नहीं गायो ॥ सुरग० ॥ कीयो लोकपर  
 राज जमाई, जगत बीच तोजी ॥ छई त कपटखान  
 खोजी ॥ बन्यो रहे दिनरात मान मद, मिजखसको मो  
 जी ॥ खुलेंगी तेरी नरकमें रोजी ॥ विखस रणो सुख से  
 ज नहीं, चित्त चर्चाको खोजी ॥ श्रातमा श्रनमतमें श्रो  
 जी ॥ सुरग० ॥ १ ॥ “दोहा ॥ चूख्यो धरम श्रनोदिको,  
 ( श्ररे ) फूटा हैयाका नेण ॥ साचे सद्गुरु तज  
 दिया, कीया कुगुरुका वेण १ ॥ ” दिकट नरक  
 दुःख सखा शीशपर, चेते नहीं पाजी ॥ जीवमो  
 अन्यायस राजी ॥ परधन खायो सुठ लोकसें,

आत्म नहीं लाजी ॥ करी तें देह सूख ताजी ॥ कीयो  
 नरकमें वास आतसा, अगनीसे दाजी ॥ जोर क्या  
 करे कहो काजी ॥ कीयो सब करम उदय आयो ॥ सु-  
 रगण ॥ १ ॥ “दोहा ॥ आप कीया फल जोगवे, (अ-  
 रे) नहीं कीसिका दोस ॥ राखसरूप विकरालसों, देखत  
 उनियां होंस ॥ १ ॥ ” मुखसे चावे पान पतालां, मेवा  
 सूख चावे ॥ विषय सुख रसणी रस चावे ॥ चले निर-  
 खतो ढाय, गरवके मांहे नही सावे ॥ जमी पर वांको  
 वांको जावे ॥ गरव वचन मुख कहे मेरे कोइ, सामो कु-  
 ण आवे ॥ तमासा तुरत पुरुष पावे ॥ घणो अब मन-  
 में पठतावे ॥ सुरगण ॥ ३ ॥ “दोहा ॥ कीयो मान जगमें  
 घणो, (अरे) परजव दीयो खोय ॥ जाय जमके पाने पड्यो,  
 बेठ रह्यो जव रोय ॥ ३ ॥ ” ऐसी करमकी रीत, निर-  
 खत मन जगतसेंती करे ॥ मेरो द्वारजतुम वीन न सरे ॥  
 मुऊ शिर उपर धणी जिनेश्वर, नाथ और नहि कुण करे  
 ॥ जिनंद ग्यानादिक गुणसे जरे ॥ पार नहीं संसारसमुद्र  
 को, सीताबी तिनसें तरे ॥ जविक जन ध्यान तेरो दिख  
 धरे ॥ आनंदसें अनुभव पद पायो ॥ सुरगण ॥ ४ ॥  
 “दोहा ॥ तुं चित्तमें निशिदिन वसे, (अरे) और

नहीं मुक्त ध्यान ॥ हाथ जोर जिनदास कहे सो  
पाषत पद निर्वाण ॥ ४ ॥” ॥ २४ ॥

॥ श्रीनेमनाथजीनी छावणी पन्नरमी ॥

॥ श्री श्री माई, मेरो नेम गयो गिरनार, किसें जह  
केनां ॥ किसें ० ॥ वाके दरश विना तरसे हमारे नेनां ॥ य  
श्रांकणी ॥ श्री ० ॥ जादवकी जान जोरावर, सय च  
ख आई ॥ सध ० ॥ ॥ पशुश्रनमें खगायो हेत, हमें बटकाइ  
॥ श्री ० ॥ हम विसखी मेखी महेखमांहे, गया बनमांहि  
॥ गया ० ॥ सखी बेठी में मन मार, खरी गम ग्वाइ ॥ अथ  
खहु रुगरकी श्रोत, घरे नहीं रेनां ॥ घरे ० ॥ वाके ० ॥ १ ॥  
श्री ० ॥ मोहे जावन दे बनमांहे, ममस तजमेरी ॥ मम  
त ० ॥ मोहे मसिखा मारे लोक, जगत मेरा घेरी ॥  
श्री ० ॥ जुगमें काया कुमसाय, उषु काधी केरी ॥ उषु  
० ॥ तप जप संयमकी खहु, सांक्रमी सेरी ॥ मेरो पति वसे  
परतयमें, पहेरुं नहीं घेनां ॥ पहे ० ॥ वाके ० ॥ २ ॥  
श्री ० ॥ कुशुरुसें कियो ध्यापार, गमायो कीनो ॥  
गमा ० ॥ तेरी जक्ति विना हुं दुश्चो, बहोत मति  
होनो ॥ कण हीन दुश्चो वसतरकु, ऊसे क्या सीना ॥  
ऊसे ० ॥ कामधेनु मेरे घरमांहे, दूधकी धीणो ॥ श्री ०

हम दुःखी कालके जीवकुं, दरसन देनां ॥ दर० ॥ वाके०  
 ॥ ३ ॥ अरी० ॥ नव नवको नवल नेमिनाथ, पति हे  
 मेरो ॥ पति० ॥ वन रह्यो हीयाको हार, शीशको सेरो ॥  
 अरी० ॥ जन तजी शोल सिणगार, दीयो वन डेरो ॥ दो-  
 यो० ॥ मेरी सुणी नहीं पोकार, कानको वहेरो ॥ अरी०  
 ॥ इण खेलनमे नहीं पांउं, रति सुख चेनां ॥ रति० ॥ वाके०  
 ॥ ४ ॥ अरी० ॥ क्या नयो वदो आचरीज, जगतमें आयो  
 ॥ जग० ॥ मेरे पदले लागो पाप, सुजस नहीं पायो ॥ अरी०  
 ॥ बुद्धि हीन नयो मेरो जीव, न जिनगुण गायो ॥ न जिन०  
 ॥ जिस तिम कर करजो पार, सरण तेरी आयो ॥  
 ॥ अरी० ॥ बोले मजलसमें मध्वजी, ग्यानकी पेनां  
 ॥ ग्यान० ॥ वाके० ॥ ५ ॥ अरी० ॥ १५ ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजीनी लावणी सोलमी ॥

॥ सजन समजावो अपने मन कुंरे, सजन सम-  
 जावो अपने दिलकु ॥ मत जावो गिरनार नेस फिर,  
 क्या करनां धनकुं ॥ ए आंरुणी सती राजुल मन  
 नहीं माने रे ॥ सती ॥ वांरु विना ऊठ गये गिरिव-  
 रकुं, वन वेठे ध्याने जूरती सूकी, सहाराज ॥ जू० ।  
 राजुल शीज नही चूकी, मेरी देही नेम बिन सकी

मिष्ठु किणविध नेय जिनकु ॥ मिष्ठु० ॥ मत० ॥ १ ॥ ममता  
 किणविधसे मारु रे ॥ मम० ॥ दीख दाजत अमिसें नगी  
 ना, नेम दरद दारू ॥ अरज सुण छती महाराज ॥ अर०  
 ॥ राजुख कर जोमी कहेती, मंदिरमें नहीं रेती, रखु क्यो  
 कर जोवन धनकु ॥ र० ॥ मत० ॥ २ ॥ नेम निर्मल जिन  
 अविनासी रे ॥ नेम० ॥ अयातारीफ कह जिनवरकी, गि  
 रिशरके वासी ॥ मान मद मारया, महाराज ॥ मान० ॥  
 शुद्ध संयन दिखमें धारया, कोरज अरनां सय सारयां,  
 सेवतो गिरिशरके वनकु रे ॥ सेव० ॥ मत० ॥ ३ ॥ अरज  
 सेवककी , न छीजो रे ॥ अर० ॥ शुद्ध तन मनसें कर  
 धीनति, मुद्दिदान दीजो ॥ अर नहीं जावे, महाराज ॥  
 अर० ॥ अरिहंत चरन चित्त स्यावे, जिनदास नेम गुन  
 गावे, बहाना नित्य ऊठ दरसनकु ॥ चा० ॥ मत० ॥ ४ ॥ १६ ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजीनी छावणी सत्तरमी ॥

॥ में अ छा हूं अजाण छात्र, तेरे दरसनकी चू  
 खी ॥ तजन तेरे दरसनकी चूखी ॥ किसीसें चित्तसें  
 नहीं चूकी ॥ ए अंकणी ॥ गयो महेलको खेख, सखी  
 उजरु मेरे होय छागे ॥ सखी० ॥ विरह पासमको  
 दिये जागे ॥ कियो हियाकु हाथ, नाथ दुर्गति दु खकु

दागे ॥ नाथ० ॥ दूर अबलासे ऊठ जागे ॥ धरयो अ-  
 चल तुम ध्यान, उपनोहे निर्मल ग्यान, नेकी किनी हे  
 निर्वान प्रभुजी दुर्गति दीनी फुंकी ॥ प्रभु० ॥ कीसी०  
 ॥ दोहा ॥ श्याम सखूनो साहिबो, जईवेगो गिरनार ॥  
 विलसे शिवपुर सेजकुं, सो तज कर राजुल नार ॥  
 चलांजी सो तज कर राजुल नार ॥ १ ॥ पडे पलक  
 नहि चेन, सखूणो मोहे सुपनामें दरसे ॥ सखू० ॥ पुरुष  
 छुजाने कुण फरसे ॥ पति वसे परवतमें सखोरी अब  
 मन मेरो तरसे ॥ सखी० ॥ नेन विना नयणे नीर व-  
 रसे ॥ बोदया नहीं हसकर वोल, मेरो घट गयो रे सब  
 तोल, क्या कुटुं जगतमें ढोल, सजन तेरे सुंगरकुं ठूकी  
 ॥ सजन ॥ कीसी० ॥ दोहा ॥ खबर न पूठी खूनकी,  
 गुनो कियो में कून ॥ सदाय दुर्वल बेलपर, सोदो लाधे  
 गुन ॥ चलांजी ॥ सो० ॥ २ ॥ किहां वल्ल किहां ठंकी  
 ढाया, किहां मिलशे अन्न पाणी ॥ सखी किहां० ॥  
 नाथ मेरो ऐसो निर्वाणी ॥ तजे कांचली नागणी, विध  
 काया रे कर जाणी ॥ सखीरीविध० ॥ गिनती मेरी  
 मनमें नहि आणी ॥ कसें रहूं अब घरमें, कोइ नर  
 दीसे नहि नरमें, मेरी बात रही नहि करमे, सजन  
 ॥ विन गुना गये मूकी ॥ सजन० ॥ कीसी० ॥ दोहा ॥



दृष्टि प्रथमें उपजी नहि, श्वोर पुरुषकी श्वास ॥ नेम  
 मुक्कुकु तज गया, सो में वी लहु वनवास ॥ जसांजी ॥  
 सो० ॥ ३ ॥ जखो जगतकी जाख, सखी संपतकु क्या  
 करनी ॥ सखी० ॥ नेम सज गये हे अधपरनी ॥ दीनी  
 मुजे बटकाय, जाणकर जगलकी हरनी ॥ जाण० ॥  
 आदरी मुक्तिकी करनी ॥ इच्छा नहि उनका रुगी,  
 मुक्तिसँ ममता खगी, सुमतिकु कीनी सगी, वासम  
 मोहे वीनी वाव धुकी ॥ वासम० ॥ कीसी० ॥ दोहा ॥  
 मनकुजरकु बश करी, सेबो पकलया शीख ॥ शुद्ध सु  
 मति हिरवे बसी, सो नाश्या पापकु पीख ॥ जसांजी ॥  
 सो० ॥ ४ ॥ हठ्यो पियरको प्यार, जार मेरे शिरपर सख  
 धरता ॥ मेरो आदर नहि कोइ करता ॥ बना कथकी  
 नार, देख जग सघला जलमरता ॥ देख० ॥ आंखम  
 आंसु पीया जरता ॥ पख दोनु हुवा दु खदाय, महे  
 खोमें नहि रहेवाय, आरु दिशे जगत पण खाय, खल  
 कमें लासन दिन खूखी ॥ खल० ॥ कीसी० ॥ दोहा ॥  
 महेखोमें रहेतां चकां जणत हुवा दु खदाय ॥ जूठां  
 आख सिरपर धरे, मोसें सखा न जाय ॥ जसांजी ॥  
 सो० ॥ ५ ॥ जयर जोर जोधनको देख, लोक मिसला  
 मोहे घोखे ॥ लोक० ॥ मेरो निरणो कहो कुण घोखे ॥

नेमनाथ सिर पति, रति मेरी इन्हा नहि मोले ॥  
 रति० ॥ वसुंगी मुंगरको ओले ॥ जलो ए सुखजर  
 सेज, जगपतिने नाखी जेज, जिनदास मुगतकुं जेज,  
 मेरी जुर जुर काया सूकी ॥ मेरी० ॥ कीसी० ॥ दो-  
 हा ॥ आग लगे सुखसेजकुं, मालक दीनी मूक ॥  
 कुल परमें कायम रही, सो रति पनी नहि चूक ॥  
 नलांजी ॥ सो० ॥ ॥ ६ ॥ ॥ २७ ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजी की लावणी अठारमी ॥

॥ अने हारे पिया बिन फुर फुर, में फुर फुर हुइ  
 पूनी ॥ मुऊ कर गयो दुःख जर डूनी ॥ पिया बिन० ॥  
 ए आंकणी ॥ अने हारे मुजे सुखशय्या, सुखशय्या  
 नहि जावे ॥ पति बिन दिन दुःखमें जावे ॥ जोर जो-  
 बनको, अने हारे जोर जोबनको संतापे ॥ हियो कु-  
 णबिध हाथे आवे ॥ सखी सुमतासें, अने हारे सखी  
 सुमतासें. लय लावे ॥ पार गुं नवजलको पावे ॥ जगत  
 सब जान्यो, अने हारे जगत सब जान्यो हे मूनी ॥  
 मुजे कर गयो दुःख जर डूनी ॥ १ ॥ अने हारे वि-  
 जोग वालमको, वियोग वालमको पड्यो माथे ॥ ज-  
 गतमें विगरु गइ बातें ॥ रह्या नहीं नेमजी, अने हारे  
 रह्या नही नेमजी मेरे हाथे ॥ विलख तां जाये दिन

रातें ॥ चलो सध सजनी, अने हरि चलो सध सजनी  
 मेरी साथे ॥ जन्म कर खेड संयम साथें ॥ प्रीत नहि  
 झूटे, अने हरि प्रीत नहि झूटे, मेरी जूनी ॥ मुजें ॥ १॥  
 पति परवतका, अने हारे पति परवतका हुवा वामी ॥  
 गळे दुःख कार गया फांसी ॥ नेम धिन नर सब, अने  
 हरि नेम धिन नर सध ठे राशी ॥ तेरी सूरतकी मे  
 प्यासी ॥ घात मे योसु, अने हारे नेम घात म बोसु घट्टु  
 खासी ॥ बनी तेरी नष चषकी दासी ॥ नेम विना ज  
 गम, अने हरि नेम विना जगमें सेज सूनी ॥ मुजें  
 ॥ २ ॥ नेम राजुसका, अने हारे नेम राजुसका धन  
 धीया ॥ महेस मुगतिका जाय छीया ॥ सफस नरज  
 वकु, अने हरि सफस नरजवकु कर दीया ॥ अमर  
 प्यासा प्रजुजीसे पोया ॥ करो मेरा निर्मस, अने हारे  
 करो मेरा निर्मस सध हीया, शरण तेरा जिनदासे  
 छीया ॥ हवे नहि खागे, अने हरि हवे नहि खागे  
 पवन ऊनी ॥ मुजे कर ॥ ४ ॥ २७ ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजीनी छावणी ओगणी शमी ॥

॥ सजन धिन गुना, मेरी जान सजन धिन गुना,  
 धिन गुना तजी हमकु ॥ सती राजुस कहेंती तुमकु ॥  
 प अंकणी ॥ फिकर मोहे सगी, मेरी जान फिकर

मोहे लगी, फिकर मोहे लगी मेरे तनमें ॥ नगीने  
 नेम गये वनमें ॥ बात किन आगल, मेरी जान बात  
 किन आगल, बात किन आगल कहूं सजनी ॥ पिया  
 विन देहीकु तजनी ॥ पिया परबतमे, मेरी जान पिया  
 परबतमे, दुःख खमना ॥ महेल मंदिर मुजे नहि ग-  
 मतना ॥ श्याम में खनी, तेरी जान श्याम मे खनी, श्या-  
 म मे खनी खाय गमकु ॥ सती० ॥ १ ॥ सती रथसं  
 जम, मेरी जान सती रथसंजम, सती रथसंजममे  
 वेठी ॥ च्रमना अंतरकी मेटी ॥ सती सब सोनां मेरी  
 जान सती सब सोनां, सती सब सोनां तज देती ॥  
 जगतमे राखी नहि रेती ॥ करी जुग बीच, मेरी जान  
 करी जुग बीच, करी जुग बीचहमा खेती ॥ लगी हे  
 आस सगरसेंती ॥ सती बस किया, मेरी जान सती  
 बस किया, सती बस किया अपने मनकु ॥ सती० ॥  
 ॥ २ ॥ साज शिवपुरका, मेरी जान साज शिवपुरका,  
 साज शिवपुरका आज सजीया ॥ करमसें खूब कीया  
 कजिया ॥ मेरे शिरपति, मेरी जान मेरे शिरपति,  
 मेरे शिरपति श्याम सूजा, नेम विन वांहुं नहि डूजा  
 ॥ अचूपण चीरें, मेरी जान आचूपण चीरे आचूपण  
 चीरे मोहे खुचना ॥ जगनका जेग नहि सजनी ॥

घर जग जीत्या, मेरी जान जघर जग जीत्या, जघर  
 जग जीत्या जग जमकु ॥ सती० ॥ ३ ॥ पति गिर  
 नारे, मेरी जान पति गिरनारे, पति गिरनारे हुआ  
 ध्यानी ॥ घात सष जुगमे ए जानो ॥ जगत जस गा  
 वत, मेरी जान जगत जस गावत, जगत जस गावत  
 हे तेरा, सफस्र कारज कर द्यो मेरा ॥ जाप तेरो जपतां,  
 मेरी जान जाप तेरो जपतां, जाप तेरो जपतां पार  
 पावे ॥ अक्षप जिनदास ख्याल गावे ॥ मुगतिपद  
 दीजो, मेरी जान मुगतिपद दीजो मुगतिपद दी  
 जो प्रभु हमकु ॥ सती० ॥ ४ ॥ १९ ॥

॥ अथ श्रीनेमिनाथजीनी छावणी वीशमी ॥

॥ तुम सज कर राजुस नार, तज्या सय घर रे ॥  
 तज्या० ॥ मे नमु नेमके पाय, गया गिरिवर रे ॥ में  
 प्रीत पियाकी कर कर, पक्षे छागी ॥ पक्षे० ॥ तुम  
 त्याग पक्षे धन खरु, हुवे वैरागी अच राजुस स  
 रखी सती, जात्रसें त्यागी ॥ जाव० ॥ धारे अतर घ  
 टमे ज्योत, ग्यानकी जागी ॥ यु रोती राजुस नार,  
 नयण नर नर रे ॥ नय० ॥ मे नमु० ॥ १ ॥ में अ  
 रज करु कर जोरु, करो मन प्रसन्न ॥ करो० ॥ मेरे  
 शिरपर तुम शिरदार, वेजो मोड़े दर्शन ॥ अच सुख

सखीयनका देख, लग्यो मन तरसन ॥ लग्यो ॥  
 मेरे आयो नयनमें नीर, लग्यो नित्य वरसन ॥ मेरे  
 नेम मिलनकी आश, मिलुं किम कर रे ॥ मिलुं ॥  
 से ॥ १ ॥ में नहि कीनी तकसीर, चले क्युं रुठे  
 ॥ चले ॥ मेरे घरमें कुटुंब परिवार, चार दिशि चुंटे ॥  
 मे जो रहु घग्ने मांहे, जोवन सब लुंटे ॥ जोव ॥  
 मे चलुं पियाके साथ, प्रीत क्युं त्रूटे ॥ मेरे नेम विना  
 नहि और, जगतमें वर रे ॥ जग ॥ से ॥ ३ ॥ तुम  
 तारी राजुल नार, मुक्तिमे सेली ॥ सु ॥ पीठे नेम  
 गये निर्वाण, कर्म सब ठेली ॥ से ॥ नित्य उगे पर-  
 ज्ञात, नमुं पद पहेली ॥ न ॥ श्रीजिनवर विन जु-  
 गमांहे, नहि कोई बेली ( ॥ पाठांतरे ॥ ) मेरे नेमविन  
 नहि आर, जगतमे बेली ॥ युं अरज करे जिनदास,  
 सुणो ॥ जिनवर रे ॥ सुणो ॥ मे ॥ ४ ॥ १० ॥  
 ॥ अथ श्रीनेमनाथजीनी लावणी एकवीशमी ॥  
 ॥ दे गया दगो दिलदार, सुनो मेरी माई ॥ सु-  
 लग रही नेम दर्शनकी, सरस असनाई ॥ ए आं ॥  
 कणी ॥ अब अजव अलोजो नेम, मेरे शिर ठाजे  
 ॥ मेरे ॥ जादवकी देखी जान, जगत सब लाजे ॥  
 एतो नेम नवल एक वीद, अनोखो वाजे ॥ अनो ॥

सुर नर सथ गावे गीत, गगनमें गाजे ॥ श्रव दोरु दोंरु  
 सब पुनिया, देखन श्रडे रे ॥ देख० ॥ दे० ॥ १ ॥  
 श्रव चछ्या नेम तोरनकु, आनंद दिख धरकर ॥ श्रो०  
 ॥ सज आये सुरगी साज, किलोला कर कर ॥ में  
 पोयो परमानद, हरख हियो प्रर कर ॥ हरख० ॥ छे  
 गयो पति नेमनाथ, मेरो चित्त हर कर ॥ सखी सुख  
 संपती आंगनमे, आज चख आई ॥ आ० ॥ दे० ॥ २ ॥  
 श्रव इण श्रवसरमे सुरत, श्यामकी छागी ॥ श्या० ॥  
 पशुअनकी सुनी पोकार, दया दिख जागी ॥ जिन  
 सही पर्वतकी घाट, तृष्णाकु त्यागी ॥ तृष्णा० ॥ शि  
 वरमणीके शिरविंदु, धन्यो वैरागी ॥ श्रव महेस चढी  
 राजुसकु, खनी ठटकाई ॥ खनी० ॥ दे० ॥ ३ ॥ श्रव  
 रेतीके सरघरमें, टिके नहीं पानी ॥ टिके० ॥ जिन  
 गुण गाया नहि जाय, असप जिंदगनी ॥ श्रव कठण  
 जीव दुर्गतिको, धन्यो मे हानी ॥ घ० ॥ जिनदास  
 करो प्रथपार, दया दिख आणी ॥ श्रव सरण सतीके  
 वेठ, सावणी गई ॥ सा० ॥ दे० ॥ ४ ॥ ॥ २१ ॥  
 ॥ श्रीआदिनाथजीनी छावणी बावीशमी ॥  
 ॥ श्रीआदिनाथ निर्वाणो, नमु मे प्यानी ॥ नमु०  
 प्रथि जीव तरनके काज बनाए छाणी ॥ नम नाति

राय कुलधारी, बडे अवतारी ॥ बडे० ॥ खुल रही ख-  
 लकमें खूब, केसरकी क्यारी ॥ तुम ममता मनकी  
 मारी, आतमा तारी ॥ आत० ॥ तज दीनी प्रीत  
 विषयनकी, जान कर खारी ॥ तुम करी मुक्तिपद  
 राणी, जगतमें जानी ॥ जग० ॥ जवि० ॥ १ ॥ जाण्या  
 सुर नर सुखराशि, हुआ हे उदासी ॥ हु० ॥ जलगई  
 जबर जंजाल, जगतकी फांसी ॥ तुम जगतपति अ-  
 विनासी, मुक्तिके वासी ॥ मु० ॥ शिवमंदिरमें सुख  
 सेज, बिठाइ खासी ॥ तुम करी सफल जिदगानी,  
 मेरे मन मानी ॥ मेरे० ॥ जवि० ॥ २ ॥ बडे ज्योति-  
 वंत जिनराज, जगतमें बाजे ॥ जगत० ॥ तेरो दरि-  
 सन हे सुखदायि, सुधारे काजे ॥ तेरी धुनी गगनमें  
 गाजे, बे सुरपति लाजे ॥ बे सु० ॥ गल गया गरब  
 पाखंरु, कामना जाजे ॥ नाटक नाचे इंद्राणी, अधि-  
 क धुनि आणी ॥ अधिक० ॥ जवि० ॥ ३ ॥ तेरी म-  
 हिमा कहिय न जावे, पार नहि पावे ॥ पार० ॥ गंध-  
 र्व सुरपति सब देव, तेरे गुन गावे ॥ तेरे चरनुमें ल-  
 पटाइ, सरस लय लावे ॥ सरस० ॥ नर नार हियाके  
 मांहे, जक्ति तेरी चहावे ॥ तेरी तृष्णा सब विर-



छाणी, मुक्तिहु ठाणी ॥ मु० ॥ जधि० ॥ ४ ॥ मरु  
 देवी कूखका जाया, अमर पद पाया ॥ अमर० ॥  
 ठपन्न कुमारी नारी, मिखी जस गाया ॥ दुर्गतिका  
 दुःख धिरखाया, सफल करी काया ॥ सफल० ॥ जि  
 नदास निरजन देख, सरन तेरे आया ॥ समकितकी  
 सहेज पीठान, मिखी मोहे टाणी ॥ मिखी० ॥ ज  
 धि जीव तरन० ॥ ५ ॥ ॥ २२ ॥

॥ अथ श्रीगणधरजीनी छावणी त्रैवीशमी ॥

॥ अथ सदा नमु सरसति, तेरी कीरतकु ॥ तेरी०  
 ॥ गणधरके छागु पाय, मागु में मतकुं ॥ तेरे मुख ठ  
 पर सरसति, सुशोभा देखी ॥ सुशोभा० ॥ मिजस  
 समें मोती खीरे तेरे मुखसेती ॥ कोई विण बांधतां  
 रत्न, पत्नी रही रेती ॥ पत्नी० ॥ धन धन गणधरको  
 ग्यान, सजा यु केती ॥ धन धन ठरु छागे अग, जि  
 न गुणका धरसता रग, कोई करे वरत सहु संग, सुर  
 पति बहु धासव दग, नमे तेरी गतकु ॥ नमे० ॥ गण  
 धर० ॥ १ ॥ तुम लोक अलोक सरूप, कियो सब  
 करमें ॥ कियो० ॥ नठ्य जीव दिया पहुचाय, मुक्ति  
 पंकरमे ॥ नम करी करेकर नम नम करे—रमें

॥ ग्यान० ॥ परु रह्या पाखंकीकी माढ, कोई विच  
 कमें ॥ जिनराज करी हे साह्य, जवि जीव लिया स-  
 लटाय, बुरु गई हे विषयकी लाय, दुर्गति दुःख दियो  
 चुकाय, फानिया खतकुं ॥ फा० ॥ गणधर० ॥ २ ॥  
 तुम कट्यो कालको फंद, कर्म सब चूरे ॥ क० ॥  
 तुम रिध सिधके जंमार, लब्धिके पूरे ॥ सब विसन  
 विणास्यां वीर, बडे तुम सूरे ॥ वं० ॥ दीनी दुर्गतिकुं  
 दाग, किया दुःख दूरे ॥ विषयनके बीजकुं वाले, अं-  
 तरकी आंट सब टाले, ह्य गइ हे रीसकी जाले, तें  
 दीनी मूलसें गाल, लोचकी लतकुं ॥ लोच० ॥ गण०  
 ॥ ३ ॥ धारे अनुभव रसकी लहेर, उठी हे चारी ॥  
 उठी० ॥ कर्मको कियो कियो विनास, आतमा तारी ॥  
 कुलमें दीपक तुम बन्या, खलक तजी खारी ॥ खल० ॥  
 सुरपति सब होवे हजूर, बमें जसधारी ॥ गणधरजी  
 ग्यानके खासे, तुम किया कर्मका नासे, चाकर हुं  
 चरणके पासे, जिनदास करे अरदास, रखो मेरी प-  
 तकुं ॥ रखो० ॥ गणधर० ॥ ४ ॥ ॥ ३३ ॥

॥ अथ श्रीशंखेश्वरजीनी लावणी चौवीशमी ॥

॥ श्रीशंखेसर पास जिनेसर, अरज सुनो करो

महेरवानी ॥ तारक धिरुद सुनी मे आयो, तुम चरना  
 सरना जानी ॥ श्री शखे० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ शोष  
 सहस मुनि आदि जगत जन, तारे तुम अमृत घानी ॥  
 चनकू हुआ निम सुध जई सिद्ध, पाये परम गुरुजी  
 दानी ॥ श्री शखे० ॥ २ ॥ पक्षग पावक जरतो नि  
 काह्यो, ज्ञानदेशना तुम पीठानी ॥ चनकू दरस स  
 रस जयो तेरो, सुरपति पदवी ठहेरानी ॥ श्री शखे०  
 ॥ ३ ॥ में आया यह कीरति सुनके, बिनति एक सु  
 निर्ये ज्ञानी ॥ जब जब चरन कमलकी सेवा, देव  
 दीजिये दिख मानी ॥ श्री शखे० ॥ ४ ॥ अश्वसेन  
 वामाजीके नंदन, धदन जगके सुखतानी ॥ अब तो  
 लहेर महेर मोहि कीजे, रग सदाशिव सुखदानी ॥  
 श्री शखेश्वर० ॥ ५ ॥ ॥ २४ ॥

॥ अथ श्रीमगसी पारसनाथनी सावणी पञ्चीशमी ॥

॥ मुखक धीच मगसी पारसका, धाज रहा रुका ॥  
 मुक्तिगढ जीत लिया बका रे ॥ मु० ॥ मुखक० ॥ ए  
 आंकणी ॥ कर्मदल बलकुं कय कीया रे ॥ कर० ॥  
 मुक्ति महेलमे केखि करे, अनुभव अमृत पीया ॥ सा  
 सता जीया, महाराज ॥ सा० ॥ कल्याणक कारज

कीया, अमरापुर पदकु लीया ॥ कमठ जसका कर गये  
 फंका रे ॥ कमठ ॥ मुलकण ॥ १ ॥ प्रभु पारस जज  
 ले जाइ रे ॥ प्रभु ॥ चाव जरमका मेट ज्योत, तेरा  
 जगमे सवाई ॥ टेककुं टालो, महाराज ॥ टेकण ॥ चं-  
 चल चित्तसें मत चालो, गुमान गरवकुं गालो, गरवसें  
 धूल मली लंका रे ॥ गरण ॥ मुलकण ॥ २ ॥ मेरे शुभ  
 जाग्य उदय आया रे ॥ मेरेण ॥ इण पंचम आरामांहे  
 प्रभु, मगसी पारस पाया ॥ पापसें करता, महाराज  
 ॥ पापण ॥ जव्य जीव ध्यान दिल धरतो, श्रावक सब  
 समरण करता, मरण दुःख मेटो मेरे अंगका रे ॥ मण  
 मुलकण ॥ ३ ॥ महीमा मगसीकी अब जानी रे ॥  
 महीण ॥ नही उघकी मेरी आंख बिलोया, प्रब विना  
 पाणी ॥ में जिनवर जाच्या, महाराज ॥ मे जिनण ॥  
 जिनदास जिनंदसें राच्या, मगसी पारस हे साचा, करो  
 मत मनमें कोई शंका रे ॥ कण ॥ मुण ॥ ४ ॥ ॥ २५ ॥  
 ॥ अथ श्रीउपदेशनी लावणी बवीशमी ॥

॥ मन सुण रे तेरी सफल घरी श्रावककी, हाथसें  
 जावे ॥ हाथण ॥ सूत्रकी न माने शीख, पीठें पढतावे  
 ॥ ए आंकणी ॥ लंणजन्को कर राख, प्राण मत लूटे

॥ प्राण० ॥ तु कृगुरुसें करे हेत, सुगुरुसें रुठे ॥ तारी  
 जोधनीयांकी ठोस, ठिनक नहि बूटे ॥ ठिनक० ॥  
 इन्द्रियसु खगाया तार, कहो केम बूटे ॥ तारे हीये वधी  
 विपवेस, नहीं कुमखावे ॥ नहीं ॥ सूत्रकी० ॥ १ ॥  
 तें सुणी शीख सूतरकी, हिये नहि श्याणी ॥ हिये० ॥  
 तारो खरो खजानो ग्वाय, कृगुरुकी वाणी ॥ तोरी कु  
 मति कखेसण नार, खियो सोये ताणी ॥ खियो० ॥  
 दुर्गतिकी विष्टाह सेज, धनी पटराणी ॥ तु सुतो  
 क्रमतिकी सेज, पार नहीं पावे ॥ पार० ॥ सू० ॥ २ ॥  
 तेरा गफसतमें दिन गया, गर्व तें राख्यो ॥ गर्व० ॥  
 कीधी जिनवाणी दूर, ध्यसन रस चाख्यो ॥ तें न्यान  
 गांठको खोयो, रतन फ्यु नाख्यो ॥ रतन० ॥ सत वचन  
 दीयो तें ठोरु, जूठ मुख जांख्यो ॥ एसो बार बार न  
 रजब हाथ नहि श्यावे ॥ हाथ० ॥ सूत्र० ॥ ३ ॥ पो  
 साक पापकी पेर, मानतो खूवी ॥ मान० ॥ तारे मद  
 मोतीकी मास, सीसपर खूधी ॥ तारे हराम दुरतमा  
 हसी, हजुरी ठनी ॥ हजू० ॥ शिर धांभ्यो मिथ्या  
 मोरु, घात तेरी खुधी ॥ तारे हिंसा हियाको हार,  
 जेर फ्यु खावे ॥ जर० ॥ सूत्र० ॥ ४ ॥ सुकृत संपत्त

सुपनमें, रति नहीं सूजे ॥ रति० ॥ मेरो कोण गति  
को जीव, दाज कुण बूजे ॥ मेरे घर खूटे दुर्गति,  
काम नहीं पूजे ॥ काम० ॥ अल्प दुनिया महोवत  
मुजेकुं पूजे ॥ जिनदास कपटकी खाण, मान नहीं  
मावे ॥ मान० ॥ सूत्र० ॥ ५ ॥ ॥ २६ ॥

॥ अथ श्रीउपदेशनी लावणी सत्यावीशमी ॥

सिद्ध सरूपी सदा पद तेरो, तुं मूरख कां चूले रे  
॥ व्याज नफो पछे जहिं बांध्यो, खामी लगाई मूले  
रे ॥ ए आंकणी ॥ नरक निगोद कुमतका शिरपर,  
आप बन्यो हे चूले रे ॥ सिद्ध० ॥१॥ सब संपतका  
सुख देख कर, चेतन मनमे फूले रे ॥ जिनदास ते दुनि-  
यामांहे, जन्म लियो सो धूले रे ॥ सिद्ध० ॥ २ ॥ २७ ॥

॥ अथ श्रीउपदेशनी लावणी अठ्यावीशमी ॥

॥ आप समजका घर नहीं पाया, पूजाकु क्या  
समजावे ॥ बाका फिरे जिनदास जगतमे, हियो हा-  
थमे नहीं आवे ॥ ए आंकणी ॥ दरस सवाद चाह-  
नकी चित्तमे, चानक अधिका आय लगे ॥ इट्टीके  
परवशमें पनियो, ग्यानकला कोहो कैसें जगे ॥ तृ  
णाने जग लूट लियो हे, कपट करी परधनकु उगे ॥

खाय खाय छोड़ी मास घधाखो, प्राणी किसविष  
 षले पर्गे ॥ विषय विपतकी करे चुयणी, चर्चासु  
 चित्त नहीं छावे ॥ श्या० ॥ १ ॥ अपने अवगुनकु  
 नहीं देखे, डूजाका अवगुन जांखे ॥ हिंसाहीमे हठ  
 हजरी, दयना दूर दिखसे नाखे ॥ गुणवंतका गुण छोपे  
 मेरो मन, अवगुणके रसकु चाखे ॥ तिनुही प्रणमे रा  
 गधरामें, सरणे जिनवर किम राखे ॥ ठग फांसीगर  
 चोर अन्यायी, धन मीसें इनकु प्यावे ॥ श्या० ॥ २ ॥  
 अवगुनकी मेरी खान आतमा, अजान होय सो मोहे  
 पूजे ॥ नहि गामनें रुख अषको, परंरु अथ सरिखो  
 सुजे ॥ पारख नहि हे दिये ग्यानकी, गुन अवगुनकु  
 कृपा चूजे ॥ गामर देखे कहे मुज घरमें, कामघेनुं इ  
 तनी डूजे ॥ ऐसी मेरी अवनीत आतमा, अवगुन  
 किम गाया जावे ॥ श्याप० ॥ ३ ॥ क्रोध मान मा  
 यामें भातो, खोजमाहे अपत्यो रहेतो ॥ गरब गु  
 मानी गमको गरजी, पीरु पारकी नहि सेतो ॥ ज  
 क्त नहीं गुरुदेव धर्मकी, कठण घचन मुखसें केतो ॥  
 अंतर आंठ नखुछे हियाकी, पुठ परमपदकु देतो ॥  
 स्वांग सजी जिनदास जैनको, माख मुखकको ठग  
 खावे ॥ श्याप० ॥ ४ ॥ ॥ २७ ॥

॥ अथ श्रीउपदेशनी लावणी उगणत्रीशमी ॥

॥ वीत गयो नरत्तवको अत्रसर, नहि सुकृतको  
 काज करयो ॥ मनको मेत्र मित्रो नहि मूरख, उर  
 साधको स्वांग धरयो ॥ अट्ट उमर उन्नख ले अ-  
 पनी, निगोइमे क्युं नीम धरे ॥ कठ नहि याको जीव  
 हमारो, पापकर्म कर गिंन तरे ॥ दया दान तप  
 जप समरनकुं, दिलसेंती सब दूर करे ॥ काम क्रोध  
 कुमतिसें कात्रो, पाप विना पत्र चर न सरे ॥ धोत्रा  
 आय लगा अत्र सिर पर, दुर्गतिका दुःखसें न करे ॥  
 अथागपूर समुदरमें पदियो, चवजलसें कहो कैसे तरे  
 ॥ जिज्याके परवसमें पदियो, सरस परायो माल च-  
 ख्यो ॥ मनको मेत्र मित्रो नही मूरख, उर साधको  
 स्वांग धरयो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पेट पोषता फरे  
 पिंनमांही, हारु मांस बधियो लोही ॥ मातपिता  
 सब कुटुंब कवीलो, काम नहि आवे कोइ ॥ मुखपर  
 मीठी मनमें चीठी, स्वारथकी दुनियां जोई ॥ पच-  
 पच मरे इनोंके कारण, मानव जन्म दीनो खोई ॥  
 मे मतिहीन बुद्धिको विणठो, इनसेंती मनसा मोई ॥  
 सरथो न सीज्यो काम रती चर, वैठ रद्यो मनमें रोई



॥ कुण्डरुको रग लाग रह्यो हे, जेनधर्म दिखमें न जरयो  
 ॥ मनको० ॥ २ ॥ जेख पेर मनमांहे मगन मेरे, प  
 निया पोयारे पासा ॥ धनमतकों कोइ विरखो परखे,  
 कचन नहि पीतख खासा ॥ कनक कामिनीको मन  
 मांहे, लग रह्यो हे श्वधिकी आसा ॥ मुख ठपर लो  
 कोंको कहे में, महाप्रगथांहे किया वासा ॥ में फिरिया  
 पासु मुनिवरको, दोष नहि लागे माना ॥ कोयो क  
 पट प पेट जराणे, रोटीका लग रखा सांवा ॥ ऐसा  
 कपट म करयो आकरो, रति नहीं परजवतें कायो ॥  
 मनको० ॥ ३ ॥ श्रद्ध बल्लकु खाय पेर कर, अपने त  
 लको पोष कीयो ॥ पखे वांया पाप प्राणीया, नहीं  
 सुजसको जाज लियो ॥ नक्ति करी नहीं सात खे  
 प्रकी, नहीं निर्घथकु दान दीयो ॥ निंदा कीनी जेन  
 धर्मकी, सात विसनको केर पीयो ॥ साधु धायक  
 संघर कर कर, निर्मल करसा थाप हियो ॥ जिन  
 दास आण तृष्णाकी लागो, कोण गिनतम मेरो जी  
 यो ॥ आण नहीं मानी श्रिहतकी में, आगमसेती  
 अलग करयो ॥ मन० ॥ ४ ॥ ॥ २५ ॥

॥ अथ श्रीउपदेशनी लावणी त्रीशमी ॥

॥ ओगुण कव लग कहुं दिल तेरा ॥ चेतन जवर  
जंजीर जड्यो, तन मन मोठा सेरो ॥ गुरु गुणवंतका  
गुण गावो ॥ तज कुगुरको संग, सुलट सुमतिके घर  
आवो ॥ प्राणी परगुण क्युं नहि गावो ॥ तुं उंगुण-  
की खाण जीव मन, से मत पहुँचावो ॥ सिटे जव  
दुर्गतिका फेरा ॥ चेतन० ॥ १ ॥ जीव दुर्गतिमें रजव-  
धियो ॥ जगत बीच नर नीच विसनके, बीच आइ प-  
कियो ॥ शीख सूत्रोंकी तें ठेली ॥ कुदेवताकुं सेवत ल-  
ग्धी, समकितकी मेली ॥ दिया जव नरकबीच डेरा  
॥ चेतन० ॥ २ ॥ सेज सुमतिकी ते ठोकी, अंतर्ग-  
तकी प्रीत जाय कर, कुमतिसे जोकी ॥ करी नहि जि-  
नवरकी नक्ति ॥ परगतिका परवशसे दब गई, चेतनकी  
सक्ति ॥ करम मुके घाल रखा घेरा ॥ चेतन० ॥ ३ ॥  
जिनेंद्र देव सदा चज रे ॥ मोह करमकी खोल पलकमें,  
आलसकी सेज तज रे ॥ जोवन धन देख देख फूले ॥  
बोध बीज निज चित्तथी जिन, वाणी क्युं नूले ॥ कहे  
जिनेंदास सुणो बहेरा ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ ॥ ३७ ॥

॥ अथ श्रीउपदेशनी छावणी एकत्रीशमी ॥

॥ गर्ह सव तेरी शीघ्र समता, छपट रही नार गछे  
 ममता ॥ ए आंखणी ॥ नही समताकी करी करणी,  
 कुमति कुवजाकु क्यु परणी ॥ करो करतूत जगत त  
 रणी समज देख दुगतिफी हरणी ॥ जीघ तन मनकु  
 नहि दमता ॥ गर्ह ॥ २ ॥ करी सुख सहजमाहे  
 खुची, हाथ जोकी अथखा ऊनी ॥ दोरुके नार गछे  
 खुची, घात तेरी जगमे सव दूयी ॥ रति दु ग तनमे  
 नहीं खमता ॥ गर्ह ॥ ३ ॥ शीख सजदकी नहीं  
 छागी, विषय अंतर जाखम जागी ॥ स्वर्ग सुखसेती  
 गयो जागी, दुठ दुर्गतिमतको रागी ॥ चोगकी जात  
 तुजे गमता ॥ गर्ह ॥ ४ ॥ पकि जगजास गछे पांती,  
 गया उनसे कहे कुण नाती ॥ कहे जिनदास घात  
 खाती, सुष्टति नवि जनके मन चाती ॥ जोघ जि  
 नराज बिना प्रमता ॥ गर्ह ॥ ४ ॥ ॥ ३२ ॥

॥ अथ श्रीउपदेशनी छावणी वत्रशमी ॥

॥ सदा नमुं जिनराज धरनकु, कीयो जगतमे ज  
 हार ॥ सफल कर दियो मेरो अवतार ॥ ऊनी उंघ  
 मेरी अनंतकाक्षकी, दुठ जैनको जान ॥ जिन तेरा

वचन वस्या मेरे कान ॥ सत्यवादी मुख सदा सुहावे,  
 चढ्यो रंग विन पान ॥ वस्यो अनुभव पद हिरदे  
 आन ॥ तन मनसुं सब त्याग दीयो, अधरम अनम-  
 तको ध्यान ॥ हुवो षण्मांहे घणो हेरान ॥ कुगुरु द-  
 लकुं दिया सब मार ॥ सदा० ॥१॥ “दोहा ॥ वीत-  
 राग रवि ऊगीयो, (अरे) मोय हिरदेसे जोण ॥ अंध-  
 कार अलगो रह्यो, सो निरख लीयो निज ग्यान  
 ॥ १ ॥” निशदिन फरके नयन हमारा, नइ दरसनकी  
 आस ॥ हियो सब रह्यो, चरनके पास ॥ निपट हुं  
 लयलीन नाममें, विसरुं नहीं एक सास, लगी थुं म-  
 नमें ऐसी प्यास ॥ नाटक नाचे करे कीरतन, रचे की  
 सनको रास ॥ हियाकी अकल गइ सब नास ॥ जूलमें  
 पढ्यो जगत संसार ॥ सदा० ॥ २ ॥ “ दोहा ॥ जगत  
 पढ्यो जंजालमें (अरे) जैनधर्म दियो ठोरु ॥ कुगुरुका  
 उपदेशमें, तें कीनी माथाफोरु ॥ २ ॥” उजल रह्या  
 सध जीव जगतका, चले कुगुरुकी चाल ॥ सीसपर  
 ऊपट रह्यो तेरे काल ॥ मुऊ रुचती निज ठवी जिनं-  
 दकी, तज्यो जगत जंजाल, वस्यो जिननाम हीया-  
 में लाल ॥ वहुन लागे चरण तमारा. एही गवगे ते

ख्याल, करोगे मेरी प्रजु प्रतिपाल ॥ उतारो जिन  
 तिम मोहे नघपार ॥ सदा० ॥ ३ ॥ “दोहा ॥ देव ज  
 गतका जोश्या, (श्वरे) नहीं सरनको ठाम ॥ जिनराज  
 आज आनंदको, म पायो विसराम ॥ ३ ॥” ठर न  
 सूजे ठोरु दोरु, तुम चरनोमें आयो ॥ ग्यानको जेद  
 नसो पायो ॥ अधिष हुठ आनद, आज मेरे जिन  
 घर जस गायो, घघन तेरो रोम रोम ठायो ॥ खुस  
 बखसीमें भोज करे मन, अनुजघर्स न्हायो ॥ कुगुरु  
 तजी वीतराग ध्यायो ॥ कियो जिनादास जिणंद फि  
 रतार ॥ सदा० ॥ ४ ॥ “दोहा ॥ पहिज मोकु दी  
 जीयें, (श्वरे) जैनधर्मकी ज्योत ॥ ठर धधो रुचत  
 नहीं, में कुगुरु जोया बहोत ॥ ४ ॥ ॥ ३२ ॥

॥ अथ श्रीशखेश्वरजीनी छावणी तेत्रीशमी ॥

कृपा करो शखेसर साहेब, गुणधामी अतरजा  
 मी ॥ संखेश्वर पुरमांहे धिराजे, ठाजे तखतपर शिष  
 गामी ॥ कृपा० ॥ १ ॥ परमज्योति परमात्म पूरण,  
 पूर्णानंदमयी स्वामी ॥ प्रगट प्रजाकर गुणमणि आ  
 गर, जग जनना ठो विश्रामी ॥ कृपा० ॥ २ ॥ महा  
 नद पददायक नायक, परम निरजन घननामी ॥ तु

अविनाशी सहज विलासी, जीतकासी ध्रुव पद पामी  
 ॥ कृपा० ॥ ३ ॥ काल अनादि अनन्ते साहिव, तुम  
 सूरति पुण्यें पामी ॥ अब हो तुम अमृतपद सेवा,  
 रंग कहे निज शिर नामी ॥ कृपा० ॥ ४ ॥ ॥ ३३ ॥

॥ अथ श्रीगणधरजीनी लावणी चोत्रीशमी ॥

॥ वंदत हे कोई सखेतशिखरकुं, पुरगतकी दूर  
 नाशी रे ॥ कोइ जवोंका करम कटत हे, होय शिव-  
 पुरके बासी रे ॥ वंद० ॥ १ ॥ ए आंरुणी ॥ कुगुरु  
 कुदेव कुधर्म जगनका, से जाण्या सत्र राशी रे ॥ वीस  
 जिणंद मुगतिपद पाया काटी कर्मकी फांती रे ॥  
 वंद० ॥ २ ॥ ए तीर्थ जे जात्र करी जेडे, उनकी सम-  
 कित खासी रे ॥ त्रिकत्र बन्यो जिनदास जगतमें,  
 खूब कराई हांनो रे ॥ वंद० ॥ ३ ॥ ॥ ३४ ॥

॥ अथ श्रीकेशरीयाजीनी लावणी पांत्रीशमी ॥

॥ सुणजो वार्ता राव सदाशिव, मत चक्र जानां  
 धूलेवा ॥ गढपति उनका वरु अटंका, मत ठेनो तुमें  
 उन देवा ॥ ए आंरुणी ॥ सक्तावत चूरावत बोले,  
 अमही नोकर उनहीका ॥ हिंदुपति वाकु हाथ जोडे,  
 तीन जुवन शिर हे टीका॥सुण॥१॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल

सबेहीं, सुर नर वाकु ध्यावत हे ॥ इन्द्र चन्द्र मुनि द  
 र्शन आवे, मनकी मोजां पावत हे ॥ सु० ॥२॥ गया  
 राज गनहीकु आपे निवेनियाकु धन देवे ॥ खाजां  
 खिछावे सुदर खरुका, सदा सुखी जे प्रभु सेवे ॥ सु०  
 ॥ ३ ॥ तारे ऊदाज समुद्रमें जह, रोग निवारे जवज  
 वका ॥ चूप जुजगम हरि करी नदोयां, चारन घघन  
 अरि दवका ॥ सु० ॥ ४ ॥ धों धों धों धों धोंसा घाजे,  
 दसो दिसामें हे रुगा ॥ जाठ तातीया नहीं जसाई,  
 मत घतखायो गड बका ॥ सु० ॥ ५ ॥ राणाजीके ठ  
 मराधजीकां, मानतो नहीं वे घातां ॥ चांकी कीधी  
 थेंहिज पाये, में नहीं, आवु थां साथां ॥ सु० ॥ ६ ॥  
 मूठ मरोडे घडे अजिमाने, जहेर जरयो हे नजरुमें ॥  
 रुपनदासका साहेय सचा, देख तमासा फजरुमें ॥  
 सु० ॥ ७ ॥ मयाराम सुत जणे मूझवद, घडे सीनां  
 घर तुम देवा ॥ फोज यिलर गइ घरघर घोमा,  
 खळा रखो तुम देवा ॥ सु० ॥ ८ ॥ ॥ ३५ ॥  
 ॥ अथ श्रीगोमी पारसनाथनी छावणी ठश्रीशमी ॥  
 ॥ जगत जयिकरुज महेर अनंत गुण, तेज तपस  
 हे श्रीजिनको ॥ प्रगट प्रवल प्रसाय परम गुण, सु

णतां सुख दिये तन मनको ॥ नील कमल दल नव  
 कर दीपे, देह हे गुणगणके वृंदा ॥ नमो निरंजन फ-  
 णिपति सेवित, पास गोमीचा सुखकदा ॥ १ ॥ ए  
 आंकणी ॥ मोह करी कुंजस्थल जेदन कंठ रव प्रभु  
 तुं सच्चा ॥ हरि हर इंद्र विरचि देव गण, कर्म कीचमें  
 पर कच्चा ॥ तुज सम उर ठोर कुण जगमें, देव छ-  
 सरो जे वंदा ॥ नमो ॥ ॥२ ॥ तुं अकलंक सरूपी अ-  
 रूपी, परमानंद पद तुं दायी ॥ तुं शंकर ब्रह्मा जगदी-  
 श्वर, वीतराग तुं निर्मायी, अनुपम रूप देख तुज  
 रीज्या, सुर नर नारीके वृंदा ॥ नमो ॥ ॥ ३ ॥ जल  
 हल ज्वाल बलत चिहुं कोरे, धूम घटागगनें चाली ॥  
 जलत काठ कोटर सर सर्पन, रुपत मरण दिशा  
 आली ॥ जगत सरण दुःख हरण प्रबल प्रभु, कहत  
 कमठ सुण जोगिंदो ॥ नमो ॥ ॥ ४ ॥ तप जप करत  
 धरत नहीं कहुणा, वासें दुःख दोहंग पावे ॥ कहत  
 कमठ तव अरुण नयन करी, जोग वात तुमकुं नावे  
 ॥ पावक अंतर जलत नागकुं, सेवक हाथे निकसंदा ॥  
 न ॥ ॥ ५ ॥ सुणी नवकार नाग जिन मुखसें, धरणींदर  
 पदवी पावे ॥ चंद्र कीरण उज्ज्वल जस पसरित, पास



प्रजु निज घर आवे ॥ तजी संसार चरण प्रजु सीनो,  
 ध्यान धरत मन आनंदा ॥ नमो० ॥ ६ ॥ ध्यान धरत  
 प्रजु देखी कमठ सुर, आय करी परिसह जारी ॥ ग  
 गन जाग चिहु ठर घनाघन, धीर घना ठसटी धारी  
 ॥ चचस्र चपला होत चिहु ठर, चचस्र चपलाके घृ  
 दा ॥ नमो० ॥ ७ ॥ कटट काटका होत गगनमें, ग  
 रुड गडरु चिहु दिशि गाजे ॥ फरर फरर घन पवन  
 फुरत हे, तरुवर वररु मररु जांजे ॥ ठनन ठनन पा  
 वस जरु खागी, मूशस्र धारे वरसंदा ॥ नमो० ॥ ८ ॥  
 खसस्र म्बसस्र जगती जस्र पसरत, ठिनजर नाक तोडे  
 आसा ॥ मेरु परें प्रजु धीर रही तव, ध्यानरसें रहे म  
 तवासा ॥ तत्कण धरणरायको आसन, कपटी ध्या  
 न ड्यु चासदा ॥ नमो० ॥ ९ ॥ तत्कण धरणराय  
 अरु धरणी, आय नमत जिनकृ रगे ॥ शिरपर ठप्र  
 धरे फणिगणको, शेषनाग कोसत अंगे ॥ हांय्यो  
 कमठ सरण करी प्रजुको, गयो निज स्थानक हर्षदा  
 ॥ नमो० ॥ १० ॥ नाचत धरणरायकी खसना ठम  
 क ठमक पग ठमकती ॥ ठमक ठमक धींनुआ ठ  
 मकावत, घम घम घुधरी घमकती ॥ तास्र तान सय

मान प्रकारें, नव नवठंडें नाचंदा ॥ नमो० ॥ ११ ॥  
 धप मप धप मप सादल धमके, कररु कररु करताल  
 करे ॥ रण रण रणके रण रणकंती, जह्वरी नाद रसें  
 पसरे ॥ दरुदरु डुकरुवां वाजे, जुंगल जेरीना वृंदा  
 नमो० ॥ १२ ॥ वाजे श्रीमंजल सरणाई, वीणा ताल कं-  
 साल ठटा ॥ टुक टुक मिलत मिलत एक एकसें,  
 जोर वनी तव रंग घटा ॥ प्रभु पण ज्ञान ध्यान लय-  
 लीना, मोडे कर्म अरिवृंदा ॥ नमो० ॥ १३ ॥ केवल-  
 ज्ञान लही प्रभु निर्मल, स्थापन चत्रविह संघ करे ॥  
 चरण कमल सुररचित कमल शिर, धरत धरणि जिन  
 तिमिर हरे ॥ शत सम आयु करी प्रभु पूरण, सिद्ध  
 वधू कर पकरंदा ॥ नमो० ॥ १४ ॥ अजर अमर अ-  
 विनाशी निरंजन, सिद्ध बुद्ध समरो रंगें ॥ परम महो-  
 दय परमात्म पद, लहियें जिन सेवन संगें ॥ रोग  
 सोग दोहग दुःख जावे, पावे सोहग सुखकंदा ॥  
 नमो० ॥ १५ ॥ अरि करी जलण जलोदर जल जय,  
 नाम जप्यां सहु डूर टले ॥ प्रभु पदपद्म सेवनसे क-  
 मला, रंग रसाला आय मिले ॥ रूपविजय कहे सुनत  
 लावनी, पामे चित्त परमानंदा ॥ नमो० ॥ १६ ॥ ३६ ॥

॥ अथ श्रीनेमीश्वर जगवाननी लावणी सारुश्रीशमी ॥  
 ॥ तुम समुद्रविजयका तन, अरज सुन लीजें ॥  
 अरज० ॥ मेरी इतनीसी एक चाह, दरस मोहे दीजें ॥  
 ए आंकणी ॥ तुम वीतराग शुद्ध ध्यान, बडे तुम सूर  
 ॥ बडे० ॥ तुम रिद्ध सिद्धके जकार, लब्धिके पूर ॥  
 तुम सात व्यसनका सग, किया सध दूरें ॥ किया  
 सध० ॥ तुम पढोंते मुक्ति महेस विश्व, ज्ञानके पूरे ॥  
 में हु सगी कगाज, कृपा मोहे कीर्ज ॥ कृपा० ॥ मेरी  
 इत० ॥ २ ॥ में घनी घनी महाराज, जजन नहीं  
 च्छु ॥ जजन० ॥ में पछ्या विपम जवकूप, कुगुरु  
 संग कृष्ण ॥ में दुख दुखी जिनराज, तेरेसु घोसु ॥  
 तेरे० ॥ अथ जवसागरथी तार, जरम में खोसु ॥ अथ  
 सुनो अरज महाराज, जगत जस लीजें ॥ जगत० ॥  
 मेरी० ॥ ३ ॥ में श्याय पना जिनराज सरण अथ  
 तेरे ॥ सरण० ॥ तोरे दरसनकी अलिखास, लगी  
 रही मेरे ॥ में जम्यो अनतो कास, मोहेके पूरे ॥  
 मोहे० ॥ अथ सरने लीजें मोकु, करन दुख दूरें ॥  
 अथ आठ कर्मके माहे, मेरो तन लीजे ॥ मेरो० ॥  
 मेरी इत० ॥ ३ ॥ में हुश्रो बहुत धनवंत, करमके ज

मात्रे ॥ करम ॥ अब सुद्ध असुद्ध विचार, ध्यान  
 नहीं पावे ॥ अब चेतन जीव जिनराज, धर्ममें आ-  
 यो ॥ धर्म ॥ अब आठ कर्मके मांहे, सुगति फल  
 पायो ॥ तुम सुमुद्रविजयका तन्न, अरज सुन लीजें  
 ॥ अरज ॥ मेरी इत ॥ ४ ॥ ॥ ३७ ॥

॥ लावणी काव्यरूपे आरुत्रीशमी ॥

॥ जुजंगी ठंद ॥ आनंद वरते मंगल प्रभु नाम लीला,  
 फरसो इष्ट धरम करो करम ढीला ॥ आरोधां अचल देव  
 त्रैलोक्य नाथं, अरिष्टनेमि पद्म प्रणम्यं प्रजातं ॥ १ ॥  
 महानिष्ट अनादि करम वीज बाढ्यो, अतिहि वजर  
 सील विषय जाव टाढ्यो ॥ विकट विरत धारी शीलरंग  
 रातं, अरिष्टनेमि ॥ २ ॥ वद्वच इष्ट लीधो परम ज्योति  
 धामं, तुं विमलं विराजे अचल सिद्धनामं, ॥ केवल-  
 ज्ञानें सदा मगन मातं ॥ अरिष्टनेमि ॥ ३ ॥ सही  
 वेदना में सूद्धम निगोदं, कियो पाप परिचय विषयसुं  
 प्रमोदं ॥ इणविध में जुगति अनंत असातं ॥ अरिष्ट-  
 नेमि ॥ ४ ॥ जिनेश्वर विराजे देह दीपमानं, परम  
 तेज प्रजा अखंरु वरत ध्यानं ॥ निर्मल लह्यो कुल उ-  
 त्तम जाकी ज्योतं ॥ अरिष्टनेमि ॥ ५ ॥ अमरापुर

पहोता माया जाख मूम्यो, चूक्यो हुं नरममें तव नकि  
 चूक्यो ॥ अहय सुख खीया तें करी कर्म घात ॥ अरिष्ट  
 नेमि० ॥ ६ ॥ अनंत वख ठपायो तज्यो जगत सारो  
 अरुप गुण कल्या में प्रजु मोहे तारो ॥ जिनदास विनवे  
 तुहि माय तात ॥ अरिष्टनेमि० ॥ ७ ॥ ॥ ३० ॥

॥ धावणी काव्यरूपे श्योगणचाखीशमी ॥

॥ जुजगी ठद ॥ दु ख दुष्ट जुगता ब्रुयो नरकवासी,  
 चिहुं दिस फिस्रो गळे गेरि फांसी ॥ कियो कठ ठेदन  
 हीये आप ठायो, परम जिनधर्म यिन ऐसा दुःख पायो  
 ॥ १ ॥ पापी नरकमें खुखी सेज सोय, खड्गखडी हणे  
 शिश शुखीमांहे प्रोयो ॥ पळ्यो जमके परघरा कुन्नीमें  
 पचायो ॥ परम० ॥ २ ॥ कुगुरुके कसेजेसु से जाय  
 खटकी, जबर जजीर करमने नरमांहे पटकी ॥ श्यो  
 पखीने मस्तक सध तोरु स्वायो ॥ परम० ॥ ३ ॥ धर  
 ठीसु ठेवे धाणीमांहे पीसे, काढे देव नेत्र वीतु खगानी  
 कीसे ॥ महा लाख थजसू मुजे सेइ खगायो ॥ परम०  
 ॥ ४ ॥ नरकमें मेरो अंग करवतसु पाळ्यो, विकट नदी  
 घेतरणीमांहेज मने दाळ्यो ॥ वृद्ध घडे सोमखी तळे  
 मुज घेठायो ॥ परम० ॥ ५ ॥ क्या खिखावे गोसो धाख

मुखमें, जुंजे चांरुमांहे पड्यो हुं महा दुःखमें ॥ फरस  
 लई ठोले जरुमा दारुमें उरुयो ॥ परम० ॥ ६ ॥  
 माखी दील चूटे सरप तीरु खावे, ए जम ठंदे पग  
 तरुवो लाल पावे ॥ अशिमय वृक्षसुं उंधो लटकायो,  
 ॥ परम० ॥ ७ ॥ जाली में पकरी सूवरने विणास्यो,  
 शोले रोग उपजाइ रगत कील वास्यो ॥ पिंरु प्रोवे  
 करमवस तनसुं विधायो ॥ परम० ॥ ८ ॥ करायो स्नान  
 कुंरु तेलें उकाढयो, विणास्यो हे सिहने दिलें घाव  
 घाढयो, महाखार जखमो उपर बुर बुरायो . ॥ परम०  
 ॥ ९ ॥ सह्या वार अनंतो सो दुःख अब में जान्यो,  
 विकट वेदना दुःख अटप में वखाणयो ॥ अरिहंतके  
 सरणे जिनदास आयो ॥ परम० ॥ १० ॥ ॥ ३ए ॥

॥ लावणी काव्यरूपे चालीशमी ॥

॥ जुजंगी ठंद ॥ ब्रह्मपदवी जीत हुवा जेख धारी,  
 मुगति पंथकी हे सव रीत न्यारी ॥ अगनि होम करता  
 जारो देत घीको, दयामूल धर्मो विना काम फीको  
 ॥१॥ अनेक जेख जगतमें बन्यो हे वजीतो, श्री जिनधर्म  
 विना जन्म जाय रीतो ॥ हिरदे प्रकाश जयो हे कुम-  
 तिको ॥ दयामूल० ॥ २ ॥ परजव संघाती दया दान

मेटे, कुदेष कुयुरुका चरण जाय मेटे ॥ करति न पावे  
 धरम मानि नीको ॥ दयामूस्र० ॥ ३ ॥ जुधारा वावे  
 जहाँ अखरु ज्योत वाखे, दुर्गतिकी नीसानी गर्भकु न  
 घाखे ॥ गगामे न्हायो दियो शीश टीको ॥ दयामूस्र०  
 ॥ ४ ॥ जगतरामकीकु सती जाणी पूजे, जगत खेती  
 करतो घरे जप पूजे ॥ जगत नाम जगतमें धरावे जती  
 को ॥ दयामूस्र० ॥ ५ ॥ धन्य संत जगतमे कुमति दूरवर्जी ॥  
 नाती श्वोर गोती ए कुदुध आप गरजी ॥ जिनदास  
 कहे यु कोई न किसीको ॥ दयामूस्र० ॥ ६ ॥ ४० ॥

॥ छावणी काव्यरूपे एकताखीशमी ॥

जुजगी ठद ॥ कुजाप जपतां घणो कास्र खोयो,  
 मोक्षो करमकी निंदे अनादिशु सोया ॥ छे नीम नव  
 कार ररन जैसो मोती, विना जैन धमें सर्व जकि थोयी  
 ॥ १ ॥ कुदेष देखी पूजे चूख्यो जरमें, मुगति पंथ थावे  
 जबर थावे कमें ॥ जिस पुरुपकु हे दुर्खज ब्रह्म  
 ज्योति ॥ विना जैन धमें ॥ १ ॥ ब्रह्म नाम धारी कहे  
 ग्यान मोमें, ठहो कायके जीव अगनमांझे होमे ॥ सीजे  
 नरक जाख थोयी पेर धोती ॥ विना जैन धमें ॥  
 ॥ ३ ॥ धरे धरणो घर घर करे नरसु दगा, जस्म तन

लपेटी फिरे जगमें नगा ॥ धरी जेख जगवो जणयो  
 ब्रोत पोथी ॥ विना जैन धमें ॥ ४ ॥ ४१ ॥

॥ अथ श्रीनेमजीनी लावणी बहेंतालीशमी ॥

नेमनाथ जिनवरको बदन मुख, निरखुं कैसे री  
 ॥ नेमनाथ जगवंत बनबासी, सिवरमणीके रागी ॥  
 सुमताजाव धरयो अंतर्गत, राजुल त्रिय त्यागी ॥ अ-  
 केही बनमें कैसेरी ॥ नेम ॥ १ ॥ जल बिन मीन  
 बिन होय जावे तिम, राजुल दुःख पावे ॥ अंतर  
 आस लगी अब ऐसी, नेमनाथ नहीं आवे ॥ मुजे  
 कव दरसन देसे री, कैसे री ॥ नेम ॥ २ ॥ सरोवरके  
 तट खडे नगन होय, ममता मनकी मूकी ॥ सीत  
 ताप वेदन बहु वेदे, कंचनसी देह सूकी ॥ परिसह  
 जारी सहेसे री ॥ नेम ॥ ३ ॥ बिन अन्नपाणी बिन  
 बिकारी, बिन बसतर तपधारी ॥ बिन आधार निरं-  
 जन निर्मल, नेमनाथ गत न्यारी ॥ मुगतिपद वेगां  
 लेसे री ॥ नेम ॥ ४ ॥ कर्म चर्म तज केवल लीनो,  
 सुख संपत्के दरिया ॥ समवसरणके बीच बिराजे,  
 अनंत ज्ञानगुणें चरीया ॥ सिंहासन उपर बेसे री ॥ नेम ॥  
 ॥ ५ ॥ नेम सती मुक्ति पद लीनो, हुवां करमसे रीता ॥



दुगतिका दु ख बहोत सहेता, जिनदास धनु पीहीता ॥  
 तुमारे सरणे रेहे री ॥ नेमनायण ॥ ६ ॥ ॥ ४२ ॥  
 ॥ अथ श्रीधूखिज्जजीनी छावणी त्रेंताखीशमी ॥

॥ सुणो सखीरी रग महेखमै, में फिरती थी दी  
 धानी ॥ मेरा प्रीतम कोइ मुजे मिखावे, धरी पलक  
 दु ख कट जावे ॥ सुणो सखी री मेरा दरद हे, कुण  
 पधिसें दूर होता ॥ मेरो यारकी ठवी दिखावे, ऐसे  
 झानी कुण छावे ॥ सुण ॥ १ ॥ महेखके ठपर बन  
 कर देखु, दुरधिनमें दुनियां सारी ॥ दुनियां सारी हो  
 त हजुरे, नाथको रूप नहीं पावे ॥ घरमें फिरती थांसु  
 ऊरती, खान पण मे नहीं खाती ॥ घाव खगा सो  
 घायल जाने, थाखम सारी फटकावे ॥ सुण ॥ २ ॥  
 ठतीयासेंती मेरे पीठ नहीं, दूर होता गोखमे होती ॥  
 गोखमे होती फिर फिर जोती, घरमे जाकर फिर  
 रोती ॥ धार बरस खगे खेख खेखार्ह, ॥ धाखमें ठोरी  
 धीगोती ॥ भागा बिहूणा पथमें चलते दुनियां चांपत  
 पांठ मोती ॥ सुण ॥ ३ ॥ मेरा खावन जोग खेह कर,  
 घर घर फिरते धूखिज्जजा ॥ धूखिज्जकी घात सुणते  
 ठतीयां फाटत हे मेरी ॥ दु खजर सारी रेन गई पण,

सोवन खाटे नहीं सोती ॥ चोमोसा पर नाथ न आते,  
तो मरणां हे एक फेरी ॥ सु० ॥ ४ ॥ जाडु करणेवालेकुं  
कोई, बोलावे नथको मोती ॥ नथको मोती लाख स-  
वाको, में कुरवान करा देती ॥ मोहनीमंत्रे पियकुं मिला  
वे, लेश बलैया पाजं परती ॥ श्रीशुजवीर कहे सुण  
सजनां, वेधक बात कहुं केती ॥ सु० ॥ ५ ॥ ४३ ॥

अथ श्रीआदिनाथजीनीलावणी चुम्मालीशमी

॥ मेरे दिलके महेरम तुंही, श्रीनाजिनंदन जग  
वान ॥ तेरे चरणोसे उलजा प्राण ॥ ए अंकणी ॥  
कैलास पर्वत पर मंदिर, जिहां प्रभुजी राजे ॥ देव  
पुंडुजि गयणें गाजे ॥ सिद्धखेत्र शेत्रुंजो स्वामी, आचू-  
षण ठाजे ॥ ज्योतिसें चंद्र सूर्य लाजे ॥ दोहा ॥ रत्न-  
मांहे हे चिंतामणि, ज्ञानमे हे केवलज्ञान ॥ सिद्ध-  
गिरि तिम तीर्थमें, अवर न एह समान ॥ "जलांजी  
अवरण ॥ आण एही जुगत जिनराज प्रगटी आपो  
सेवक सुखथान ॥ तेरे चरणोसें उलजा ॥ १ ॥ अ-  
ष्टापद श्री आदि जिनेसर, शिवरमणी ठाया ॥ दर्शन  
तुम इंद्रादिक पाया ॥ सुर नर नारी तेरे दरसनसें,  
केवल उपजाया, मुनिजन ज्ञान उदय पाया ॥ दोहा ॥

मुक्ति तणे पंथे वहे, पामी केषलज्ञान ॥ सिद्ध अन्त  
 आगे हुवा, करत शशुजय प्यान ॥ ” जखांजी करत ० ॥  
 जुगलाचारी तेरे दरसनसें, गये गये निर्धान ॥ तेरे  
 ष ० ॥ २ ॥ मात मालदेवा कुर्वे, अवतार रत्नधारी ॥  
 चकेसरी के हे कर्ते, ए जय जयकारो ॥ धुसेव नगरमें  
 प्रगट प्रभुजी, मोक्षा संसारी ॥ गळे विश्व मुक्ताफल  
 हारी ॥ दोहा ॥ पांश कोन मुनिराजसें, जरत लहे शिव  
 वास ॥ अजरामर अज जे हुवे, केषलज्ञान विधास ॥ ”  
 जखांजी केषल ० ॥ ब्राह्मी सुदरी बाहुषल जिनकुं,  
 दीया रे केषलज्ञान ॥ तेरे ० ॥ ३ ॥ जगत वीष विस  
 वास तेरो, हे महा तेज गुणवंत ॥ प्रभु तुम अरिग  
 जण अरिहत ॥ क्रोध मान मद लोभ करो प्रभुजी,  
 दूर करो रे एकांत ॥ तेरा गुण गाळ एक मन चित्त ॥  
 “दोहा ॥ सुरगिरि अष्टापद गिरि, गिरनार आसू तेम ॥  
 समेतशिखर ए पंचकु, वंदू बहू धरी प्रेम ॥ ” जखांजी  
 वदू ० ॥ जिनदास प्रभुचरणें तोरे, यो दरिसण जग  
 वान ॥ तेरे ० ॥ ४ ॥ ॥ ४४ ॥

॥ अथ श्रीकेशरीयाजीनी सावणी पिस्ताखीशमी ॥  
 ॥ रिपज देव तु ब्रह्मा देव हे, देखनकी गत हे न्यारी

॥ कालाजीकी बनी ज्योति हे, अंगें केसर अति प्यारी  
 ॥ ए आंकणी ॥ आगे पीठें तोरा कोट बनाया, बिचमें  
 हे बावन देरी ॥ सुवर्णका तोरा इंदा जलकता, सुरत  
 कंठ सबसें न्यारी ॥ रिषज्ञ० ॥ १ ॥ आगे पीठें तोरी  
 बावन देरी, बेठी हे आसन वाली ॥ माता मरुदेवी  
 पिता नाजिराया, हस्तीकी तोरी असवारी ॥ रिषज्ञ०  
 ॥२॥ तीन सरूप एक दिनमें धरते, धन्य देवा तोरी  
 माया ॥ लाख चोरासी पूर्व तोरुं आजखुं, धनुष्य पां-  
 चसें सोवन काया ॥ रिषज्ञ० ॥ ३ ॥ देश देशका सं-  
 घज आवे, मानता माने सहु तेरी ॥ केसर सोनैया  
 हुंकीयो लावे, आशा पूरे सहु केरी ॥ रिषज्ञ० ॥ ४ ॥  
 धुलेवा नगरमें आप बिराजो, दुनियां सहु दर्शनआवे  
 ॥ जगमग ज्योति बिराजे प्रभुकी, सो कहेवेमें नहीं  
 आवे ॥ रिषज्ञ० ॥ ५ ॥ कोइक पाटे कोइ चढावे, को  
 इक केसर लइ आवे ॥ अतर अबीर फूल ज्युं बहेके,  
 रात दिवस गंधर्व गावे ॥ रिषज्ञ० ॥ ६ ॥ कदियुगमें तो  
 तुंहि देव हे, प्रगट नाथ देखु मोरा ॥ चोशठ इंद्र तोरी  
 करे चाकरी, समरण करता सव तोरा ॥ रिषज्ञ० ॥७॥  
 नाम लेवंता घटे पापना, संकटमां वारे वारे ॥ वाट

घाट घधीखानेधी, काखोजी काडी खावे ॥ रिपज०  
 ॥७॥ अकचर घादशाह चढकर आये, दुरमत खेने  
 काखेकी ॥ घाधीस खाख तो खसकर खावे, पार नही  
 कतु प्यादखकी ॥ रिपज० ॥ ९ ॥ सव खशकरकु कीय  
 अधखे, फोज बुटी फिर जमरोकी ॥ अम्हाकर  
 जागे तुरकना, पकनी घाट फिर दिख्हीकी ॥ रिपज०  
 ॥ १० ॥ अखविज्ञानमें जोयु देवियें, रास खुटी सय  
 धूखेवेकी ॥ खीखे घोडे खढकर आये, खखकारे सय जिख  
 नकी ॥ रिपज० ॥ ११ ॥ कपूतने तो मार दीयो हे, गदे  
 नसें सय तातेकुं ॥ ऐसा देव हिंदुका जाणी, मत खढ जा  
 खो धुखेवेकु ॥ रिपज० ॥ १२ ॥ नखुरामकुं सरण तुमारो  
 आवे गिरिवर दर्शनकु ॥ ध्यान धराधी चित्त ठरावी,  
 खाहासे देवन मुक्तिकु ॥ रिपज० ॥ १३ ॥ ४५ ॥  
 ॥ अथ श्रीकेशरीयाजीनी खावणी ठेंताखीशमी ॥

॥ खना खनो प्रभु अरज करता, समरण करता सव  
 तोरी ॥ दीनानाथ मोरी अरजी सुन कर, जवकी टाखो  
 तुम फेरी ॥ ख० ॥ ५ ॥ आंकणी ॥ विनिता नगरीमें  
 तोरा जनम हे, माता तोरी मरुदेवा ॥ चोशठ इड  
 तोरी करे खाकरी, खंड सूर्य करता सेवा ॥ नाजिरा

याके कुलमे सोहे, ऋषभ देवजी नाम तोरा ॥ दीना०  
 ॥ १ ॥ धूलेवा नगर तेरा खूब बना हे, वांहे देवल जि  
 नवरका ॥ फिरती वावन देहरी सोहे, हस्ती खना म-  
 रुदेवीका ॥ दोनुं हाथी जुले गिरुवा, दरवाजे प्राक्रम  
 चारी ॥ दीना० ॥ १॥ आंगी तेरी खूब वनी हे, बूटी  
 सोजे जमावनकी ॥ गले मोतिनको हार विराजे,  
 सोजा दीसे कुंकलकी ॥ चमरी तांरे उडे शिर पर,  
 रिषभ देवकी बलिहारी ॥ दीना० ॥ ३ ॥ ठमक ठमक  
 तोरो मादल ठमके, ऊणण ऊणण नाद जालरका ॥  
 घनन घनन तोरा घंटा बाजे, रुंका बाजे नोवतका ॥  
 समी सांजकी होवे आरति, मंरुपमांहे चीरु चारी ॥  
 दीना० ॥ ४ ॥ नित नित तोरी आंगी सोहे, मुकुटकी  
 गत हे नारी ॥ सिरपर तोरे ठत्र विराजे, सामला  
 सूरत दीसे प्यारी ॥ एक दिनमें त्रण रूपज होता, दे-  
 खत हे सब नर नारी ॥ दीना० ॥ ५ ॥ चार खंरुमें  
 नामज तोरा, संघ आवे सब देसनका ॥ ठत्रीश खा  
 बिंद आणा माने, तुम समरण अरिहंतोका ॥ सर्ग  
 लोक पाताल लोकमें, मृत्यु लोक माने चारी ॥ दीना०  
 ॥ ६ ॥ ऋषभ देवका दरसन करतां, पाप जावे चबो

जबका॥समरण करतां बेनी चांजे, बध झूटे सब कर्मों  
 का ॥ जिसका तोरी श्याण माने, ऐसो परबो हे चारी  
 ॥दीना०॥ ७ ॥ सबत अडार श्योगणसाठ आसाड, शुद्ध  
 वीजे दिन बुधवारी ॥ ईसर गढका सघज श्याया, जात्रा  
 करे सब नरनारी ॥ मानता तोरी सद्बुको माने, ऐसो  
 परबो हे चारी ॥ दीना० ॥ ७ ॥ दरिसन करतां जोमो सा  
 वणी, सुन क्यो ठनका ठीकाना ॥ राय मलारका कनी  
 परगणा, गाम ठनुंका मेसाणा ॥ रूपविजयजी सेवक  
 तुम्हारो, सुन क्यो प्रजु श्रज मेरी ॥ दीना० ॥ ए॥४६॥  
 ॥अथ श्रीसमवसरणानी छावणीसुफताखीशमी॥

॥ अरिहतजीके समयसरणमें, चोशठ इदर श्याय  
 खडे ॥ धर्मचक्रका दरसन देखत, चोरोसी मत बूट  
 पडे ॥ केवल जडे घडे ग्यानसे, दरसनसु दरसाव पडे ॥  
 परम धरमसमकित गुण देखो, पसरगी नीसान खडे ॥  
 सुर नर मुनिवर स्तुति करत हे, प्रजु हे सब देवनमें  
 घडे ॥ अरि० ॥ १ ॥ ए श्याकणी ॥ सोना रूपाके  
 गढज घनाया, रसन सिंहासन कमल जके ॥ पूरव मु  
 न्त्रसें घेठे प्रजुजी, केवल दरसन ज्ञान जके ॥ सुण कर  
 देव मानव धरणीपर गणधर साधु ग्यान घके ॥ सब

चतुर्विंश देव देवता, ज्ञान क्रिया शुद्ध ज्ञाव चढे ॥  
 हाथ जोड़ विनति करे तोरु, चविक जीव गुणवाणे  
 चढे ॥ अरि० ॥ १ ॥ अशोकवृक्षकी ढाया मनोहर,  
 योजनमें विस्तार करे ॥ चूमि शुद्ध कर अचिर अर-  
 गजा, पाणीका ठंडकाव करे ॥ पचरंग बादल फूल सु-  
 गंधित, फूलनके वरसात करे ॥ जोजन चूमि सुगंध  
 वेदिका, तीर्थकर पद आप वरे ॥ देव काटि कोटि करे  
 प्रदक्षिणा, जयजय मंगल मुखसें पढे ॥ अरि० ॥ ३ ॥  
 त्रय तत्र मस्तक पर सोहे, जामंजल मुखसें तपते ॥  
 धर्मचक्र जोजनगत उन्नत, दुडुंनि नाद बाजा जमते  
 सुर नर किन्नर असुर विद्याधर, चउविह संघ पूजा क-  
 रते ॥ चौशठ इंद्र सब करे आरति, गणधर वाणी मुख  
 पढते ॥ जैनधर्म पाये नरत्नवमें, मुक्ति नीसेनी तवहों  
 चढे ॥ अरि० ॥ ४ ॥ चार परखदा धर्मसजामें, धर्मरा-  
 जकी सेव करे ॥ घाती अघाती कर्म खपा कर, शुद्धा-  
 तत्र शुच ज्ञाव धरे ॥ लोकात्रोक प्रकाश करत हे, सात  
 नय नव तत्त्व ज्ञासे ॥ उत्पाद व्यय ध्रुव सत्तामें नवण्ड  
 निश्चे गुण ज्ञासे ॥ मनुगम उदय जिनराज सजामें,  
 हाथ दोयभें चक्रवडे ॥ अरि० ॥ ५ ॥ ॥ ४७ ॥



॥ अथ श्रीनेमनाथजीनी स्त्रावणी अरुतालीशमी ॥

॥ गिरिवरकु गये गुरु ग्यानी, राजुख मनम नहीं  
मानी ॥ गिरि० ॥ नव जवको नेह मेरो जुनो, तज  
गयो मेरो श्याम सखूनो ॥ मेरे सिगपे पण्यो हू म  
हूनो, मेरो हिरदो हुवो सध सूनो ॥ नित नेन ऊरे मुऊ  
पानी ॥ गिरि० ॥ १ ॥ शुद्ध सजन सनता पाखे हू

पण मनना सध टाखे ॥ सध गांठ गरवकी गाखे, मु  
गतिके मारग चाखे ॥ ऐसे नेमनाथ हे प्यानी ॥ गिरि०

॥ २ ॥ राजुख कहेती सुन पीया, जुगमें ऐसा क्या की  
या ॥ अश्रुकाकु दोस क्यु दीया, जुगमें धिकू धिकू मेरा  
जीया ॥ परवतकु चम्पु रे दिस जानी ॥ गिरि० ॥ ३ ॥

शुद्ध सतीने सयम खीनो आतमको कारज कीनो ॥  
परमात्म पदकु चीनो, अनुभव रससें दिस जीनो ॥  
जिनदास प्ररूपो जानी ॥ गिरि० ॥ ४ ॥ ॥ ४७ ॥

॥ अथ श्रीमगसीनाथजीनी स्त्रावणी लंगणपञ्चासमी ॥

पारस पूजन ज्योत जगतमें, मगसीके म्याने ॥  
माखवा मुझक स्वप्नक जाने ॥ ण श्यांकणी ॥ ग्वरच से  
सुष्टम माया, पूरव जवके पुण्य जागसें मगसीनाथ  
पाया ॥ कगे तुम मेरा, मित्रने मुगतिका मेवा, णथ

म निरंजन देवा ॥ वडे हे सब संवर क्याने ॥ पारस०  
 ॥ १ ॥ चाव धरि दर्सनकुं आवे, माणिनत्र रखवाली  
 करता, श्रावक सुख पावे ॥ प्रभुगुण गाता, जिन चर-  
 णोंसें लय लाता, सुख संपत ले घर आता ॥ लग्यो  
 जिनवरजीसें ध्यानं ॥ पारस० ॥ २ ॥ अतिशय पार-  
 सका चारी, देश देशको जेजां हुवे, दर्सनकुं नर नारी  
 ॥ जानसें पूजे, जिण घर कामवेनु पूजे, सुरगति जाव-  
 णकी सूजे ॥ सूत्रकी सीख हिये आने ॥ पारस० ॥ ३ ॥  
 पार जिनजसको नहीं पावे, मगसीनाथकी महीमा  
 किम, सेवकसें कहि जावे ॥ सदा पगे लागे, मेरे ग्या-  
 न कला एक जागे, जिनदास एही वर मागे ॥ हरो  
 दुःख दूर सुणो काने ॥ पारस० ॥ ४ ॥ ॥ ४ए ॥

॥ अथ श्रीनेमजीनी लावणी पच्चासमी ॥

॥ दगा दे गया पति गिरनारी, कहो रे माइ कैसें  
 लगे कारी ॥ ए आंगणी ॥ विधि त्रिन तोरणकुं आया,  
 सखी सब मिल मगल गाया ॥ पशु फंदमेसें बुझाया,  
 सतीने दरसन नहीं पाया ॥ तोरु गये नव चवकी यारी  
 मेरी दिल दया नहीं धारी ॥ विलखती हे राजुल  
 नारी, आतमा अपनीकुं तारी ॥ कहो ॥ १ ॥ पति

मेरा परधत पर चढिया, करमसें सन्मुख जइ श्री  
या ॥ ग्यानका घाट हिये घनीया, पाप सब तनम  
नका जनिया ॥ वेदना तन पर खम खेता, मुनि वन  
घनमें बस रहेता ॥ किसासें सुख दुःख नहीं कहेता,  
परीसह सहे बहुत जारी ॥ कहो० ॥ १ ॥ इणखिन पन  
घाती तोष्या, नेह सब सजमसें जोष्या ॥ करी हे स  
मकित पटगाणी, हिये रुच रही जैनधानी ॥ ममता  
एक मुकिकी ताणी, रक्षा सब पर उदासी श्रानी ॥  
संसारकु बहोत श्रसार जानी, प्रजु तुम ममता सब मारी  
॥ कहो० ॥ ३ ॥ सती मन मनसूषा सोन्घ्या, केस श्रपना  
सिरका छोष्या ॥ दिया दुरगसिके सिर घोष्या, सीतात्री  
शिवपुरकु पहुँच्या ॥ श्रखय सुख प्रजु जीने छीना, म  
रण दुःख मेट सबे दीना ॥ इस्या जिन मोरगमें जीना  
करे जिनदास सेव तारी ॥ कहो० ॥ ४ ॥ ॥ ५० ॥  
॥ श्रय देष गुरु श्रने धर्मथाश्रयी छात्रणी एकावद्धमी ॥

॥ में नीत नमावुं गीस, साथ संतनकु ॥ साभ० ॥  
जुगमाँहे इद्रिय जोत, किया बस मनकु ॥ ए श्रांकणी ॥  
श्रघ जिनबदा जुग जाण, अपो जिनवर रे ॥ जपो० ॥  
७ श्रघल विराजे देव, दरस दिख धर रे ॥ श्रघ जि

नवाणी जिन नीर, ज़रयो सरवर रे ॥ ज़रयो ॥ कोई  
 न्हावे संत सुजाण, सुघरु जन नर रे ॥ अब इतनी  
 सुन कर सीख, करम क्य कर रे ॥ करम ॥ इणविध  
 शिव समता सुखसें, अमर पद वर रे ॥ अब जज जत्र  
 मानवमांहे, नाजि नंदनकुं ॥ नाजि ॥ जुगमांहे ॥  
 ॥ १ ॥ तुम जग जंजीरा तोरु, तज्या घर फंदा ॥  
 तज्या ॥ कोई उलज रह्यो अज्ञानी, आंख विन  
 अंधा ॥ मे रह्यो विषय ज़रपूर, गरवमें गंधा ॥ गर ॥  
 में बहुत हुं हेरान, जवर जुग धंदा ॥ में कुगुरु जोया  
 जोर, जोगी उर नंदा ॥ जोगी ॥ में जिनवर प-  
 रख्यो आज, हुवो आनंदा ॥ अब जिन जजनां सो  
 लाज, हुं निज धनकुं ॥ हुं ॥ जुगमांहे ॥ २ ॥  
 अब जप परमेष्ठी पंच, परम पदधारी ॥ परम ॥ ए  
 जपतां जय जयकार, नरक होय न्यारी ॥ अब द्वे गुरु  
 गौतम नाम, लब्धि जंकारी ॥ लब्धि ॥ ए जुगमें  
 साचा संत, सदा सुखकारी ॥ तुम जवजल पाम्या  
 पार, समुद्र महा ज़ारी ॥ समुद्र ॥ तुम तारथा बहु  
 नर नार, बहुत संसारी ॥ तुम काट कियो मेदान,  
 करम सब वनकुं ॥ करम ॥ जूगमांहे ॥ ३ ॥ अब

श्रंतदृष्टि सगाय, सुनो जिनवाणी ॥ सुनो० ॥  
 सुख संपत्की खान, मुगति नीसानी ॥ श्रथ श्रमर  
 सी करतूत, हिये नहीं आणी ॥ हिये० ॥ में दुर्गति र  
 लीयो बहोत, सेक्यो जिम थाणी ॥ श्रथ ते मान  
 श्रवतार, चेत तु प्राणी ॥ चेत० ॥ ए जिन दरिस  
 परजाध, नरक विरसाणी ॥ श्रथ विनवे यु जिनदास  
 श्राहु दरिसनकु ॥ चाहु० ॥ जुगमांहे० ॥ ४ ॥ ५१ ॥  
 ॥ श्रथ श्रीवीरजगवाननी छावणी बावनमी ।

॥ अनतबली निजराजी जगतपति, चरण श्रगुं  
 मेरु कपाया ॥ देव देवी मिख करे धीनति, सध सु  
 पति श्रानद पाया ॥ ए श्रांगणी ॥ तेरे गुणकी म  
 हिमा श्रथ पाइ, इतनो गुनो धगसीस करो ॥ स्वमो  
 श्रपराध प्रभु पापको, प्रेम नजर हम ठपर धरो ॥ करि  
 स्तुति ठवे सुरि सुर सध, जन्म मोघ्टव श्रथ करणो  
 खरो ॥ श्रधिक श्रधिक धरि हर्ष हियेमें, श्रासस श्र  
 पने तनको हरो ॥ शुद्ध तन मनसें करो महोत्सव,  
 शिव रमणीकु सिताध धरो ॥ जगतिसें जर धर्यो ही  
 याकु, श्रथ दुगतिसु काहेकु करो ॥ जनम मरनकु मेट  
 दिया हे, सो जन जक्तिसें नदाया ॥ देव० ॥ १ ॥

सुरनकी संपत सुख दासक, जिनवरकी ए चक्ति चली ॥  
 दोहिलो तुं मत होय जीवका, अण तेकी रुद्धि आवे  
 चली ॥ उठाय कलश हाथोसैं लीना, सुरपतिका मन  
 हुवा रली ॥ जय जय शब्द सुखसैं सब बोले, विषय  
 गये तस डुर टली ॥ हरख वदन कर सुर सब गावे,  
 आनंद घनी मुऊ आय मिलो ॥ जन्म हमारो देखे  
 लग्यो हे, सुखकी सेज सुरतोल ढली ॥ धन धन हे  
 जिनकी जिंदगानी, जिनवरका गुण मुख गाया ॥  
 देव० ॥ २ ॥ करे निरत जिनवरके आगें, वाजांकी  
 धुन वाज रही ॥ सुरतका सुर नर हे सबला, महिमा  
 मोसैं न जाय कही ॥ अंग मोरु हित जोरु करे सब,  
 सफल घनी मेरी आज जई ॥ लदय आनंद दिनकर  
 घर उग्यो, कुमति कलेसण अलगी गई ॥ सुर नरका  
 सुखकी नहीं गिनती, अमरापुर पद जाय लही ॥ ठ  
 पन कुमारी जिनगुन गावे, सुखसुं कथन कर कीरति  
 कही ॥ ऐसो उलट धरि करतां महोत्सव, हिरदे ह-  
 रख अधिका आया ॥ देव० ॥ ३ ॥ मेरु शिखर पर  
 कलस ढाल कर, हाथ जोरु सुर आगें खडे ॥ में चर-  
 णोंका चाकर तेरा, अरज करे युं खडे खडे ॥ ठत्र च-

मर बाधे जिनवर पर, छखि छखि सब सुर पाय पड़े ॥  
 हुकम करो तो नीर नमणको, सब सुरपतिके सीस  
 चढ़े ॥ इण विधिसें जकि जे करता, जव जवका सब  
 पाप जहें ॥ तुम गुनको सुर पार नहीं छे, जिनदास  
 कैसो कैसो रने ॥ फूल सुगधी नीर ठटकता, सुर सथ  
 प्रभुकु घर छाया ॥ देष० ॥ ४ ॥ ५२ ॥

॥ अथ आत्मपर छावणी त्रेपनमी ॥

॥ मरणमय कूप को न जाने, फिरे तजि मूछ चूख  
 पाने ॥ म० ॥ ५ ॥ आंकणी ॥ छोकपत पेट बीच ब  
 सती, किसो शत्रुमें नहीं खसती ॥ संत कोठ सुरग  
 फरे मसती अनुसे कुगति दूर खसती ॥ सूमति कर  
 छड़ी धोत ससती, आत्म निरग्ये नाण इसती ॥  
 कृषे पन्थाकु चरणो ध्यान ॥ मरण० ॥ १ ॥ राजके  
 सीस छान धरता, अनंत दस बखसें नहीं मरता ॥  
 विना इधियार जोर करता, किसिसें माखा नहीं म  
 रता ॥ सुगट विन काज सत्री सरता, निगोदादिक  
 दु एक हरता ॥ जिर्नदका थोल बस्या काने ॥ मरण०  
 ॥ २ ॥ शीख अध सुनो सास मारी, ग्यान विन ध्या  
 तम रहि धोरी ॥ नेदकी रीत छड़े दोरी, जगन सथ

बुद्धि गइ तोरी ॥ ज्ञानसें आप चली दोरी, समज न  
 लहे करघा चोरी ॥ कुगुरुकुं खोटा करि माने ॥  
 मरण० ॥ ३ ॥ पाणी विन प्राण बहुत जावे, निकल कर  
 बाहोर नहीं लावे ॥ अधोमुख जगमें बतलावे, जेद पट  
 द्रव्य सबी पावे ॥ इस्यो जिनदास ज्ञान गावे, बचन  
 चविजनके मन चावे ॥ जेद चवि विरलो कोई आने  
 ॥ मरण० ॥ ४ ॥ ॥ ५३ ॥

॥ अथ काया उपर लावणी चोपनमी ॥

॥ बल जावो रे मुसाफर यार, प्रीत सब तेरी ॥  
 प्रीत० ॥ उठ चढ्या प्राण परदेश, आस तज मेरी ॥  
 ए आंकणी ॥ युं बोले करुना बोल, कामिनी काया ॥  
 कामि० ॥ में पिया न निर्मल नीर, सरस नहीं खाया ॥  
 तेरे संतके परचाव, नहीं सुख पाया ॥ नहीं० ॥  
 पेख्या नहीं मखमल चीर, लीर लटकाया ॥ तुज बिना  
 मे बल जल हुइ गइ, राखकी ढेरी ॥ राख० ॥ लठ०  
 ॥ १ ॥ में दुरगतिकी करतूत, पगें कर ठेली ॥  
 पगे० ॥ हुवो कुमतिके शिर शत्रु, सूमतिको बेली ॥ तें  
 समता शीलकी बात, हियामें मेली ॥ हिया० ॥ सुर  
 गतिके सूखकी खान, खरी कर जेली ॥ तें कियो न



हमसु हेत, वणयो मेरो वेरी ॥ वणयो० ॥ ठठ० ॥ १॥  
 तें बहोत खमाई खोरु , काम नहीं थाई ॥ काम० ॥ तें  
 ठठयो हे मेरो संग, प्रीत विरखाई ॥ खे चक्या चोरासी  
 मांहे, करम मुऊ घेरी ॥ कर० ॥ में रुक्या जगतकी  
 घीघ, करुं किस पेरी ॥ तेरी संगतसें में कियो, पाप  
 अति जारी ॥ पाप० ॥ ठठ० ॥ ३ ॥ मेरी दुई खरावी  
 बहोत, प्रीत तेरी जाणी ॥ प्रीत० ॥ जुगता विगता में  
 अनेक घट्टत पठतानी ॥ सूफ गइ सोचके मांहे,  
 कोया कुमलाणी ॥ काया० ॥ मोढे पनी विपतके घीघ  
 मांरु कर घाणी ॥ तें रखी नहीं मेरी खाज, मुगतका  
 खेरी ॥ मुगत० ॥ ठठ० ॥ ४ ॥ सुख दायी सुमतिकी  
 सेज, सप्ताइ वेठो ॥ स० ॥ कायाने कीयो हेरान, ठुठ  
 नें सेठो ॥ तज थो मिजलसकी मोज, मानकु मेटो ॥  
 नजो नाथ नक्ति प्रजुनाम, घुरितसथ नेटो ॥ जिउदास  
 आस जिनराज, चरण पर ठेरी ॥ च० ॥ ठठ० ॥ ५ ॥ ५४ ॥  
 ॥ अथ विनतिरूप लावणी पचावनमी ॥  
 ॥ आयो अथ समकितके घरमें, पडे नहीं निगोदके  
 रुमें ॥ ए आंकणी ॥ प्रजुजी में जगत सब कोयो, कहिं  
 जिनराज नहीं जोयो ॥ गांठको माख सत्री खोयो,

कुगुरुसैं मन मेरो मोह्यो ॥ ग्यान नहीं रह्यो मेरे करमें  
 ॥ आयो० ॥ १ ॥ कुगुरु मोहे जवटमें पटक्यो, जीव  
 जव दुर्गतिमें अटक्यो ॥ विषय सुख विदूने चटक्यो,  
 हियो दुःखनिगोदको खटक्यो ॥ कारज नहीं कियो  
 आप नरमें ॥ आयो० ॥ २ ॥ दया कर दरिसन मोहे  
 दीजो, दुःखीकुं सरणे रख लीजो ॥ नजर सुज मुऊ  
 उपर कीजो, जवि तुमें वचनोसैं जीजो ॥ मरणमें मरे  
 कोण नरमे ॥ आयो० ॥ ३ ॥ प्रभुजी तुम मेरे मन  
 वसिया, मेरा सब रोम रोम हसियां ॥ बन्या में जिन  
 गुणाका रसिया, सरण जिनदास आय धसिया ॥ लगे  
 नहीं मन ब्रह्मा हरमे ॥ आयो० ॥ ४ ॥ ॥ ५५ ॥

॥ अथ सूगुरुनी लावणी ठप्पनमी ॥

॥ नमुं नमुं में गुरु निर्ग्रथकुं, वे जिन मुद्राधारी हे  
 ॥ पुजल उपर प्रेम न करता, मनकी भमता मारी हे  
 ॥ न० ॥ १ ॥ गर्व गाल कर गुप्ति गोपवे, गति निर्ग्र-  
 थकी न्यारी हे ॥ कनक कामिनीके नहीं चोगी, वे पुरा  
 ब्रह्मचारी हे ॥ न० ॥ २ ॥ ठक्कायाके जीव अनाथी,  
 उनके वे हितकारी हे ॥ करम काट कर केवल पावे,  
 ज्ञान गरथ गुण जारी हे ॥ न० ॥ ३ ॥ श्रद्ध श्रद्धासैं ससति

सेषी निज आतमकु तारी हे ॥ जिनघरकु जिनदास  
धीनवे, उनके चरण बखहारी हे ॥ न० ॥ ४ ॥ ॥ ५६ ॥

॥ अथ कुगुरुनी छावणी सत्तावनमी ॥

॥ तजु तजु मे उन कुगुरुकु, कनक कामिनी धारी  
हे ॥ हान ध्यानकी घात न जाने, अष्ट करमसें नारी  
हे ॥ त० ॥ १ ॥ करी कपालें जचूत सपेटी, शिर  
पर जटा बधारी हे ॥ कान फारु कर मुद्रा पहेरता,  
उनके घरमें नारी हे ॥ त० ॥ २ ॥ जोग खेड कर जीव  
बिणासे, वै मद्य मांस आहारी हे ॥ कूना पर्यी जग  
तकु करता, मुखसें फहे आचारी ह ॥ त० ॥ ३ ॥  
कहु उगुण कुगुरुका कथ लग, साध नहीं संसारी हे ॥  
आप रुवे शोरकु रुवावे, दुर्गतिका अधिकारी हे ॥  
त० ॥ ४ ॥ समकित थडा जैनधर्मकी, नहीं कुगुरुकों  
प्यारी हे ॥ जिनघरकु जिनदास बिनते, कुगुरु संग  
खूधारी हे ॥ ५ ॥ ॥ ५७ ॥

॥ अथ परस्त्री त्याग उपर छावणी अठ्ठावनमी ॥

॥ चतुर परनारी मत निरखो ॥ धायण कैरी रेन  
अधेरी, बिजखीको चमको ॥ रादण महोटा राय क  
हावे, लंका गढ बको ॥ पाप करीने नरक पहुँचियो,

दुःख पायो अतिको ॥ १ ॥ धातकी खंरुको राय पन्नो-  
त्तर, डुपदीने हरतो ॥ कृष्ण नरेशर करे खुवारी, जव  
पुण्य हुवो हलको ॥ २ ॥ कीचकराय महा दुःख पायो,  
जीमेंसू अधिको ॥ नारी ड्रोपदी नेहें विचारी, जव ज-  
वमें जटक्यो ॥ ६ ॥ परनारी को रंग पतंग हे, पोगलको  
जलको ॥ उसबुंद जब लगे तावका, ढलक जाये ढलको  
॥ ४ ॥ परनारीको सनेह करतां, धन जाशे घरको ॥  
डूजा देख कर करे खुवारी, जव वनसे जटक्यो ॥ ५ ॥ ५० ॥

॥ अथ स्वार्थ विषे लावणी उंगणसाठमी ॥

॥ कोन जग तमे तारा चेतन, कोन जगतमें तारा  
रे ॥ अपने अपने स्वार्थ वस, विन स्वार्थ होय  
न्यारा रे ॥ कोन० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ स्वार्थें मात  
सुपुत्त बोलावे, जीजी कर कहे दारा रे ॥ वीर कहे  
जागनी निज स्वार्थें. लागे पिताकुं प्यारा रे ॥ कोन०  
॥ २ ॥ हय गय रथ पायक धन परधन, कोइ न रा-  
खनहारा रे, ॥ काल वेहाल सबहीकुं करते, करता  
मुख पोकारा रे ॥ कोन० ॥ ३ ॥ इंद्रजाल सुपनां  
सम जाना, जूठा जगत पसारारे ॥ सेवो चरण कोई  
संत जनोके, जीव होवे निस्तारा रे कोन० ॥ ४ ॥ ५० ॥

॥ अथ नवपदजीनी लावणी साठमी ॥

॥ जगतमें नवपद जयकारी, पूजतां रोग टखे  
 नारी ॥ ए आंकणी ॥ प्रथम पद तीर्थपति राजे, दोष  
 अष्टादशकु त्याजे ॥ आठ प्रातीहारज ठाजे, जगत  
 प्रभु गुण धारे साजे “ ॥ दोहा ॥ अष्ट करम दस जी  
 तके, सफळ सिद्ध ते थाय ॥ सिद्ध अनत नजो धीजे  
 पद, एक समय शिव जाय ॥ ” प्रगट नयो निज स्व  
 रूप नारी ॥ जगत० ॥ १ ॥ सुरि पदमें गौतम केशी,  
 उपमा चंद्र सूरज जैसी ॥ ठगारथो राजा परवेशी,  
 एक नवमांह शिव केशी “ ॥ दोहा ॥ चोथे पद पाठक  
 नमु, श्रुतधारी उद्यज्जाय ॥ सव्वे साहु पचम पदे,  
 धन्य भन्नो मुनिराय ॥ ” ॥ वखाणयो धीर प्रभु नारी ॥ ज  
 गत० ॥ २ ॥ ड्रव्य खटकी श्रद्धा आवे, सम संवेगा  
 दिक् पावे ॥ धिना ए ज्ञान नर्ही फिरिया, जैन दरस  
 नसें सय तरिया “ ॥ दोहा ॥ ज्ञान पदारथ सातमे, प  
 दमें आतमराम ॥ रमतां रम्य अर्प्यातमें, निज पद  
 साधे काम ॥ ” देखना घस्तु जगत सारी ॥ जगत० ॥  
 ॥ ३ ॥ जोगकी महिमा घट्टु जाणी, चक्रधर ठोमी  
 सत्र राणी ॥ जति दश धम करी साहे, मुनि आवक

सब मन मोहे "॥ दोहा ॥ कर्म निकाचित कापत्रा, त-  
पकूठार कर धाय ॥ कामासुं नवसुं पद धरे, कर्म मूल कट  
जाय" ॥ जजो तुम नवपद सुखकारी ॥ जगत० ॥ ४ ॥

श्रीसिद्धचक्र जजो ज्ञाइ, अचानल तपनीधी थाइ ॥

पाप त्रिहुं जोगें परिहरजो, ज्ञाव श्रीपाल परे करजो

" ॥ दोहा ॥ संवत उगणी सत्तराशोमें, जे पोषी श्री

पासा ॥ चैतर धवल पूनम दिनें, सकल फली मुऊ आश ॥

बाल कहे नवपद ठवि प्यारी ॥ जगत० ॥ ५ ॥ ॥ ६० ॥

॥ अथ श्रीशातांतिनाथजीनीलावणी एकशठमी ॥

॥ शहेर जुनेरमे शांति बिराजे, अंगनर फुलनकी

माला ॥ अगरुवम अगरुवम नोवत वाजे, घंट वाजता

चोताला ॥ गजपुर नगरीमें तेरा जनम हे, घेर घेर मं-

गल सब गावे ॥ इंद्रलोकथी इंद्र इंद्राणी, उत्सव क-

रनेकुं आवे ॥ चालीश धनुष सोवन तेरी काया, मृग

लांठन तोरे पाया ॥ विश्वसेनके कुलमें शोजित, माता

अचिराके जाया ॥ सरग सरत पाताल त्रिलोकमें, हुवा

ज्योतका अजुवाला ॥ अगरु० ॥ १ ॥ केसर चंदन

अंघुणां-घसीने, पूजा करुं जिनेसरकी ॥ अनुपम आंगी

खूब वनी हे, जागी ज्योत राजेसरकी ॥ अशरण श-

रण पतित दुःख धारण, करुणा सादेव तुन्म धणी ।  
 मुक्त करणी छुन मति जो जागे, कृपा करो मोरी  
 नकि धणी ॥ तेरे नामसे नवनिधि पावे, शांतिना  
 थजी मतवाला ॥ अग्ररु० ॥ २ ॥ आंगी तेरी अजः  
 धनी हे, शांतिनाथ सादेव मेरा ॥ जनावकी तुम शोदे  
 टीखनी, हीरा अन्नकता हे चोफेरा ॥ अग्रजर फूलन  
 जटा धनी हे, चमर ऊरता चोफेरा ॥ धूपभाण ठै  
 जात धनी हे, शिर सोहे मोती सोमा ॥ नव रतनका  
 हार गखेमें, जेसा खंडका अजुआला ॥ खगो ज्योत  
 तेम जोत जगत्में, दीप तेजका अजुवाला ॥ अग्ररु०  
 ॥ ३ ॥ तेरे नामसे सब जुग महिमा, धन्य तुमारी क  
 रणीकु ॥ शांतिनाथजी में सेवक तुमारा, मेरी आज्ञ  
 अपने घरकु ॥ शांति करने रे शांतिनाथजी, समरण  
 करता सब तेरा ॥ समी सांजकी होती आरती, इयाम  
 मूरत दीसे प्यारा ॥ आरती उतारे आनंद गावे, धाजे  
 मृदग गरुताशा ॥ अग्ररु० ॥ ४ ॥ पूजा करु रे प्रजु  
 सादेव मेरा, चरण पम्वाशु मे तेरा ॥ जनम मरणका  
 जय निवारो, तारो जवसायर फेरो ॥ छस चोरासी  
 जयमें जमियो, जेसा धाणीका फेरो ॥ शांतिनाथ मोहे

पार उतारो, गरीब चाकर में तेरा ॥ जानुचंदके जय  
निवारो, बाजे जीतका घनियाला ॥ अग्ररु० ॥५॥६१॥  
॥ अथ श्रीनवदपजीनी लावणी वासठमी ॥

॥ धर सुमतिसे ध्यान, चेतन संवरमे रखनां ॥ न-  
वपद श्री नवकार मंत्र श्री, घरी घरी जपनां ॥ ए आं-  
कणी ॥ क्या कहूं मे तारिफ नवपद, जवाब बरु  
जारे ॥ नहीं आदि नही अंत जीनोका, नहीं लगता  
पारें ॥ पहेले पद अरिहंता, ओ जगवंता जयकारे ॥  
जपो नाम तुम उनका, जिनसें होवे लुझारे ॥ कटे  
प्यापका मल विघन सब, हो जावे डूरें ॥ अनंत अनंत  
कर्मके थोकरे, हो जावे चूरे ॥ जवोजवके प्रायश्चित्त  
सारे, जावे मिटकारे ॥ शाश्वता ए मंत्र जिनोमें, बरु  
चमत्कारे ॥ जिस दिन जपनां जाप ध्यान श्री, अरि-  
हंतका धरनां ॥ नव० ॥ १ ॥ नमो सिद्ध जगवंता उ हे,  
अलेप किरतारे ॥ नहीं रंग नहीं रूप जिनोमें, नहीं  
कुठ आकारे ॥ नही चक्षु नहीं जिजा नहीं उ, नासा  
श्रोतारे ॥ नही पाद नहीं पानी नहीं उ, करता सुक्ता  
रे ॥ चउद राजका अग्रजागमें, हे सिद्ध शिला रे ॥  
ईषदूजारा नाम कहेते, सिद्धांत अंदरे ॥ एहे सिद्ध  
शिलाका नाम है, तुम सुन करके लेनां ॥ नव० ॥ धर०



॥ २ ॥ पीस्ताक्षीश खाख जोजन है, उनका परि  
 माणे ॥ जोजनका चौथीस भाग एक, ऊपरसें छेने ।  
 आवे जावे ना आप आपकी, ठंठ जग्यो म्पाने ।  
 उहां रहे अधर माहाराज नहीं, कुठ पाणी पवने ।  
 नहीं क्रोध नहीं कपाय नहीं ठं, करते जगवाने ॥ ए  
 हजार ठंर आठ गुनोसे, धिराजे जगवाने ॥ जरे सु  
 जरपूर नहीं, संख्याका परिमाणा ॥ नव० ॥ धर० ॥ ३ ॥  
 नमो पद आचारज प्रायश्चित्त, जावे जष जवके ॥ २ ॥  
 आप षडे महाराज जीतता, पांषो इंड्रीके ॥ नव द्रष्ट  
 चार पाखनेषाक्षे, पच महाव्रतके ॥ पच समिति ती  
 गुपती गुन, ठंथीस है उनके ॥ सुधर्मास्वामी जंबू  
 स्वामी षड्भुत गिनती उनके ॥ करु षदना उनकु प्राय  
 श्चित्त जावे जष जवके ॥ आचारिज पद जपोने अ  
 विश्व, अक्षय सुख पानो ॥ नव० ॥ धर० ॥ ४ ॥  
 उपाध्यायजी जगवान मेरा सत, गुरु सबसे षका ।  
 नमस्कार म करता षोषे, पदमें नाम जिनका ॥ आ  
 चारंग सुगरुग ठाणंगे, समवायांग करणका ॥ जगवर्त  
 क्ताता उपासग अतगरु, अनंतर उषवार्हिका ॥ परसन  
 व्याकरण विपाक नाम, सुनो धर सूत्रका ॥ पाखन  
 ठंर प्रतिषोचना, अन्यास है उनका ॥ नवपल्लवका

देवे मूर्खकुं, ऐसे ग्यान गुरुका ॥ आचारिजके जेसे  
 होई, मेरे सजरुकुंकहेनां ॥ नव० ॥ धर० ॥ ५ ॥  
 नमो लोय सव्वसाहूणं, नमस्कार करनां ॥ साधु सु-  
 निराज केसे उनके, गुन तुम सुन लेनां ॥ अढीघी-  
 पके म्याने पंदर, खेतर सुन लेनां ॥ उं पंदर खेतरके  
 साधु उनको, नित्य वंदन करनां ॥ पंच समिति समता  
 तीन, गुप्तिसें गुप्त रहेनां ॥ बकायके पीअर पंच, म  
 हाव्रतकुं पालना ॥ नव प्रकारके परिग्रहोंसों, उनकुं  
 त्याग देनां ॥ स्त्री और लक्ष्मी राज रुद्धि, सवकुं ठोरु  
 देनां ॥ अखय पदके खातर संयम; साधनकुं चहानां  
 ॥ नव० ॥ धर० ॥ ६ ॥ पांच पद तो कहे उंर दूसरे;  
 पद होइगे चारे ॥ सुनो नाम तब उनका कहेता; सारा  
 विसतारे ॥ एसो पंच नमुक्कोरो; नव पद अंदरे ॥ ए  
 पांचो जगवान् कहे तजी; उंहां नमस्कारे ॥ मंगलाणं  
 च सव्वेसिं निर्मल, कारी किरतारे ॥ पढमं हवइ  
 मंगलं, नव पद हुवे पूरे ॥ उनके गुन तुम ग्रहो ने उ-  
 तरो; जव सागर पारे ॥ ए पांचोके नाम रतनसैं; पाप  
 हुवे दूरे ॥ चउद पूरवको सार; मंत्र नवकार सुन लेनां ॥  
 जो नर जजे दिन रेन होवे; मुक्तिसैं मिलनां ॥ नवपदश्री  
 नवकार मंत्र; श्री घरी घरी जपनां ॥ नव० ॥ धर० ॥ ६१ ॥

॥ अथ केशरीयाजीनी छावणी त्रेसठमी ॥

॥ श्रीरुजदेव महाराज केसरीया, वेठा पद्मानोमें  
 ॥ केसरी० ॥ आसपास गुलजार जमी, लग रही पो  
 हानोमें ॥ ए आंकणी ॥ टुक टुक पर हे बजा, धजा  
 पर चोकी जित्ठनकी ॥ सब आत्रक मिला पूजा क  
 रते, केसर चदनकी ॥ श्री० ॥ १ ॥ खासा देवल घन्या  
 देवल पर, कल्ली चरुवाह ॥ अष्ट ड्रुवां खेड पूजा करते,  
 उद्योत सवाई ॥ श्री० ॥ २ ॥ सेशूजा गिरनार जीव  
 तुम, अष्टापद जानां ॥ सोनगिरिके दरसन करके  
 चपापुरी आनां ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चपापुर ठर पावा  
 पुरी जीव, समेत शिखर जानां ॥ मुक्तागिरिके दर्शन  
 करिके, आबुजी आनां ॥ श्री० ॥ ४ ॥ रायणपुर ठर  
 गढ आबुजी, मार्गे तुगी गिरि जानां ॥ मगसीजीके  
 दरसन करके, गोनीजी आनां ॥ श्री० ॥ ५ ॥ श्रीश  
 खेश्वर दरसन कर खल, तारंगे जानां ॥ पुरपदकके  
 दरसन करके, कसिकुरु आनां ॥ श्री० ॥ ६ ॥ सब  
 तीरथकी करी जातरा, घरकु धी जानां ॥ कहे श्री गगा  
 दास जाई वाणी, जगधतकी खेनां ॥ श्री० ॥ ७ ॥ ६३ ॥

॥ अथ जिनपूजारूप होरीखेलनी लावणी चोसठमी ॥

॥ फागुण महीना फागमें होरी खेलनां, नाजिनंदा  
 हो नंदके सरनमें रहेना ॥ चूना चंदन उर अरगजा  
 कंसर घसना, केसरसें करो जिनपूजा ॥ नाजिनंदा  
 हो नंद बडे महाराजा ॥ तुंहीं तुंहीं तुंहीं विना नहीं  
 पूजा ॥ प्रीतम प्यारा ते प्यारा प्राण जीवने, करता  
 बंदगी तेरी, बंदगी दिलके मीयाने, जविजन जावे  
 जावसे ने पूजा करनां ॥ नाजि० ॥ फागु० ॥ १ ॥  
 गुणी जन गावां तुम गावो जिनके गुणे, आशा लृष्णा  
 लृष्णाकुं तजो आजमाने, सीयल समता समतासे  
 धरनां ध्याने ॥ दुर्जन धर्म हो धर्म पाया पुण्ये, ऐसा  
 अवसर हो अवसर फरि नही आवे ॥ देवगुरु जक्ति  
 जक्ति जुगति नहीं पावे ॥ चेतन चेत चेत कर रहेनां ॥  
 नाजि० ॥ फागु० ॥ २ ॥ अवीर गुलाल गुलाल उर  
 खरबोड़, फुल लेनां केतकी ने जाई जूई ॥ चंपो रु-  
 मरो रुमरो मोगरो सही ॥ आंगीयां रचावो रचावो  
 प्रजुके तोड़ ॥ जासुस लेनां तुम लेना कमल लाले ॥  
 मालती मचकुंद मचकुंद चमेलो फूलें ॥ सत्तर जेदे  
 जेदे तुम पूजा करनां ॥ नाजि० ॥ फागु० ॥ ३ ॥

अव्यजावे जावसें होरी खेलना, अष्ट कर्म हो  
 जखा कर देना ॥ मोह माया माया ममता परि  
 रना ॥ सद्गुरु गुरुके चरन चिन्त धरना ॥ संसार  
 पना सुपना मात्र तुम जानो, देव गुरु धर्म तुम  
 र्मकू पीठानो ॥ जविका जावे जावसें जक्ति कर  
 ॥ नाजि० ॥ फागु० ॥ ॥ ६४ ॥

॥ अथ उपदेशनी छावणी पासठमी ॥

॥ कुमतिकी संगत नहीं करिये रे ॥ कुम० ॥ संग  
 करिये ऐसी सद्गुरुकी, जवजखनिधि तरिये ॥ इ  
 विना ग्यान ध्यान नहीं सुजे रे ॥ गुरु० ॥ सद्गुरु स  
 नहीं कोइ जगमें, मूरख प्रतिबूजे ॥ जक्ति षड् जावो  
 महाराज जक्ति षड् जावो, मुक्तिमें फावो ॥ सेवन शु  
 विनय विध करिये रे ॥ सेवन० ॥ संगत० ॥ १ ॥ सद्  
 गुरु शब्द दीये ऐसा रे ॥ सद्गु० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अरि  
 हत जपो जन, सहो सिद्धि जगत तैसा ॥ चिदानन्द  
 प्यावो ॥ महाराज चिदानन्द प्यावो ॥ परम सुख पावो  
 ॥ जेम चोराशीमें न जमिये रे ॥ जेम० ॥ संगत० ॥  
 ॥ २ ॥ सद्गुरु शीख दीये, ते ॥ सं० ॥  
 मान ममता परिच्छे. काया

कोइ ॥ महाराज अमर नहीं कोइ ॥ जगतमें जीवन  
जोइ ॥ दयाधर्म दिल बिच धरियें रे ॥ दया० ॥ संगत०  
॥ ३ ॥ जोवन धन थिर नहीं रहेना रे ॥ जोवन० ॥  
खलक खजानां खीण नहीं खूटे, हलक होय जानां ॥  
संचो मत तोइ ॥ महाराज संचो मत कोइ ॥ सुकृत  
कर सोइ ॥ काहेकूं कृपण चित्त करियें रे ॥ काहेकुं० ॥  
॥ संगत० ॥ ४ ॥ सबे है स्वारथके मीता रे ॥ सबे० ॥ तप  
जप देव गुरुकी सेवा, एह परमारथ चित्ता ॥ जग-  
पति जाचो ॥ महाराज जगत्पति जाचो ॥ मदत्तरें म-  
मता मत माचो ॥ जिन समरण चित्त धरियें रे ॥ जिन०  
॥ संगत० ॥ ५ ॥ कहे रंगविजय सुण प्राणी रे ॥ कहे० ॥  
धंधा सबे संसार तणा, तजी सर्दहो जनवाणी ॥  
सुणो जिन करणी ॥ महाराज सुणो जिन करणी ॥  
शिवपद निसरणी ॥ सेवो रे जिन चरणा, जिस अजर  
अमर पद वरियें रे ॥ जिम० ॥ संगत० ॥ ६ ॥ ६५ ॥  
॥ अथ श्रीशांतिनाथजीनी लावणी ठासठमी ॥  
॥ श्री शांतिनाथ महाराज विराजे, मांरुवगढ  
मांहि ॥ सरव धोतुकी मूरत खासी, दरसनणे त्यांहिं ॥  
शांति० ॥ १ ॥ उंलु दोलु वावन देरा, बीच जिने-

सरजी ॥ मानप्रद महाराज स्वप्ना हे, शोभा रा  
 नकी ॥ शांति ॥ १ ॥ देश देशके आवे जातरा, दा  
 नके त्यांही ॥ सुंदर मूरत खूब रचना, मानवम  
 माहि ॥ शांति ॥ ३ ॥ देख सुपना तेर दर्श  
 आया, मानवगढमांही ॥ शोमण तो घी चढोय  
 दीपकके मांही ॥ शांति ॥ ४ ॥ ऊरुधसीका पत्र आप  
 मानवगढ माहि ॥ अष्ट दरवकी पूजा करके, गि  
 नात जमवाई ॥ शांति ॥ ५ ॥ मेवक अरज त  
 कर जानी, मूरति में मागी ॥ शांतिनाथ दुर्बख  
 दातो, जनम मरण त्यागी ॥ शांति ॥ ६ ॥ ॥ ६६

॥ अथ छावणी समस्तवर्गी ॥

॥ तेरे सुरत सोद्रेणी देख, मेरा मन हरखे ॥ तें  
 दर्शनकुं में नित्य, ऊठ आवुं तरुके ॥ तेरे मस्तके  
 मुकुट, कानमें कुंरुख छटके ॥ तेरे बाजुबंधकी ऊ  
 खक, मेरे मन अटके ॥ कोई पडे करीके जोरु  
 हाथ बिच दमके ॥ कोई पडे करीके जाऊ, हाथ बिच  
 दमके ॥ मेरे पाप दुखे सब छूर, देख कर तनके ॥  
 प नदीवर्द्धन सुरपें, किरपा करके ॥ प धर्मदास तेरा  
 गुन, गावे हरखें ॥ १ ॥ ॥ ६७ ॥

॥ अथ चैत्यवंदननी लावणी अरुसठमी ॥

॥ सिद्ध नमो अरिहंत नमो वली, आयरियो जव-  
ज्जाय नमो ॥ नमो नमो सब सोधु निरंजन, केवली  
कह्या (जन धर्म नमो ॥ सिद्ध० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥  
वार देवलोकें नव ग्रैवेयकें, पंच अनुत्तरें चैत्य नमो ॥  
जुवनपति व्यंतर नंदीश्वर, शाश्वताशाश्वत चैत्य नमो ॥  
सिद्ध नमो० ॥ २ ॥ शत्रुंजय अष्टापद गिरनारें, पावा  
चंपा समेतशिखर नमो ॥ चतुर्विध श्रीसंघ मंगल जण-  
तां, जक्त जणे नित्य नित्य नमो ॥ सिद्ध० ॥ ३ ॥ ६७ ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्वामीना पालणानी  
लावणी जंगणोतेरमी ॥

॥ मातात्रिशला जुलावे नंदनकुं रे, जुलावे महावीरकुं  
॥ तीनो जुवनके नाथ, जुल रहे पारणेकुं ॥ मणि कं-  
चनके पारणे, दोरी हे रेसमकी रे ॥ दोरी० ॥ घुघरु  
वाजे तुम तुम, क्या शोजा कहुं उनकी ॥ सो रहे आप  
जगवान, नहीं इन्हा धावनकी रे ॥ नहीं० ॥ अंगुष्ठ  
म्याने अमरित चूसे, रहे स्वाद उनकी ॥ ए स्वादकी  
सुगंध, चलती फूल कमानकी रे ॥ चल० ॥ सुवर्णवर्णी  
काया जेसी, वन रहि कंचनकी ॥ देशी फेंकनी ॥ ऐसी



क्या जाना कहूँ उनकी, कहेता नहीं सगला पर।।  
 ऐसे अनंत बख्ते भणी, सो करनहार किरता ॥ ४ ॥  
 सब द्दर, सब नमते हे उनकु रे ॥ सब० ॥ तीनो० ॥ १ ॥  
 सोधर्मा इदरने, बोलबाये कुबेरकु रे ॥ बोल० ॥ निर्भनीय  
 धन ले जावो, सिखारथ घरकुं रे ॥ धन खाष खाव करे  
 जर दिये उनके घरकु रे ॥ जर० ॥ सिखारथ राजा कि  
 विषारते दिखकु ॥ ए सयी पुन उनके, कहेते हे प्रि  
 साकु रे ॥ कहे० ॥ जे जे हुषा मंगलदीपक, अपने रे  
 लकु ॥ देशी फेंकनी ॥ बहुत बभारा देख कर, छोट प्र  
 दिख राजाका ॥ वर्द्धमान कुबेरका नाम लीया, न  
 पार पराक्रमका ॥ आन द्दरे द्दरे राजा, सब नमते  
 उनकु रे ॥ सब० ॥ तीनो० ॥ २ ॥ पांच घरसके हुं  
 वर्द्धमान कुबरे रे ॥ घर० ॥ रमत रमते आये, सजा  
 अंदरे ॥ सबक दिखकु, नदन सगले प्यारे रे ॥ नद०  
 जखनेके खातर अम, मुकनां निशाखे ॥ घरघोसा कीर  
 तैयार, गज बोडे शणगारे रे ॥ गज० ॥ नंदनकु बठ  
 य, ह्य ह्स्तीके अपरे ॥ देशी फेंकनी ॥ बाजित्र बहो  
 बाज रखा, मीकखता सुरतान ॥ लीखे पीखे नि  
 पंवरंगी ऊहां उडे बहुत निशाम ॥ जय रे

जगवान, कोन जणावते उनकुं रे ॥ कोन० ॥ तीनो०  
 ॥ ३ ॥ सत्री बालक ले कर संग, नंदन चले रमनेकुं  
 रे ॥ नंदन० ॥ इंद्रकी सजामे, वरणावते उनकुं ॥  
 एक देव उठा उहांसे, आया फिर पृथ्वीकुं रे  
 ॥ आया० ॥ वना चोरींग बन कर, लपटाया  
 वृद्धकुं ॥ बालक लगे बिहिने, लगे पोकार करनेकुं  
 रे ॥ लगे० ॥ वर्द्धमान कुंवरे, फिर फेंक दिया उनकुं ॥  
 देशी फेंकनी ॥ ऊहांसे बालक बन गया, लगा उ  
 समे रमने ॥ आप हाथसें दाव लया सो, कोइ नहीं  
 जाने ॥ रमत रमते, क्या विचारते दिलकुं रे० क्या०  
 ॥ तीनो० ॥ ४ ॥ फिर उसी देवनें, बेठाये खंदा परें  
 रे ॥ बेठा० ॥ लंबी कीधी काय रूप कियोज विकरावे  
 ॥ बालक लगे बिहिने, करते सब पोकारे रे ॥ कर०  
 अपने नंदनकुं ले चले गगन परें ॥ फिर अर्वाधि ठोरु  
 करने, देखा दिल अंदरें रे ॥ देखा ० ॥ एह देवनकी  
 जात, मूकी ऊठाई लन परें ॥ फिर कीया मूकीका प्र-  
 हार, देव गये समाकरे रे ॥ देव० ॥ ए उनका बल  
 देख कर, नाम लीयाज महावीरे ॥ देशी फेंकनी ॥  
 ऐसा बल देख कर, देव गये इंद्रासनकुं ॥ महावीसर नाम

खिया सो, कहेते इंदरकु ॥ ए धहोत कहे विस्तार, म  
 क्या कहु तुमकु रे ॥ में क्या० ॥ तीनो० ॥ ५ ॥ ६९ ॥  
 ॥ अथ श्रीमहावीरस्वामीनी छावणी सित्तरेमी ॥

॥ उत्तम जीव जय उदर आये वृद्धे सपना उनक  
 माताकु ॥ तेजवंत नहीं बुष कर रहेता, मास्रम पकत  
 हे सबकु ॥ चौबीशी तो हो गइ यारो, जिनशासन  
 जिनका बसता ॥ कोन पुरुषोंकु याद करु मेरे, हरे  
 रुवेमें रम रहेता ॥ देवानदो ब्राह्मणके घर, प्रथम ग  
 र्भ उनने लीयोथा ॥ महा सुखमें बेटे इंदर आसन  
 उनका कपाथा ॥ फिर हुइ इंदर राजाकु, विचार  
 दिलमें करताथा अबभ ठोरु कर देखा इदने सब  
 उनकु मास्रम पकताथा ॥ देशी फेंकनी ॥ देखा तीर्थ  
 कर ब्राह्मण घरक, फिर हुइ इंदर राजाकुं ॥ धो  
 लावे हरणगमी देखताकु, खे जावो गरज त्रिशखा घरकु ।  
 अशुज निद्रा ढाखी, गरज हर खे बसे उनके घरकु ।  
 तेजवंत नहीं बुष कर रहेता, मास्रम पकता हे सबकु  
 ॥ २ ॥ गरज बदख कर बसे हरणगमी आय बेटे  
 फिर आसनकु ॥ अउद सुपन फिरमातकु देखे, जूदे  
 जूदे कहेते तुमकु ॥ पहेखे सुपनगजवर देखा, रिपज

सेंह कहेता तुमकुं ॥ चौथे लठमी माता आई, पां-  
 चमे पुष्पकी मालाकुं ॥ ठठे चंद्रमा सातमे सूरज,  
 आठमे देखी धजाकुं ॥ नवमे कलश अमीय जरेला,  
 पदम सरोवर कहे तुमकुं ॥ देशी फेंकनी ॥ अगीया-  
 रमे खीरसागर देखा, वारमे त्रिमान तुम कर द्यो  
 लेखा ॥ तेरमे रतनकी करो परिक्षा, चउदमे अग्नि-  
 शिखाकु देखा ॥ सुपन देख कर राणी जागी, कहेने  
 लागी स्वामीकुं ॥ तेजवंत नहीं तुप कर रहेता, भा-  
 लम परता हे सबकुं ॥ २ ॥ बनी फजर हुइ ऊठ सि-  
 ङ्कारथ, पूठे सुपन पाठककुं ॥ ग्यान ध्यानसें वोढ्या  
 पाठक, उत्तम जीव आया उदरकुं ॥ तीन जुवनके  
 नाथ चक्री, होवेगा कहेता तुमकुं ॥ पूरण मासें जनम  
 लियाथो, सिद्धारथ राजा घरकुं ॥ ओच्छव मोच्छव  
 कारण इंद्र, ले गये फिर मेरुकुं ॥ ठोटी काया देखी  
 उनोकी, संशय उपना इंद्रकुं ॥ देशी फेंकनी ॥ तीन  
 ज्ञान उदरसें आये, पगके अंगूठे मेरु रुगाये ॥ फिर  
 तीर्थकरकुं नवराये, पीठें सिद्धारथ घरकुं लाये ॥ सात  
 हाथकी काया उंची, उत्तराफाट्गुण नखेतरकुं ॥ ते-  
 जवंत नहीं नपकर गनेने मालथ परता हे मरकुं ॥

लिया सो, कहेंते इंदरकु ॥ ए बहोत कहे विस्तार, में  
 क्या कहु तुमकु रे ॥ में क्या० ॥ तीनो० ॥ ५ ॥ ६ए ॥  
 ॥ अथ श्रीमहावीरस्वामीनी छावणी सित्तरेमी ॥

॥ उत्तम जीव जय उदर आये हुवे सपना उनकी  
 माताकु ॥ तेजवत नहीं तुम कर रहेता, मासम पकता  
 हे सबकु ॥ चौबीशी तो हो गइ यारो, जिनशासन  
 जिनका चसता ॥ कोन पुरुषोंकु याद करु मेरे, रुव  
 रुवेमें रम रहेता ॥ देवानंदो ब्राह्मणके घर, प्रथम ग  
 र्भ उनने लीयोथा ॥ महा सुखमें बैठे इंदर आसन  
 उनका कपाथा ॥ फिकर हुइ इंदर राजाकु, विचार  
 दिखमें करताथा अवध ठोरु कर देखा इइने सब,  
 उनकु मासम पकताथा ॥ देशी फेंकनी ॥ देखा तीर्थ  
 कर ब्राह्मण घरक, फिकर हुइ इंदर राजाकु ॥ षो  
 छावे हरणगमी देवताकुं, से जाओ गर्ज त्रिशखा घरकु ॥  
 अशुज निजा ढाखी, गरज हर से चखे उनके घरकु ॥  
 तेजवत नहीं तुम कर रहेता, मासम पकता हे सबकुं  
 ॥ १ ॥ गरज बदल कर चखे हरणगमी, आय बैठे  
 फिर आसनकुं ॥ अउद सुपन फिरमातकु देखे, जुदे  
 जुदे कहेंसे तुमकु ॥ पहेसे सुपनगजवर देखा, रिपज

णिकू ठोम खरीद क्युं, करता पथरुंकी ॥ देशी फें-  
 कमी ॥ चैनो चेतो मेरे यार, रखो जिनजीसैं प्यार,  
 हो जाओ गानोसैं तैयार, सुख अनंत अनंत पावोगे ॥  
 करो दयाधर्म वेपार, लान हो जावे अपार, जीनसैं  
 होवेगा उद्धार, ऐसे नवसागर तरोगे ॥ ऐसी वातां  
 ही राखो हिरदे, खोन्नदो वजर कपाट तांजा ॥ पण  
 अष्ट करम चक्रचूर करत कोइ, चेतननी रे आला ॥  
 चाइ कन्नकी खबर नहीं कीसी घनीमें, क्या होने-  
 आला ॥ १ ॥ चाइ धरम करो कुउ ध्यान, वातां जै-  
 गोकी जीणी ॥ पर दश बोलें संसार, पावे ओई सु-  
 कृतकी करणी ॥ चाइ उंच खेत्र उंच धर्म दूध ओर,  
 पुत्र मिले प्राणी ॥ पण पांचइंद्रियकु वश करे, सद्गुरु  
 मीले ज्ञानी ॥ देशी फेंकनी ॥ जाणपणा हे अजब चीज,  
 है जिनोके बीच, उर सब हे कीच, समजे कोइ सुरता ॥  
 उ सच्ची बात मानो, मारग शुद्ध पीठानो, समकित-  
 धारी होवेगो साणो, एही प्रगट वात कहेता ॥ अब  
 आगे सुण जाओ रे, अब आगे सुण जाउ वात मर-  
 मकी ॥ मरमकी समजे कोइ बिरला रे ॥ पण जिनकुं  
 पाया हेज्ञान, उही नर जपता हे माला ॥ चाइ कलप

॥ ३ ॥ सोवनवरणी काया जिनकी, जघपर सिंहका  
 जंठना ॥ महा पराक्रम अनंत वलवत छोड़ी दूषका  
 हे वरणा ॥ मागशर सुदि दशमीके दिने, संजम खिया  
 महोधीरने ॥ धार धरस क्षर्गे मौन रहे फिर, करम  
 उज्जमा दीया जगत्राने ॥ वैशाख शुदि दशमीके दिने, ज  
 याया केशवज्ञाने ॥ उस दिन देशना खाली गई जय,  
 फोड़ न खियेवत पठन्नख्खाणो ॥ देशी फेंकनी ॥ अगि  
 यार गणधर संग जिनुके, बठद हजार साधु हे उनके ॥  
 वशीश हजार साधवी सब मिलके, साचे दाखसे हे  
 सिद्धांतके ॥ कवि गिरिधर साख है सूरतके ॥ दुई सदगु  
 रुकी मेहेर सदा में, याद करु उन पुरुपोकु ॥ तेजवत  
 नहीं बुपकर रहेते, माखम परुता हे सबकु ॥४॥ ७०॥

॥ अथ ससार उपर छावणी एकोतेरमी ॥

॥ जाइ कलकी खघर नहीं कीसी, घनीमें क्या  
 होनेवाला ॥ पण चेत चेत मन चेतन प्यारे, अथ अ  
 धसर मिलना ॥ ए आंगणी ॥ जाई चेत शके तो चेत,  
 मूठी जर से हीन्की ॥ पण रतन चिंतामण हाथ  
 आयाहे, कर जतना ऊनकी ॥ जाइ जान होत ऋषु  
 अजाण होना, ए धाम किनकी ॥ पण स्फटिक म

णिकू ठोरु खरीद क्युं, करता पथरुंकी ॥ देशी फें-  
 कसी ॥ चेतो चेतो मेरे थार, रखो जिनजीसें प्यार,  
 हो जाओ गानोसें तैयार, सुख अनंत अनंत पावोगे ॥  
 करो दयावर्म वेपार, दान हो जावे अपार, जीनसें  
 होवेगा उद्धार, ऐसे जवसागर तरोगे ॥ ऐसी वातां  
 ही राखो हिरदे, खोजदो वजर कपाट तांजा ॥ पण  
 अष्ट करम चकचूर करत कोइ, चेतननी रे आला ॥  
 जाइ कलकी खबर नहीं कीसी घनीमें, क्या होने-  
 वाला ॥ १ ॥ जाइ धरम को कुड ध्यान, वातां जै-  
 निकी जीणी ॥ पर दश बोलें संसार, पावे ओई सु-  
 कृतकी करणी ॥ जाइ उंच खेत्र उंच धर्म दूध ओर,  
 पुत्र मिले प्राणी ॥ पण पांचइंद्रियकु वश करे, सद्गुरु  
 मीले ज्ञानी ॥ देशी फेंकनी ॥ जाणपणा हे अजब चीज,  
 है जिनोके बीच, उंर सब हे कीच, समजे कोइ सुरता ॥  
 उं सच्ची बात मानो, मारग शुद्ध पीठानो, समकित-  
 धारी होवेगो साणो, एही प्रगट वात कहेता ॥ अब  
 आगे सुण जाओ रे, अब आगे सुण जाउं वात मर-  
 मकी ॥ मरमकी समजे कोइ बिरला रे ॥ पण जिनकुं  
 पाया हेज्ञान, उंही नर जपता हे माला ॥ जाइ कल०



॥ १ ॥ एक पत्नी परदेशी फिरता, अटवीके म्यान ॥  
 पण दूरसें एक हस्ती देखा, बरजाज मस्ताने ॥ जब  
 धोक लगी दिखकु रे, ठही नर लखाज जागनने ॥  
 पण जरी श्वास निःश्वास दोरता, गीराज कूपमाने ॥  
 देशी फेंकनी ॥ देखो केली गति हुइ, मूखी बरुकी हाथ  
 आइ, अदर छटकता हे जाइ, ओ नीचे देखे ॥ अदर  
 धार हे जुजग, ए तो घडे बरुजग, देखेसे होयेगा डग,  
 गीरेगा उनके मुखने ॥ ओ करे अदिसा दीक्षने, अकथ  
 गइ हुवा रे घेजा, पण किस तरेसें निकसु वहार, मेरा  
 कोन करे रखवाला ॥ जाई कल ॥ ३ ॥ उपर मधु  
 पूडेका घर, मांखीया लगी हे चटकाने ॥ पण धनी  
 आपदा आइ ठसें, फिर होती वेदाने ॥ उहांसें मभका  
 टीपा गीरा, आया जाइके मुख म्याने ॥ पण सासच  
 चुरी घला, ने अते खोप्रेगा जाने ॥ देशी फेंकनी ॥  
 सुर विद्याधर आवे, दु ख उनका जावे, फार के कहावे,  
 तु अल मेरा संग ॥ तुजे घाहार नीकाखे, तुजे विमान  
 घेठावे, तुजे देवलोककु खे जावे, तु असे मेरी संग ॥  
 ऐसा दोख उस मूखापर उदर एक फाखा एक धोखा,  
 ए दोने लगे कातरने गपलता, मत रहेनां लाखा ॥

चाई० ॥ ४ ॥ ऐसा सुखी सकल संसार, तुम अम  
 दोनुं हे चाइ ॥ पण पिंडेसें चरम देख लो, करना च-  
 तुराइ ॥ चाइ चवरूपी आ कुवा, आउखा रूपी वरु-  
 वाइ ॥ पण रात दिन दो उंदर समजो, सुरता नर  
 कोइ ॥ देशी फेंकनी ॥ कौनरूपी होथी, मधपूना कु-  
 टुव सेंहु साथी, जीव होवेगा पंथी, अटवी संसार  
 जाणो ॥ गुरु विद्याधर कहेना, उपदेश वारंवार लेनां,  
 आपना कानुंसे सुननां, एही प्रगट वात कहेतो,  
 धन धन आगम अरिहंता ॥ तुमारी ज्ञानकी  
 लीला, पण पीयो प्रेम रस प्याला, अनुभव जागे  
 रे लाला ॥ चाइ० ॥ ५ ॥ ॥ ७१ ॥

॥ सिद्धगिरिनी लावणी बहोतेरमी ॥

॥ सिद्धगिरि सिद्धगिरी रे सिद्धगिरी ॥ सिद्धगि-  
 रिने अमरापुरी, नहीं अधुरी, सुन ज्ञानी ॥ सूरजकुं-  
 कोका निर्मल पानी जी ॥ आदिनाथ रे आदिनाथ, रे  
 आदिनाथ ॥ आदिनाथ, अजित प्रभु साथ, संभव  
 अजिनंदन मेवा ॥ तुम हो देवनके देवा जी ॥ सु-  
 मति० ॥ सुमति रे सुमति रे सुमति ॥ सुमति, आ-  
 पदा मिट, निर्मल हृद् गति आप मेवा ॥ चवो-  
 चव

॥ ३ ॥ एक पथी परदेशी फिरता, अटवीके म्यान ॥  
 पण दूरसें एक हस्ती देखा, वनाज मस्ताने ॥ जब  
 धोक लगी दिखकु रे, ठही नर लगाज जागनने ॥  
 पण नरी श्वास निःश्वास दोरता, गीराज कूपमाने ॥  
 देशी फेंकनी ॥ देखो केसी गति हुई, मूखी वरुकी हाथ  
 आइ, अदर छटकता हे जाइ, श्यो नीचे देखे ॥ अदर  
 चार हे जुजग, ए तो बडे वरुजग, देखेसे होयेगा डग,  
 गीरेगा उनके मुखने ॥ श्यो करे अदेसा दीक्षने, अकस  
 गइ हुवा रे घेखा, पण किस तरेसें निकसु वहार, मेरा  
 कोन करे रखवाला ॥ जाई कस ॥ ३ ॥ ठपर मधु  
 पूढेका घर, मांखीया लगी हे चटकाने ॥ पण वनी  
 आपदा आइ ठसें, फिर होती वेदाने ॥ ठहांसें मधका  
 टीपा गीरा, आया जाइके मुख म्याने ॥ पण सासच  
 घुरी घला, ने अर्ते खोवेगा जाने ॥ देशी फेंकनी ॥  
 सुर विषापर आवे, दु ख उनका जावे, फार के कहावे,  
 तु चख मेरा संग ॥ तुजे याहार नीकासे, तुजे विमान  
 वेठावे, तुजे देवलोकाकु खे जावे, तु चखे मेरी संग ॥  
 ऐसा घोख उस मूलापर उंदर एक फाखा एक भोखा,  
 ए दोने लगे कातरने गपलता, मत रहेना खाखा ॥

कोज आज ञकनका सारा जी ॥ गुणवंता० ॥ देशी  
 फेंकनी ॥ अरनाथ जं दुं दिन रात, महाराज जी ॥  
 महि जिन मुनिसुश्रत, महाराजजी ॥ मुगति रे मुगति  
 रे मुगति ॥ मुगति सुन जुगति, करुं जगति, नमि-  
 नाथकी नेमजी गिरनार निशि आनी ॥ सूरण॥ सिद्ध०  
 ॥ ३ ॥ ए वीश रे ए वीश रे ए वीश ॥ ए वीश, नमि  
 जिन ईश; नमावुं शीश; समेतशिखर मुगतें गया ॥  
 वासुपूज्य चंपापुरी थया जी ॥ नेमिनाथ नेमिनाथ  
 रे नेमिनाथ रे नेमिनाथ ॥ नेमिनाथ, पारस प्रजु  
 नाथ, जोमी वे हाथ, महावीरस्वामी पात्रोपुरी गया,  
 वासुपूज्य चंपापुरी थया जी ॥ नेमिनाथ० ॥ देशी  
 फेंकनी ॥ चोवीश जिन मनोवांठित फल, दातारे  
 महाराज जी ॥ सेवकने ऊतारो, जवपार रे म-  
 हाराज जी ॥ सुन ठंद रे सुन ठंद रे सुन ठंद ॥  
 सुन ठंद, हरफ करी वंध, तुट गया फंद, ऊनोसें  
 सफल जिंदगानी ॥ सूरजकुंमोका निर्मल पानी  
 जी ॥ सिद्धगिरि० ॥ ४ ॥ ॥ ७२ ॥

॥ अथ श्रीउपदेशनी लावणी त्रहोतेरमी ॥

॥ साखी ॥ जव दव दहन निवारवा, जलद

करू तारी सेवा जी ॥ सुमति० ॥ देशी फेंकनी ॥ दा  
 नधी दुख मिट गया, होत सुख पाया, जात  
 जात्रा गया, पाप गुमाया ॥ दिखसँ रे दिखसँ रे ।  
 ससँ, दिखसँ शुद्ध जकिसँ, चोखे मनसँ, ठोक  
 कमटकी धानी ॥ सुरजकुमोका निर्मल पानी जी  
 सिद्धगि० ॥ १ ॥ ठठा रे ठठा रे ठठा , ठठा पदमप्र  
 स्वामी, कहु शिर नामी, जी अंतरजामी, करू पूजा  
 तरण तारणमें तुंही पूजा जी ॥ ठठा० ॥ सुपास रे  
 पास रे सुपास ॥ सुपास रे, पुरो मन आश, जवो ब  
 दास, धजांठ धाजा ॥ हाथमें चड प्रज राजा जी  
 सुपास० ॥ देशी फेंकनी ॥ सुविधि जिन नवमा,  
 धमा महाराज जी ॥ शीतल जिन दशमा, कहु  
 शमा महाराज जी ॥ प्रथम रे प्रथम रे प्रथम, प्रथ  
 तखाटी गया, धदना कीयो, नाम तो लिया, ठनो  
 सफल जिंदगानी ॥ सुरज० ॥ सिद्ध० ॥ २ ॥ श्रेया  
 रे श्रेयांस रे श्रेयांस ॥ श्रेयांस ओर वासुपूज्य,  
 मल अन्नत नाथ प्यारा ॥ गुण में गाठ आज तोरा  
 ॥ गुणधता, गुणधता रे गुणधता गुणधता ॥ गुणध  
 धर्मनाथजी, शांति नाथजी, कुश्रनाथजी मोहनगार

चार दिनोकी देख चांदनी, ताहीमें लोचाना हे ॥ चेत०  
 ॥ १ ॥ पूरव चक्रके पुण्य संयोगसें, नरकी देही पाना  
 हे ॥ नव महिना तुं रह्यो उदरमें, दुःख देख्या अस-  
 माना हे ॥ चेत० ॥ ३ ॥ मल मूत्रकी अशुद्ध कोथली.  
 ते मांहे संकट चीना हे ॥ रुधिर सुकाया आहारज  
 कीना, प्रथमपणे तो लीना हे ॥ चेत० ॥ ४ ॥ जनम  
 समय तो कोरि गुणैरी, वेदन ते देखाणा हे ॥ अथ  
 तो झूल गयो तुं प्राणी, एसा मूढ अजाना हे ॥ चेत०  
 ॥ ५ ॥ ऊंठ कोरु ते सुश्या सरखी, नाति कर चोवा-  
 णा हे ॥ तेशी वेदन अनंत गुणैरी, ऊंधे मुख फुलाणा  
 हे ॥ चेत० ॥ ६ ॥ बालपणो तें खेलें गमायो, यौवनमें  
 गरवाणा हे ॥ आठ पहोर कीनी मद मस्ती, खोटी  
 लगन लगाना हे ॥ चेत० ॥ ७ ॥ रंगी चंगी देही राखे,  
 टहेमी चाल चलाना हे ॥ आठ पहोर कीयो घरबंधो,  
 लग रह्या आरतध्याना हे ॥ चेत० ॥ ८ ॥ साधु संत-  
 की सुनी नहीं वानी, दान सुपात्र न दीना हे ॥ तप  
 जप करणी कठुअ न कीनी, नरचक्र सफल न कीना  
 हे ॥ चेत० ॥ ९ ॥ मात पिता सुता वेन जानेजी,  
 णा हे ॥ तुं नहीं इशका ए नहीं तेरा,

घटा सम जेह ॥ जिनपूजा जुगते करी, त्रिविध  
 कीजे तेह ॥ १ ॥ पूजा कुगति अरगला, पुण्य सरोवर  
 पास ॥ शिवगतिनी सादेखनी, आपे मगलमास  
 ॥ २ ॥ शुभ नैवेद्य शुभ जावशु, जिन आगे धरे जेह ॥  
 सुर नर शिवपद सुख छहे, हृषीय पुरुष परे तेह ॥ ३ ॥  
 सांजी सो हृषीय पुरुष परे तेह ॥ ३ ॥ घन ॥ अजि  
 तजिन उपमा जारी, पुठे नहीं ठे परवारी ॥ संजव मन  
 सेधिये साता, अजिनंदन जुगमे आता ॥ १ ॥ सुमति  
 जिन संत हे जारी, पदमजी पहोता निखाणी ॥ हां  
 रे जिनराज तेरा सखा, तेरे धन सखी काम कखा ॥ २ ॥  
 प्रज जिन तुही तुही ॥ अरिहंत हत जगवत वत  
 अछता घट घटमे खेखता परमातमा जी ॥ ३ ॥ इति ॥ ७३ ॥

॥ अथ उपदेशनी लावणी चम्मोतेरमी ॥

॥ चेत चतुर नर कहत सद्गुरु, किसि विधसें छस  
 आना हे ॥ तन धन यौवन सयस कुटुवा, एक दिवस  
 तुज जाना हे ॥ ५ ॥ आकणी ॥ मोह मायाकी वरु  
 जासमे, जिसम तु छसजाणा हे ॥ कास आदेनी चोट  
 आकरी, साक रखा नीसाना हे ॥ चेत ॥ १ ॥ चिहु ग  
 तिमे तो जटकत जटकत, तोहि अत न आना हे ॥

॥ अथ विनतिरूप लावणी पंचोत्तरमी ॥

॥ तुमें निरंजन नाथ महारा, अरज करुं सो मा-  
नीये ॥ तुमें ॥ ए आंकणी ॥ में कायर कंगाल कुसंग  
दया दुबलकी आणी ए ॥ तुमें ॥ तुम जक्तिमां सुर-  
ति अण बनती, दुःखनर तन मेरो जोणीये ॥  
॥ तुमें ॥ कहे जिनदास एही जगतमे, निर्यथ-  
मत ताणीये ॥ तुमें ॥ १ ॥ ७५ ॥

॥ अथ श्रीकुंथुनाथनी लावणी गौत्तरमी ॥

॥ श्रीकुंथुनाथ करम काट, सुक्ति मोज पाया  
॥ करुणा कर सब जीवनकी, करणी करण धाया ॥  
अव दुर्गतिको खोज खोयो, बांध बीज पाया ॥ श्री ०  
१ ॥ ॥ सुरपति हाथ हजूर, चरणे चित्त लाया ॥ अव  
जक्तिजाव हश्ये वसाया, जिनवर जस गाया  
॥ श्री ॥ २ ॥ जवि जव जनम कियो सफल लीयो,  
लाज माया ॥ अव नरक दुःखसें फर कर, जिनदास  
शरण आया ॥ श्री ० ॥ ३ ॥ ७६ ॥

॥ अथ श्रीनेमिनाथनी लावणी सत्योत्तरमी ॥

॥ चोक पहेलो ॥

॥ श्रीनेमि निरंजन बाह्यपणे ब्रह्मचारी ॥ प्रभु



स्वारथ खर्गे आधीना हे ॥ चेत० ॥ १० ॥ वृत्त अकृत  
 कर धनकु मेह्या, घणासू वेर घंधाना हे ॥ माया तो  
 कतु खार न चाखे, जहांकी जहां रहानां हे ॥ चेत  
 ॥ ११ ॥ ऊचा ऊचा मंदिर घणाया, कीया घणा का  
 रखाना हे ॥ घनी एक नहीं रोखत घरमें, जाखत जाः  
 मसाना हे ॥ चेत० ॥ १२ ॥ ठिन ठिनमांहे आः  
 ठीजे, अजखी केसा जरना हे ॥ फोरु जनत कर पह  
 जीवका, तोपण आखर मरनां हे ॥ चेत० ॥ १३ ॥ चक्री  
 केषख मरुखिक राजा, इद चद सूर दाना हे ॥ काख  
 आहेकी हे सरख जगतको, तो क्यु घरे गुमाना हे ॥  
 चेत ० ॥ १४ क्रोध मान माया मदमातो, पारकी पीर  
 न जाना हे ॥ आशा तृष्णा चरुत चठगनी, करसा  
 जन्म मराना हे ॥ चेत ० ५ यौवन गमाया मुढो होइ  
 पेठो, तोही समज न खीना हे ॥ धर्मरस कर्तुं हाथ न  
 खीनो, परजधमें पठतानो हे ॥ चेत० ॥ १६ ॥ सुखा  
 नंदजी सुखके दाता, हीरानंदगुन ठाना हे ॥ रामकृष्ण  
 उपदेश सुनाया, जव्य जीव समजाना हे ॥ चेत० ॥  
 १७ ॥ संवत अडार वरस सरुसठे, सादकी सहेर  
 सुहाना हे ॥ फागुण सुदी तेरशके ।दवसें ए उपदेश  
 सुनाना हे ॥ चेत० ॥ १७ ॥ ॥ ४४ ॥

॥ श्रीनेमनाथजीनी लावणी अठथोतेरमी ॥

॥ चोक बीजो ॥

॥ गुणवंता श्री जिनराय, सत्तामें आवे ॥ प्रणाम  
 करी हरि हेत, धरी बोलावे ॥ मनमोहन प्राण आधार  
 दरशन मुऊ दीजे ॥ हो बंधव आपण बलनी, परीक्षा  
 कीजे ॥ तुमे वालो अमचो हाथ, वदे गोपाला ॥ प्रभु  
 हरिनो वाळे हाथ, कलम ज्युं नाला ॥ श्रीनेम तणुं  
 बल देखी, अचरिज पावे ॥ प्र० ॥ १ ॥ प्रभु लं-  
 वावे निज हाथ, सकल गुणखाणी ॥ तिहां करे खरा-  
 खर जोर, ते सारंगपाणी ॥ न नमे तिलमात्र लगार,  
 टिकायो जारी ॥ जाणे हिंमोळे हिंचतो, होय गिर-  
 धारी ॥ देखी बल अद्भुत तेज, चमक्यो आवे ॥ प्र०  
 ॥ २ ॥ हरि बोळे मधुरी वाणी, जय मन आणी ॥  
 जागे हलधरने एम, नेम बल जाणी ॥ हो बांधव म-  
 हारा नेम, सकति अति महोटी ॥ में दीठी नजर हजूर,  
 वात नही खोटी ॥ ए राज तणां ते काज, में बला क-  
 हावे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ ए महाबलियो बलवंत, ठे  
 वाळे वेशे ॥ मुऊ राज उलाळी एक, पलकमें वेशे ॥  
 एम करतो मन आलोच मइनो दाणी ॥ इण अव-

मुख पूनमको चद, अतुल्य धनुषधारी ॥ ए आंकणी ॥  
 खिये वरावरीके मित्र, अति सुरसाखा ॥ रसरंगे आवे  
 जट्टपति, आयुधशाला ॥ कहे मित्र सुणो प्रजु ए ठे,  
 शंख उदारा ॥ नहीं । गरधर पार्वे रंर, धजावनदारा  
 ॥ करकमलें खेकर शख, धजायो जारी ॥ प्रजु० ।  
 ॥ १ ॥ सुणी शखशब्दकी धुनी, अति विकराखा ।  
 खलजखिया शेष ने फणी, सप्त पाताखा ॥ चित्त चम  
 का मनमें जघन, पतिका ईश ॥ भरहर धरक्यां त्यां व्य  
 तर, पति धत्रीश ॥ मूकी निज ठामने, नासंती सुग्नारी  
 ॥ प्रजु० ॥ सागर गङ्गा गिरिधर ने, कुंगर कोठ्या  
 महोटा ॥ श्रीकी बधने नाठा, गज रथ घोना ॥ उ  
 वखियां सायर नीर, चढ्यां कक्षोखे ॥ जांगी तरुवरनी  
 काख थयो, कमकोखे ॥ शुटा धर मोतीहार, ऊबूकी  
 नारी ॥ प्रजु० ॥ ३ ॥ शशी सुरज तारा, वैमानिकना  
 स्वामी ॥ सहु धरे प्रशसा अहो, प्रजु अंशरजोमी ॥  
 प्रजु चक्र फेरकी, किधो धनुष टंकारे ॥ गिरधरनी  
 गदा खेइ करमां, नेम फेरे जकारे ॥ कहे माणक  
 मुनिवर । चता, जइ मुरारी ॥ प्रजु० ॥ ४ ॥ ॥ ७७ ॥

द्रविजयने कृष्णजी एम कहेतां, सहु करे विवाहनी  
 वात आमण नथी लेता ॥ कहे माणक प्रभुनेप  
 दमणी परणावे ॥ कहे ॥ ४ ॥ ॥ ७ए ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजीनी लावणी एंशीमी ॥

॥ चोक चौथो ॥

॥ मह्यो जादव केरो वृंद ठपन कुल कोडे, प्रभु  
 करी सणगार ने नेम चड्या वरघोडे ॥ ए आंकणी ॥  
 तियां जेरी नफेरीं पंच शब्द वज्रगावे, मली वाला  
 कोकिल कंठ मंगल गावे ॥ कोइ हाथी घोडे बेठा रथ  
 सुखपालें, पायक अरुतालीश करोड, ते आगल चा-  
 ले ॥ मह्या दशे दसार हलधर, हरिजी जोडे ॥ प्रभु क-  
 रि शणगार ने नेम चड्या वरघोडे ॥ प्रभु ॥ १ ॥  
 वाजे तंवाळु जरी फरके नीशान, बहु साजन महाजन  
 जोर चलावे जान ॥ एम करतां प्रभुजी उग्रसेन घेर  
 आवे, देखी मुख नाथनुं, राजुल मन सुख पावे ॥ तव  
 करते पशुअ पोकार लाखो करोडे ॥ प्रभु ॥ २ ॥ ठोकी-  
 ने पशुनो वृंद रथनो वाले, घर आवी प्रभुजी दान संव-  
 त्सरी आवे ॥ सुणी वातने राजुल मूर्च्छा धरणी ढलती,  
 हे नाथ शुं कीधुं कोनी विलापी करती ॥ लइ संयम

सर वासे देव गगनमें घाणी ॥ कहे माणक प्रजु सं  
यम क्षेशे जावे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ ॥ ७७ ॥

॥ श्रीनेमनाथजीनी छावणी जंगणाएंशीमी ॥

॥ चोक व्रीजो ॥

॥ हररूपोहरि निज चित्त सज्जोमा थावे, कहे रुक  
मणी ने नेम विवाह मनासे ॥ ए आंकणी ॥ अति सुदर  
वाखा जरजोशन मदमाती, दीपे ससिषयणी सहस य  
श्रीश सोदाती ॥ जिनजीनो जाखी हाथ हरिजीखावे,  
निज मंदिर अंतरेरमें थावे ॥ दोखे पटराणी आठ देवर,  
ने जावे ॥ कहे० ॥ १ ॥ कोइ ठांटे अथिर गुळाळ केसरना  
पाणी, कोइ वासे गळामां हार, पुष्पना थाणी ॥ राधा  
ने रुक्मिणी दोखे मधुरी घाणी, हो देवर महारा पर  
णीजे एक नारी ॥ तुज जादबकुळ सणगार समान सो  
हावे ॥ कहे० ॥ २ ॥ मुख मचकोनीने प्रजुनो पाखव  
जाखे, सामखिया सुदरी एक विना किम चाखे ॥ बहु  
मखी वृष्णनी नार वरणधी कहेसी, न करोजी वाखक  
बुद्ध, ठंळंजा देसी ॥ धनितानां सुणी वचन मुख मख  
काये ॥ कहे० ॥ ३ ॥ थाळा सह्यु घोखी मुख मखकतु  
जाणी, मान्योजी मान्यो नेम परणशे राणी ॥ ध्रीसमु

जोगी, बड़े जोर तपस्या करता करता ॥  
 ॥ नीचे लगाता ज्वाला जोगी, बड़े बड़े जाँके  
 खोता ॥ चार बरसकी उमर जिनजीकी, ठोटेपनमें  
 बहोत कला ॥ बरोबरीके लीये सोवती, तपसीकुं देखन  
 चढ्या ॥ ४ ॥ ज्ञान देखके बोले जोगीसें, ऐसी तपस्या  
 क्युं करता ॥ उँ जोगी तेरे बड़े लकडेमें, नाग नागिणी  
 दो जलता ॥ पोरसनाथ जोगीकुं कहेता, तोवी तपसी नहीं  
 सुनतो ॥ लकडे दीये फेंक जंगलमें, लोक तमोसा देखंता  
 ॥ ५ ॥ क्या कीया वे जोगी तुमने, नागनागणी जन्ना  
 दीया ॥ शरन नवकारा दीया नागकुं, धरणेंद्रकी पदवी  
 पोया ॥ बनी उमेदसें आया साहेब, मंवत्सरीका दान दी-  
 या ॥ मात पिताकी आज्ञा लेकर, महाराजाने योग लीया  
 ॥ ६ ॥ राज ठोरुके चले जंगलमें, जुगतीसें काउस्सग्ग  
 कीया ॥ बड़े धीर गंजीर तुमने, तीन लोकमें नाम  
 कीयो ॥ ऊण्णकालकी बनी धूपमे, निरंजन निराकार  
 खडा ॥ कमठासुरने किया कफाका नन्नमंडल वादल  
 चन्ना ॥ ७ ॥ सोहि दिनकों कमठासुरने, पीठला दोवा  
 जगवाया ॥ मेघमालीकी सेना लेकर, जलकूं जलदी  
 बुलवाया ॥ बरुा किया घमघोर जोरसें, पवन चलाया

दपती करम कठिनने तोडे ॥ प्रजु० ॥ ३ ॥ अथ उपरं  
 केवलज्ञान मुगतिमां जावे, प्रजु सिद्ध बुद्ध अजरामा  
 पदवी पावे ॥ गुरु रूप कीरति गुण गाते रग सवाया ।  
 मेसाणे रही घौमास, श्रीजिनगुण गाया ॥ मुनि मोणक  
 छावणी गावे मनने कोडे ॥ प्रजु० ॥ ४ ॥ ०० ॥

॥अथ श्रीपाश्वनाथजीनी छावणी एक्याशीमी॥

॥ अगुरुवम् अगुरुवम् वाजे घोघना, सवाइ रुका  
 साहेवका ॥ ठनन ठननं अवाज होता, महेस यनाया  
 गगनोंका ॥ श्री कल्याण पारसनाथ नामका नित वा  
 जत हे घोघना ॥ तीन लोकमें चखा साहेव, पारस  
 नाथ अवतार वना ॥ १॥ घणारसि नगरीमें तेरा जनम  
 हे, मात घामाके नंदा ॥ अश्वसेनके कुलमें शोजे, जैसा  
 शरदपूनमचदा ॥ स्वर्गलोकमें दुवा थोनदा, इन्द्राणी  
 मंगल गावे ॥ तेथ्रीश क्रोरु देवता मिसकर, उच्छव  
 करनेकुं आवे ॥ २ ॥ कोइ थावता कोइ गोवता कोइ  
 नाम खेता देवा ॥ चोसठ इंदर अरज करता, चंद्र  
 सृय करता सेवा ॥ केइ सुरनर साहेयफे थाग, अरज  
 करता खना खना ॥ जिनके स्वरूपको पार न पावे,  
 जिनका गुण हे सघसें वना ॥ ३ ॥ हर देशसें थाया

जगो जगोपर शिखर चढाया, बडा काम दरवाजेको ॥  
 चामंरुलके आगे शोजता, मूल गंजाग आरसका ॥  
 पीठें पचीश देरीयां शोजित, सिरे काम सिहासनका  
 ॥ १३ ॥ मूलनायकके उपर सोहे, सहस फणो महारा-  
 जजीका ॥ चोमुखी चतुराई वनी हे, जसा काम में  
 नहीं देखा ॥ अठारसें पांसद सवाई, मुहूर्त फागुण  
 मास वना ॥ शुदि त्रीजकुं तखत बेठे, जगो जगोपर  
 नाम चला ॥ १४ ॥ देश देशके संघो मिलकर, तेरे द-  
 र्शनकुं आया ॥ जगतगुरु जिनराज जगतमें, वनी तेरी  
 अकल माया ॥ धर्मचंद जोइता सवाइने, वना स्वामि-  
 वात्सल्य कीया ॥ सकल संघकी आइहा लेकर, वना  
 शिखर नीशान दीया ॥ १५ ॥ करमचंदने देव-  
 चंदने, खेमचंदने खूब कीयां ॥ पारसनाथकुं तखत  
 बेठाके, जगो जगोपर नाम किया ॥ कीर्तिविजय गु-  
 रुराजजी प्रणमुं, पाया गुरुका राज वढा ॥ गजुवचंद  
 साहेबके आगे, जिनशासनका काम वना ॥ १६ ॥  
 तेजा गावत चंग रंगसें, ग्यान ध्यानसें खना खना ॥  
 हाथ जोरकर अरजी करता, पारसनाथजी तुंही वडा  
 ॥ वना काम तेरे हे साहेब, ॐ ॥ हो कह्या



मतवाला ॥ करुकरु करुकरु दृश्यो कमाका, चमका यी  
 जका अजुवाला ॥ ७ ॥ मूसल धारे मेघ घरसता, गगन  
 गाजता चोताला ॥ साता खूकी घनी जमीने, प्रभु  
 खडा हे मतवाला ॥ नाक धरोवर श्याया पानी, नाथ  
 निरजन धीर बना ॥ पराजय नहीं होय जीनुका, ऐसा  
 प्रभुका ध्यान बना ॥ ८ ॥ सकटसे सिंहासन काह्या,  
 घुषा घटका अवाजा ॥ अथविहानसे इडे देख्या, धाठ  
 धाठ धरणीराजा ॥ धरणीधर जज्ञदीसे श्याया, पद  
 मावतीकु सग लीया ॥ पदमायतीने लीये शिरपर,  
 शेषनागके वध किया ॥ १० ॥ कोरु उपाय कीये क-  
 मवने, कुछ इलाज नहीं चसता ॥ तरनेवाला साहेब  
 उनकु, ठसनेवाला क्या करता ॥ जोते श्री जिनराज  
 हारके, कमठ हाथ दो जोरु खना ॥ धरणीधर साहेबके  
 आगे, अरजी करता खडा खना ॥ ११ ॥ केशल खेई  
 शिवपुरकु पहुँचि, पारसनाथ शुन मतवाला ॥ लगी  
 ज्योतमें ज्योत दीपककी, तपे तेजका अजुवाला ॥  
 वीसनगरमें पारसनाथका, देखल घनाया तेताला ॥  
 बडे देवलमें उदर सोहे, घट वाजता चोताला ॥ १२ ॥  
 घनी जुगतसे सिंहासन कर, कोट घनाया देवलका ॥

मंडे ॥ धन० ॥ २ ॥ पुण्ययोगें विजयाकुमरी मन्त्री गु-  
 णवंती, शुद्ध चोशठ कलानी जाण महा बुद्धिमंती ॥  
 गैजगमणी रमणी बोले कोकील वाणी, तनु कंचन  
 सोहंत वदन जाल जलकाणी ॥ अतिअधर लाल  
 कोमल कपोल बहुत सोहे, कर चरण उदर नयनक-  
 मल जोइ मन मोहे ॥ बहु हर्ष जावशुं विजयकुमरजी  
 वीया, पुण्ययोगे जोड मली परणे घरप्रीया ॥ धन०  
 ॥ ३ ॥ हवे विजयकुमरजी सोहे सुंदर तलाइ, अब  
 सुरसुंदरीकी देवरूप ठवि ठाई ॥ बहु कानें कुंडल रत्नें  
 जमियां सोहे, शिर लाल मुकुट मुक्ताफलें सुरनर मोहे ॥  
 गले हार रत्नें जमिया सोहे बहु ज्ञारी, कर कंकण  
 चमकण मुद्रडियां ठवि न्यारी ॥ अरु वदन जाल  
 निर्मल शशि नेत्रें सोहे, इत्यादिक गुण करी विजय-  
 कुमर मन मोहे ॥ धन० ॥ ४ ॥ तव रंगमहेलमें बैठां  
 पदंग विठाई, प्रीतमको सेजा सुंदर तन सज आई ॥  
 अणियालां कज्जल वीजलीयां चमकंती, कर जोमी  
 जज्ञी पियु आगल मलपंती ॥ चमके चूमियां सार म-  
 णियें चमकंती, नाकवेसर वेण जुम्मरियां जमकंती ॥  
 कर कडियां जमियां मुद्रडियां दमकंती ॥ अरु नेउर

जोता ॥ शिखरमणीकु वरी जिनजीने, जधे जनकुं  
सुखके दाता ॥ १७ ॥ ॥ ७१ ॥

॥ अथ श्रीविजयकुमरजी अने विजया  
कुमरीनी छावणी व्याशीमी ॥

॥ श्री धीतराग जिनदेव नमु शिर नामी, कहु शीष  
तणो अधिकार मुक्ति जिण पामी ॥ जिहां वधवे  
शमें कोमंघी नयरी जाणी, पण दखण देशमें प्रगट  
पणे वखाणी ॥ तिहां शेठ तणो सुत विजयकुमर वें  
रागी, सुणी शीष तणो महिमो मनमें छय छागी ॥  
तव हाथ जोरुकर मुनिपें सोगन मांगी, दुश्चा एक  
मासमें कृष्णपक्षका त्यागी ॥ १ ॥ धन विजयकुम  
रकी करी कमी कबु नांजी, जिणे चित्त चोखे शीष  
आदरयु जर जोवनके मांजी ॥ ७ आंकाणी ॥ पाछे  
आवकधर्म शुद्ध ज्ञान मुख उच्चरे ॥ पोसह पन्थि  
मणां सवर करतां विचरे ॥ करि दया दान संतोष  
शीष शुद्ध पाछे, धरी धर्मप्यान अोर आतमकु अजु  
आछे ॥ हठ समकितधोरी शका कखा नथि आणे,  
पर पाखढीको परचो नहीं वखाणे ॥ देवादिकनां दुःख  
देखी धर्म नथि ठंढे, चमते परिणामें करणी अधिकी

शील रूच्यो मनमांहि, पहिला परणेका परिणाम  
 हता नही कांहि ॥ धन० ॥ ७ ॥ गुरुणीपें किया में  
 शुक्लपद्मका सोगन, अब तो महारे हुआ दोनुं पद्मका  
 आगन ॥ प्रीतमजी तुम तो परणो नारी अनेरी, पण  
 पहेली श्वा शील तणी श्री मेरी ॥ कहे विजयकुम-  
 रजी अहो वद्वज गुणवंती, अब तुम हम जोडी मली  
 वहु दीपंती ॥ हवे हवे रत्न ठोड कुण काच ग्रहे सुण प्या-  
 री, शुद्ध शील पालशुं मुक्ति रमणी ठे नारी ॥ धन० ॥ एण ॥  
 बहु देवलोकनां सुख विलस्यां वार अनेरी, पण मन  
 श्वा पूरण जइ नहीं कुणकेरी ॥ जीव नरक निगोद  
 जम्यो जवसायरमांही, बहु काल गमायो गरज सरी  
 नहीं कांही ॥ अब उत्तम कुल अवतार लियो ठे आई,  
 पुण्ययोगें मुनिवर योगवाई पाई ॥ अब मात तात  
 सब त्राता मिले स्वारथका, चरुते परिणामें शियल  
 पालशुं नित्यका ॥ धन० ॥ १० ॥ अब अल्प संपदा  
 देखी कहो किम खोश्ये, ॥ पण वाटी साठें खेत खोया  
 दुःख होश्ये ॥ अब एह वात अपने नहीं करना कि-  
 सीकुं, जो हम दोनुंनें नियम लिया हे खुसीकुं ॥ कर  
 जोमी कुमरी कहे कुमरशुं अरजी, पण वात ए ठानी

पगमें घूबरियां घमकती ॥ धन० ॥ ५ ॥ जत्र बदा  
 दिखावे काम जगावे बाखा, इद्राणी सरखी उची रु  
 रसाखा ॥ प्रीतमको आदर मागे सुदरी उमाई, त  
 मन उखसंती ऊनी आशा छाई ॥ कहे विजयकुम  
 रजी अहो सुदरि जखे आइ, पण हमणां तुमशुं का  
 नहीं मुज कांइ ॥ दिन तीन खगें तो नहीं मदनक  
 कांइ, फिर तम हम पीठें सुखें सुखें दिन जाई ।  
 धन० ॥ ६ ॥ कहे कुमरी कुमरकों कहो कारण  
 बांइ, हु सुदर तन सजकर आइ तुं उमाइ ॥ अ  
 अबसर जरियां केम तजो प्रीतमजी, मेंनियम खिय  
 ठे तु सुदरी नहीं समजी ॥ तब कुमरी पूठे कहो प्री  
 तमजी हमकुं, अब किसी जांतिसा नियम खिया है  
 तुमकुं ॥ मुज घासपणाधी शियस रुच्यो मनमांहि,  
 किया कृष्णपक्षका नियम मुनिपे जाइ ॥ धन० ॥ ७ ॥  
 तब विजयाकुमरी ऊनी मुख कुमलाइ, मुज मनकी  
 आशा आश रही मनमांहि ॥ कहे विजयकुमर सुण  
 सुदरी वयु कुमलाइ, पण जिम ठे तिम मुज वेग कहो  
 फुरमाइ ॥ तब विजयाकुमरी बिरजपणु मन छाई, नी  
 चा नेत्रे करी वात करे मुरजाइ ॥ मुज घासपणाधी

करी होंशे हूं आयो, शीलवंत कुमर कुमरीको दरिसन  
 पायो ॥ धन्य तुमचे कुलमे उपना उत्तम प्राणी, श्री-  
 विमल केवल शोभा घणी वखाखी ॥ धन० ॥ १४ ॥  
 एक सेजें सोवे शील निर्मलुं पावे, बहुं बाल ब्रह्मचारी  
 आतम अजुवाले ॥ बहु अचरिज सरखी वात सूर्णी  
 हूं आयो, पण नाव मुनिको दर्शन निर्मल पायो ॥  
 तव मात तात कहे कहोजी हमकुं नहाना, तुम किसी  
 जांतिका नियम लियो है ठाना ॥ तव नेत्र नीचां करी  
 वातकहे विस्तारी, अब संवय लेना इह्ना जई हमारी ॥  
 धन० ॥ १५ ॥ जब मात तातपें मागे कुमरजी आग्या,  
 तव नात जात सब कुमरकुं कहनें लाग्या ॥ तव बहुत  
 हठनशुं लही कुमरजी शिक्षा, चरुते परिणामें दोनुं  
 लीनी शुद्ध दीक्षा ॥ बहु कठिन होशनें तपस्याशुंलय  
 लाई, जवि जीव सुधारया शुद्ध समकित पद पाइ ॥  
 अरे जीव अब ठती बांठे किम ठटकाई, धन्य विजय  
 विजया ( कुमरी ) ने अधिक करी अधिकाई ॥ धन०  
 ॥ १६ ॥ चढते परिणामें करणी कीधी निर्मल, मुनी मुक्तें  
 पहोता दोनुं पास्यां केवल ॥ श्री दोलतरामजी जी-  
 वाजी स्वामी, रुषि लालचंद गुणग्राम किया शिर

किम रहेशे कुञ्जरजी ॥ सुणी तसरो सासु घणा त्वा  
 जशे तुमष्टु, पण कीसी शरमसें रघो जायशे हमशु ॥  
 ॥ धन० ॥ ११ ॥ सुण प्रीतम प्यारी एह आपर्ण  
 शिद्धा, यह घात प्रगटी तब निर्र्थे खेवी दीक्षा ॥ प  
 कण सेजे सोवे सुदरी अरु सांइ, सूते सूते घात फां  
 ज्यु वहेन ने जाइ ॥ दो घेर करे पक्कमण सामायि  
 आई करे दान शीख तप नखी जावना जाई ॥ तिह  
 धार घरस वही गयां एम करंतां, पण घात विस्तरं  
 शीखपणे विचरतां ॥ धन० ॥ १२ ॥ तब दक्षिण वे  
 शमे विजया विजयजी केरां, श्री विमल केवली किय  
 बखाण घणेरं ॥ वेहु चरमशरीरी ठे महा उत्त  
 प्राणी, सह अचरिज पाम्यां सुणा केवली मुखघाण  
 ॥ सुणी जिनदास आवक हुठं बहुत प्रसन्न, हु जा  
 करु तिहो हर्पे धरी दरसन्न ॥ बहुत हर्पे जावशु आव्ये  
 नगरी फोसंधी, श्री विजय कुमरनी घात सुणी अ  
 चनी ॥ ॥ धन० ॥ १३ ॥ बहुत हर्पे जावथी मलियो पु  
 थर कुञ्जरिआं, परिवार जिमाया बहुत हर्पे मन धरि  
 यां ॥ तब मात तात कुमरका घणु उमाक्षा, तुम फहो  
 शेठजी कुण सगपणथी आया ॥ श्रीजेनधर्म स्नेहे

सरवरको, जल घन चावे॥जग चातक मास वसंत, को-  
 कल हरखावे ॥ मूल लग्यो नेह तुम साथ, चरणको  
 चरा ॥ ३ ॥ जिन० ॥ जस पायो चोमासे बीच, अवंती  
 नगरी ॥ सोहागन गावे गीत, नीरु चरी गगरी ॥ श्री  
 संघ अछाई महोत्सवकी, चित्त धररी ॥ गुरुवार पूज  
 तिथि आश्विन, में वदि वररी ॥ नित्य नव नव महो-  
 सव हुवे, शांति जिन देहरा ॥ ४ ॥ जिन० ॥ जवि जीव  
 हरे जिनजक्ति सदा हरखाई ॥ मुज रहो सदा अनु-  
 कूल, प्रभु सुखदायी ॥ अब फली मनोरथमाल, विजय-  
 पद पाई ॥ रणधीर विजयनो लाज, लावनी गाई ॥ अब  
 सरण तिहारी नाथ, अवंती मेरा ॥ ५ ॥ जिन० ॥ स-  
 वईया एकतीसा ॥ प्रभुसेंती प्रीत कर, मुनिकी संगति  
 कर, ज्ञान उर ध्यान धर, कुमति निवारकें ॥ तन मन  
 बच कर, जिनवर सेवा कर, द्रव्य अरु जाव धर, पूजो  
 नेम धारकें ॥ धपमप धों धों कर, अनुपम वेशधर, तत्ता  
 थेई ताला वर, नाचो पाप टारकें ॥ सदगति होय जब  
 गुरुणधीर जब, कहे लाज दीजें अब, अवंती जुहारकें  
 ॥ १ ॥ इति अछाई महोत्सव लावणी मंजरी ॥ १३ ॥



नामी ॥ सय सवत अठार अरुशहें अबर पाया, शहर  
कोटा केरा रामपुरे गुण गाया ॥ जिहां आवक बहु  
वसे अद्वा गुणवंता, जिहां साधु साधवी आवे विहार  
करता ॥ घन० ॥ १७ ॥ इति श्रीविजयकुमरजी अने  
विजयाराणीनीखावणी समाप्त ॥ ७२ ॥

॥ अथ अथतीजन अछाई महोत्सव  
खावणी आशीमी ॥

॥ प्रभु करो सेव चित्त छाव, जाय अथ तेरा ॥ जिन  
घरशुं कर तु प्रीत, मिटे जवफेरा ॥ टेक ॥ जीव रम्यो  
कुमतिके संग, सुमति नहीं पायो ॥ बहि गयो अनंतो  
कास, कुश्रु जरमायो ॥ दुःख सखो निगोदके बीच, न  
रकमें ठायो ॥ में धुन अकरके न्याय, मानवगति आयो  
॥ प्रभु आयो शरण में आज, काज करो मेरा ॥ १ ॥  
॥ जिनवर० ॥ जिनजक्तिके परजाव, रोग सब जावे ॥  
श्रीपाख नरेसर कोड, दूर सब थावे ॥ जिम अजयदेव  
सूरिनो, रोग गमावे ॥ सुख पावे जस विस्तार, प्रभु जो  
प्यावे ॥ प्रभु तुम सम नहीं कोई देव, जगतमें हेरा ॥ २ ॥  
जिन० ॥ मुऊ वस्यो हियाके मांदि, श्वोर चित्त नावे ॥  
घन केकी अवाज सुनी, हृपी उखसावे ॥ मन गमे नहीं

सरवरको, जल घन चावे॥जग चातक मास वसंत, को-  
 कल हरखावे ॥ मूल लग्यो नेह तुम साथ, चरणको  
 चेरा ॥ ३ ॥ जिन० ॥ जस पायो चोमासे बीच, अवंती  
 नगरी ॥ सोहागन गावे गीत, नीम जरी गगरी ॥ श्री  
 संघ अछाई महोत्सवकी, चित्त धररी ॥ गुरुवार दूज  
 तिथि आश्विन, में वदि वररी ॥ नित्य नव नव महो-  
 त्सव हुवे, शांति जिन देहरा ॥ ४ ॥ जिन० ॥ जवि जीव  
 करे जिनजक्ति सदा हरखाई ॥ मुज रहो सदा अनु-  
 झूल, प्रभु सुखदायी ॥ अब फली मनोरथमाल, विजय-  
 पद पाई ॥ रणधीर विजयनो लाज, लावनी गाई ॥ अब  
 सरण तिहारी नाथ, अवंती मेरा ॥ ५ ॥ जिन० ॥ स-  
 वर्श्या एकतीसा ॥ प्रभुसेंती प्रीत कर, मुनिकी संगति  
 कर, ज्ञान उर ध्यान धर, कुमति निवारकें ॥ तन मन  
 बच कर, जिनवर सेवा कर, द्रव्य अरु जाव धर, पूजो  
 नेम धारकें ॥ धपमप धों धों कर, अनुपम वेशधर, तत्ता  
 थेई ताला वर, नाचो पाप टारकें ॥ सदगति होय जब  
 गुरुरणधीर उव, कहे लाज दीजें अब, अवंती जुहारकें  
 ॥ १ ॥ इति अछाई महोत्सव लावणी संपूर्ण ॥ ७३ ॥

॥ श्रीस्थुलिनद्रजीनी अने कोश्यानी सावणी  
बोराशीमी ॥

॥ राजठह्वे सावणी ॥ ए देशी ॥ मंजन चीर ति  
खक आघत, चतुर शणगार सफार धरी ॥ मनोहर  
शिरपर चीवर चंजी, कौसंजीकि शोज करी ॥ १ ॥  
चिहु दिश जाखी फुखकी जाखी, दीपक माखी ज्योति  
धरी ॥ धुर परिणाम सकामहू रामा, रामा रंगे गेख  
करी ॥ २ ॥ नव नव रंगे ठद ठपेया, ठधरीया रस  
गुण जरीयां ॥ ठमक ठमक पग चूतख ठमके, ठमके  
रमठम कांजरीयां ॥ ३ ॥ हृदयानंदन केतकी घदन,  
घुख अमूख मखक मखके ॥ खखक खखक कर ककष  
खखके, जखक जखक टीको जखके ॥ ४ ॥ जरमर  
जरमर मेहुखो वरसे, जखसें जरि जरि वादखीयो ॥  
घनन घनन घनघोर अघोर, गाजे राजे धीजखीयो ॥ ५ ॥  
डुहुक डुहुक अधिवेका नेका, जेका सोरस जोर घने ॥  
कुहुक कुहुक रसीखा नीखा, कोकीखा सहकार बने  
॥ ६ ॥ बहुत पिपाशी मेघजखाशी, फखी घनवासी  
बेखकीयां ॥ प्रेम तणा रसरखा आख्या, पण थूखीजड  
नांव पनीया ॥ ७ ॥ टहुक टहुक रि बेका ठेका,

करता केकी मादहे ठे ॥ वैरीनी परे ए वरसालो, वि-  
 रहीने घणुं साले ठे ॥ ७ ॥ धप मप मादलके धोकारा,  
 कंस ताल वीणा सखरी ॥ ताथेई ततथेई तान न चूके,  
 मूके नेत सहेत धरी ॥ ८ ॥ फरसत क्णतर कुंतल  
 शूतल, चंचल अंचल कर लेती ॥ गीत रीत मदमोद  
 विनोदें, फरक फरक फुदनी देती ॥ १० ॥ ललक ल-  
 लक ढलकंती काया, काच ढलाया में ठाया ॥ जीव-  
 नके पर नेह उपाया, वचन वदे करती माया ॥ ११ ॥  
 प्रीतम प्रेमकी बात बिचारो, ज्रमन ज्रमन रोतो जसरो  
 ॥ दग्धा केतकी ज्रमें लोटत, पंफित पूढत कांई करो  
 ॥ १२ ॥ जमर कहे मोय देह दहे एक, विरह केतकी  
 नारी तणे ॥ तस रक्षार्यें विरहे समशुं, रमशुं नहीं मरुवे  
 दमणे ॥ १३ ॥ कहे कविता श्यामलता सब तनु, पीली  
 पुंठ किशुं कीधी ॥ प्रेमकी चोट लगी मोय बहुली,  
 तास उपर हलदी दीधी ॥ १४ ॥ करि चित्त बदने ल-  
 टके चटके, मटके नवि अटके रागें ॥ प्रीतकी रीति  
 अनुपम नौटक, करतां प्रेम दान मागे ॥ १५ ॥ कहे मु-  
 नि हेली सुणो अलवेली, नाटक नवि करतां आवे ॥ श्री  
 ज्ञानवीर वजीर पसार्यें. ज्ञाननाटक मणालो जाने ॥ १६ ॥

॥ अथ आत्मोपदेशी छावणी पचाशीमी ॥

॥ सुणो श्री जैनधर्म नवि प्राणी, आत्मवाणी  
 अरदोसी ॥ आत्मसरूप अध्यात्मचेतन, शुद्ध आत्म  
 मा अविनाशी ॥ १ ॥ अनुभव जाकी मति प्रगटी हे,  
 सुखरूप आत्म जान्या ॥ शुद्ध सुखद सदा अति निर्मल,  
 आत्मज्ञान आत्मैर्मे मान्या ॥ २ ॥ परवशरगी होई पर  
 वशमें, बहुरगी बहु हे अंधा ॥ धाड्याच्यतर करे मगरूरी,  
 दुःख धरे मूरख छत्रा ॥ ३ ॥ मूखग्यान हित कहे  
 तुमचा, साहेबसें वधी बुध जागी ॥ आत्म सत्य अ  
 ध्यात्म प्रगटे, स्यादवाद तिहां ऊरु लागी ॥ ४ ॥ छैत  
 अछैत कक्षा नवि जावे, क्या उगवे गूढ स्वप्ना ॥ अधो  
 अधकी परंपर नासी, ठेठ क्यु अध पोर परना ॥ ५ ॥  
 चारु वेद टखे सिद्धांते, मूरख कहे मेरा तेरा ॥ ग्यानकी  
 पात ग्यानीही जाने नहीं मूरख मेरा तेरा ॥ ६ ॥ वि  
 स्तार वाणी देख तु मूरख, अंधा क्यु तेरे दिलमें ॥  
 सदगुरुकी तो बात नहीं जाया, फिर क्या काम चया  
 इनमें ॥ ७ ॥ जोगाच्यासी जोगाच्यासी, तरनेकी गति  
 हे न्यारी ॥ पूरण सरूप घर दीपक प्रगटे, ब्रह्मरूप  
 सुख टखे जारी ॥ ८ ॥ हससरूप पिठे कोड परा. ग्यानी

पुरुष वे हे हंसा ॥ क्षीर नीरका जेद वतोवे, मिट जावे  
 हे मनसंसा ॥ ए ॥ हंस सजाव हंस हुइ जोने, कोग  
 जाति तो पत खोवे ॥ जीव शिवका सरूप घटमांहे,  
 समजु विचारी चित्त जोवे ॥ १० ॥ सद्गुरुकुं चित्तमें  
 धर लीना, मानवजव पुण्यें पायो ॥ कर अपनी जल-  
 पन तुं प्राणी, मूढ जन्म ऐलें गमायो ॥ ११ ॥ दान  
 शियल तप जाव सुखाणी, संतोष उर सुमतां ठाई ॥  
 धरमध्यान जीवदया विवेका, आतमसमो सुखदायी  
 ॥ १२ ॥ क्षमा खरुगसें अरि कालनकुं, जीत लिये हे  
 जगनाथा ॥ अजरामर जये साहेव सच्चा, सेवो प्रजु  
 शिवपुर सच्चा ॥ १३ ॥ जीवघात कहे जे परमेश्वर,  
 मूढ आतमदर्शी काचो ॥ ज्ञान रहित धरम सब जूठा,  
 साचकुं खोजे सोइ साचो ॥ १४ ॥ गुरुग्यान दीप लेइ  
 हाथमें, क्युंहि करे तनमें सामा ॥ जाण हुई अजाण  
 क्युं होवे, समजीयें आतमरामा ॥ ५ ॥ निर्जय ज्ञान  
 चिदानंद तेरा, धर्मपर्यायें हे अनंता ॥ अनंता पर्यायें  
 धरमज प्रगटे, जेदें जाखे जगवंता ॥ १६ ॥ तत्वधरम  
 जैनगुरु ज्ञानी, नहीं हे पद्मका संगी ॥ पद्मापद्म कथे  
 उस कुमतिकुं, अध्यातम दे मत भंगी ॥ १७ ॥

परे ससारसमुद्रमें, एही हे अधार कुश्वा ॥ जनम मरष  
 जय क्यु नहीं आवे, सुण रे शीखामण सुश्वा ॥ १७४  
 ज्ञानरूप खांन धारपर चसनां, एही हे अजी अधिर  
 वाजी ॥ इसविखास हे इस सजामप्य, तिहां हे अनु  
 जवराजी ॥ १९ ॥ गुण प्रगटपा यिन मुक्ति दुर्लज, जी  
 वका रूप गहे सो जाती ॥ जसा न बूरा न जाणे अ  
 पना, जिसकु जीतर हे काती ॥ २० ॥ दगो दज घात  
 अधिर वाजी, करमज रुठे कौन सगा ॥ समज्या यिन  
 तेरी कोन गति हे, तेरो जेद हे इसकागा ॥ २१ ॥  
 जीवज एसे दुर्गति रजसे, मानवजबकुं (यगोइ ॥ प  
 रनिंदा परधरमकु घ्याता, मरे नरकमें आप रोइ ॥  
 ॥ २२ ॥ ग्यानकथा धर्मकथा सुने, पीठासु पकरी जावे  
 ॥ जिने दिया ओ में पीठा दीया, मूढहि क्या मानव  
 कहावे ॥ २३ ॥ धिग हे अपनी नात जातकु, मात  
 तातकु सजवाया ॥ इस सुजाव काख ठस नांहीं, वा  
 यस हंसकु ठग थाया ॥ २४ ॥ हंसा होइके मोती पु  
 गणां, आगम सरोवरके मांहे ॥ मोती अथाग अताग -  
 विवेका, हे कोइ गणती नांहि ॥ २५ ॥ चौद राज जूमि  
 मप्य जार्गे, हसा कागा घूक जाता ॥ हसा ग्यानी धि

वेक विचारे. समऊ ग्यानकी तुं बातां ॥ १६ ॥ या  
 संसार बेरागर जरिगो, हुश्या एका अवतारी ॥ परम  
 सिद्ध पदारथ पामे, आ ठाम हे सुखकारी ॥ १७ ॥  
 जव्य अजव्यकी खबर जो पावे, जव्य ते उपदेशा  
 पावे ॥ अजव्यकुं प्रतिबोध न लागे, चउद लोक उनसे  
 नावे ॥ १८ ॥ सुख वांठे जीव सर्वे सुखकुं, सिद्धशि-  
 लाकुं ते ध्यावे ॥ करम नाथ नाथ्यो सुखवासी, खेंच  
 पीठही फिर द्यावे ॥ १९ ॥ लख चोराशी परित्रमन  
 करे, जीव काग उपाधिको ॥ हंस सुजाव जूल गयो  
 संगे, जीवज काग अनादिको ॥ २० ॥ तज उपाधि  
 अबाधक जानी, टले हि त्रमना आतमकी ॥ हंस  
 चालकी चलगत जानो, प्रीत बने परमात्मकी ॥ २१ ॥  
 धन्य धरामें सदगुरु पाये, धन्य ज्ञान सच्चा माने ॥  
 धन धन प्रचुजी केवलज्ञानी, जैन धरम धन धन  
 जाने ॥ २२ ॥ अज्ञानीका तज उपदेशा, जेदें समजें या  
 वाणी ॥ कहे रुषज नेकी विचारत, मुक्ति लहेगां जिव  
 प्राणी ॥ २३ ॥ इत्यात्मोपदेश लावणी संपूर्ण ॥ ८५ ॥



॥ अथ श्रीकविटीपविजयजीकृत श्री रूप  
 ७ - देवजीनी छावणी गशीमी ॥

॥ दोहा ॥

आदिकरन आदि जगत् आदि जिणद जिनराज  
 घुस्सेवनाथ जाचो धणी, धरनु श्री महाराज ॥ १

॥ छावणी ॥

॥ काश्यप गोत इन्वाग वशर्मे, मरुदेषा जन  
 जायो ॥ नात्ति नरेसर वस ठजाखन, आदि धर्म ज  
 प्रगटायो ॥ १ ॥ चोसठ सुरपति देव देवी मिळ, म  
 र गिरपै न्हवरायो ॥ इसो रूपज निधि प्रगट क  
 तरु, सुर नर मुनिजन नित्य श्यायो ॥ २ ॥ खरु देश  
 नगर घुस्सेवे, जात ददामा धुरता हे ॥ ३ ॥ जाको म  
 हिमा अपरपोरा, कविजन कीर्ति करता हे ॥ ३  
 आदी मूरत काळ असंख्यकी, पूजी सुरगण असुरीव  
 ॥ सुरपति नरपति वंदीत पद जुग, वखि पूजत सुर  
 चदा ॥ ४ ॥ छाख अग्यार हजार पंचासी, वरस पा  
 चशे पचासा ॥ इतने वरस पर जंका गधर्मे, पूजित  
 रावण गुनरासा ॥ ५ ॥ रामचंद्र सीता अरु लठमन  
 ठ मूरत पूजन श्याये ॥ नयरो अयोध्या जाते अ

विश्व, नयर लजेणी ठहराये ॥ ६ ॥ प्रजापाल नरप-  
 तिकी तनया, सुंदरि मयणां धर्मनकी ॥ बाप करम  
 अरु आप करमकी, जई लकाइ मरमनकी ॥ ७ ॥  
 आप करमके उपर नृपनें, कुष्टी वरपें परणाइ ॥ म-  
 यणां चिंते कांइ नवाइ, करम लखी सो बन आइ  
 ॥ ८ ॥ इक दिन जिनपूजन गुरुवंदन, आइ श्री जिन  
 मंदिरपें ॥ वंदन पूजन करकें इकचित्त, ध्यान धरे मन-  
 कंदरपें ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ मयणासुंदरीकी ध्यान स्तुति ॥

( मोतीदाम ठंड )

॥ तुंहि अरिहंत तुंहि जगवंत, तुंहि जिनराज  
 तुंहि जगसंत ॥ तुंहि जगनाथ तुंहि प्रतिपाल, तुंहि  
 मनमोहन गाजि दयाल ॥ १ ॥ तुंहि जवजंजन जाव  
 सरूप, तुंहि अरिगंजन रंजन चूप ॥ तुंहि अविनाशी  
 तुंहि वीतराग, तुंहि महाराज तुंहि वरु जाग ॥ २ ॥  
 तुंहि गुणधाम तुंहि विशराम, तुंहि नवनिध तुंहि  
 वरुनाम ॥ तुंहि अघनाश तुंहि अविनाश, तुंहि म-  
 तिमंत तुंहि मतिवास ॥ ३ ॥ तुंहि गुन केवलरूप  
 अनंत, तुंहि जगतारन तारन संत ॥ तुंहि जगधेज

तुहि जगच्यान, तुहि खिदरूप तुहि जग मान ॥ ४ ॥  
 तुहि मम मात तुहि मम तात, तुहि मम चात तुंहि  
 मम ठात ॥ तुहि शरणागत राखणहार, तुंहि दुःख  
 दोहग टाळणहार ॥ ५ ॥

### ॥ छावणी ॥

॥ करु अरज एक तोपे जिनपति, कत कुष्ठसे  
 नहीं करते ॥ पूरव करमके खिखित खेख जे, किसके  
 टारे नहीं टरते ॥ १ ॥ पण तुज शासन जगत हेख  
 ना, जगत् ढंडेरा धाजन हे ॥ आप कर्म अरु जैनध  
 र्मके, फल पाह्ये यो खाजत हे ॥ २ ॥ यो दुःख मोसें  
 सद्यो जात नहीं, आदिनाथ जग रखशासो ॥  
 करुनो करके रोग निशारन, गुन कीजे जग प्रति  
 पासो ॥ ३ ॥ यद्द प्रसन्न होय फल धीजोरां, हाथ तणो  
 फल तव दीनो ॥ मयणा तव उद्धास जई मन, चिते सध  
 कारज सीनो ॥ ४ ॥ तो दिन नमण नीर तनु फरसे कुष्ट  
 रोग सब नासत हे ॥ कामदेव अरु अमर समोषरु, नृप  
 श्रीपाळ सोहावत हे ॥ ५ ॥ या कीरत प्रभु तिहारी चू  
 तळ, प्रगट प्रबळ हे जस सेरो ॥ आसो चैत्र भासमें  
 महिमा, देश देशमें प्रभु तेरो ॥ ६ ॥ फिर दागरु देश

बनोद नगरमें, जगपर प्रभु करुना कीनी ॥ कितने  
 वरस लग महिमां महिमा, अविचल चूतल रुद्धि  
 दीनी ॥ ७ ॥ दिह्वीपर तुर कान जयो तब, पादशाह  
 लरवा आयो ॥ बूत चूत पथरकी मूरत, जन्मुद्धांसें  
 उखरायो ॥ ८ ॥ बहोत दिनां लग होई लराइ, थाक्यो  
 यौं वाचो बोले ॥ देव हिंदको बनो जागतो, यौं बोलत  
 फिर फिर बोले ॥ ९ ॥ सुनो बात काजी मुद्धां तुम,  
 एक बातसें त्रासेंगा ॥ गो ब्राह्मण प्रतिपाला कहाई,  
 गोवधसें यौं नासेंगा ॥ १० ॥ गोवध करन लगे जब  
 नजरें, देख शके क्यौं प्रतिपाला ॥ करन युद्ध जब जये  
 महा बल, शस्त्र ऊकोऊरु विकराला ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ महा युद्ध करने लगे, घाव चोरोशी अंग ॥

॥ करी मलोखां गाम्भी, आय धुलेव सुरंग ॥ १ ॥

॥ लावणी ॥

॥ गाम धुलेवें वंश जालमें, गुप्त रहे हैं प्रभु धरती ॥

गाय एक कोमी बनियनकी, आई उहां चरती चरती

॥ १ ॥ स्रवे तिहां पयधारा शिर पर, सांज समे फिर

नहीं डूके ॥ रीश करी तब गोपालन पर, गवपाल

धरधर धुजे ॥ २ ॥ झूजे दिन गो खारें ध्यायो, खसो  
 जेद कसो बनियनपे ॥ शेट आज जय नजरें देखो,  
 चकित जयो हे तनमनपे ॥ ३ ॥ मध्यरातमें सुपने  
 दीनो, रूपजनाथकी मूरत है ॥ बहिर निकासो करो  
 खापसी, जितर मूरत पूरत है ॥ ४ ॥ नव दिनमे सब  
 धाव मिखासी, मत काठे तुं नव दिनमें ॥ कियो शेठने  
 हुकम प्रमाणें, ध्याये संघ बहोठो दिनमें ॥ ५ ॥ कइ  
 उपधासो कइ धतधारी, कइ अणुआणे पाठ चखे ॥ कइ  
 लोककु डु कर याधा, कथां प्रजुको दरस मिखे ॥ ६ ॥  
 यु सय लोकं दरसतरसकी, कहे लोक मूरत काढो ॥  
 छाठ छाठ महाराजकी मूरत, संघ सबे खीनो आनो  
 ॥ ७ ॥ जधर जस्तपें दिवस सातमे, खापति बाहिर  
 सब कीने ॥ अंश अश जर धण रहा ए, संघ लोक  
 दर्शन दीने ॥ ८ ॥ फिर सुपनेमें अव्य दिखायो, सं  
 घे मिस्र देषस कीनो ॥ मध्य धिराजे रूपज तखत  
 पर, कसियुगमें यों जस खीनो ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ संवत अठार त्रेसठमें, जाठ सदा शिवराय ॥  
 कियो धिंगानो घुटने, जांख धरन बनाय ॥ १ ॥

## ॥ मोतिदाम ठंड ॥

॥ सदाशिव राय चिंते मत एह, लुंटे बहुधाम जमी प-  
 र जेह ॥ जिह्वां पत नाथ धुखेव कहाय, लखो लख-  
 ड्रव्य जंमार सुनाय ॥ १ ॥ जावां अब लुंटेण गाम धु-  
 खेव, ग्रहुं सब माल जई ततखेव ॥ आयो निज फोज  
 लेइ दल गाज, तोपां दोय साथ लीया बहु साज ॥ २  
 ॥ कंपु दोय द्वार लीय फीरंगाण, उटां जर साथ ली-  
 ये कोक बाण ॥ तवां बहु लोक कहे महाराज, नहि  
 इह कारन कृत्य अकाज ॥ ३ ॥ ए तो वह जाजल दे-  
 ख कहाय, रहे नहीं लाजा तिहारिय कांय ॥ तवां फि-  
 र बोले सदाशिव चूप, ग्रहुं सब माल अबां चढी चूप  
 ॥ ४ ॥ इस्यो कहि आवत दुष्ट करूर, कियो नजरा-  
 णह नाथ हजूर ॥ रख्यो नहीं नाथ तवां नजराण,  
 जयो मन चकित मान गिलाण ॥ ५ ॥ तवां मन चिं-  
 त जंमारी बुलाय, मिठे वच बोल सबे ललचाय ॥ लई  
 संग आय मुकाम मजोर, कियो तब कूच लइ सब द्वा-  
 र ॥ ६ ॥ करे तब गाम पुकार पुकार, जंमारी सबेय  
 पुकार पुकार ॥ करो अब वहार नाथ दयार,  
 गयो किहां आज गरीव निवाज, चढो अब  
 बाहर राखण लाज ॥ ७

## ॥ दोहा ॥

॥ ऊण समे कोठ शेठको, बहाण तारण काज ॥  
 गये अधिष्ठायक नाथजी, जेरु गये बर्हा गाज ॥ १ ॥  
 सुणो अरज पृथिनाथजी, सहेर धुखेव मजार ॥ कियो  
 अकारज दुष्टने, शीघ्र चलो जन तार ॥ २ ॥ आप  
 सुरत महाराजजी, करवा जन सजास ॥ दो घोडे  
 दोनुं षडे, जेरु अरु प्रतिपास ॥ ३ ॥ निह्व कोप आपे  
 कियो, दश दिशि फोज हजार ॥ मार मार चोत  
 रफधे, जई अमाई स्यार ॥ ४ ॥

## ॥ जुजगप्रयात वद ॥

॥ कूकू कूकू कूकू बहे कोक घाणं, सणणं सणण  
 तीर तरकस्त घाणं ॥ घुषाके धमाके बहे नास गोसा,  
 जिस्ता कर्कसा जम्मरा नयण मोसा ॥ १ ॥ कितें अं  
 गपे शबरा घाव सागे, किते मारये कपते दूर जागे ॥  
 किते वंतपे तरण खेवे वराका, किते थरथरे त्रास होवे  
 निराका ॥ २ ॥ किते रसुध्वा इल्लहा पुकारे, किते  
 दीन छेके खुदापे संजारे ॥ किते नाथपे केशरां खुन  
 माने, किते नाथकृ जागती जोत जाने ॥ ३ ॥ सदा  
 शिवने घाव सगो अटारे, पुनी जाउ अशयंत दोनु

संहारे ॥ बसो कोप जानी सवे फोज चाजी, हुइ  
 केशरी नाथरी जीत बाजी ॥ ४ ॥ सदाशिवने आखनी  
 अटक लीनो, सवा पांचशे रुकमरा खून दीनो ॥ ईस्यो  
 नाथ धुखेवरो मई गाजी, सदा केशरानाथरी जीत  
 बाजी ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ या विध कलियुग जगजना, तारथा कइ जिनराज ॥  
 दीपविजय कविराजकुं, महेर करो महाराज ॥ १ ॥

( मोतीदाम ठंड )

॥ तुंहि नव निद्ध तुंहि अरु सिद्ध, तुंहि मन वं-  
 षित वंषित रिद्ध ॥ तुंहि सरदार तुंहि किरतार, तुंहि  
 सरणागत दीनदयाल ॥ १ ॥ तुंहि घटकुंज तुंहि गवि  
 धेन, तुंहि सुरवृह तुंहि मम सेन ॥ तुंहि दडणावत  
 दायक देव, तुंहि विसरोम तुंहि वरुसेव ॥ २ ॥ तुंहि  
 मम प्राण आधार जरूर, तुंहि मम इडित दायक नूर  
 ॥ तुंहि मम चूप तुंहि मम रिद्ध जंकार अगाह ॥ ३ ॥  
 तुंहि मम मंत्र तुंहि मम यंत्र, तुंहि मम सत्य तुंहि  
 मन तंत्र ॥ तुंहि गहनायक तुंहि श्रीपूज्य, तुंहि मम  
 पूज्य तुंहि जग पूज्य ॥ ४ ॥



## ॥ छावणी ॥

॥ नाथ घुसेवा कीरत सुनके, देश देश नृप आवत  
 हे ॥ केशरमें गरकाव रहेथे केशरनाथ कहावत हे  
 ॥ १ ॥ शहर परगणे देश देशावर, फिरे दुहाइनाथ  
 नकी ॥ हिंदु मुसल्ल वरु राणा हाजर, पूरे इच्छित  
 सब मनकी ॥ २ ॥ जलघट अलघट घाट घाटमें, राण  
 रावण दुःख दूर हरे ॥ इकचित्त ध्याने जे नित्य समरे,  
 अस्वय खजाना अमर जरे ॥ ३ ॥ धिधिमप धिधिमप  
 धमप धमप मप, तास पखावज राजत हे ॥ गरुगरुदों  
 गरुगरुदों गरुगरुदों, धोंधों नोषत वाजत  
 हे ॥ ४ ॥ हिंदुपति पातशाह उदेपुर, श्रीमसिंहके  
 राजनमें ॥ एह छावणी सूध घनाई, सकल सबके  
 सागनमे ॥ ५ ॥ सबत अठार पञ्चोत्तर वर्षे, फागुण  
 सुदि तेरस दिवसे ॥ मगलके दिन दीपविजयकु, दर  
 सन परसन दो उलसे ॥ ६ ॥

॥ कलश ठप्पय ठइ ॥

॥ समयरसन जग सरन, तीन लोक कस्मिमल  
 हरन ॥ धुनि घरसत जल भरन, जरन पोप पावन  
 करन ॥ जुगल धर्म नीति हरन. सब करम ठंघ घ

न जरन ॥ मोहमल्ल अरि दरन सुकनका, वरन  
सुध चरन ॥ इंद्र चंद्र मद जुगल सेवन, जगत वि  
इंद्र तारन तरन ॥ दीपविजय कविरज बहादुर,  
ऋषजनाथ असरन सरन ॥ १ ॥

॥ पुनः उप्यय ठंद् ॥

॥ ऋषजनाथ महाराज, सबे दुःखदारिद्र्य जंजन ॥  
ऋषजनाथ महाराज, सबे चूप मनरंजन ॥ ऋषज-  
नाथ पृथ्विनाथ, समरथो बाहर धाये ॥ ऋषजनाथ  
पृथ्विनाथ, मंगल नाम गवाये ॥ दीपविजय कवि-  
राज बहादुर, खलक मुलक हाजर रहे ॥ कलिजुग  
जायो देव तुं, सुर नर सब कीरत कहे ॥ २ ॥

॥ इति श्री श्रीमंतश्रीआतपन्नधारक श्रीत्रिलोकी  
पातशाह महाराजाधिराज चक्रवर्तीनरेंद्रसुरींद्रसेवितच-  
रणारविंद श्रीऋषजनाथजीकी लावणी स० ॥ ७६ ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजीनी लावणी सत्याशीमी ॥

॥ नेमनाथ मोरी अरज सुनीजे, में हुं दासी चरणुंकी  
॥ तोरण आये फिर मत जाउं पिया, तुमकुं सोगन  
यादवकी ॥ नेम० ॥ १ ॥ जान लेइ तुम व्याहन आये,  
लारे सेना साधवकी नपन्य न्नेटि कुल यादव आये,

ए अक्षर नहि फिरनुंकी ॥ नेम० ॥ २ ॥ रघ फिराके  
 गिरिवर धाये, हमकु ठकी नव जवकी ॥ मेरे सांभरे  
 श्याम सखूने, अक्ष तो हु नहि रहेनेकी ॥ नेम० ॥  
 ॥ ३ ॥ सुण सजनी मे तोकु कहू तुं, देखुं शोभा गि  
 रिवरकी ॥ नेम श्यामकु देखी आणंद, तत्क्षण पाये  
 परनेकी ॥ नेम० ॥ ४ ॥ राजुख सुदरी तिहांपीनि  
 कसी, जाइ षडी दुके सरकी ॥ मातपिता धधव सहु  
 ठांकी, जाशु संगे जादवकी ॥ नेम० ॥ ५ ॥ हाथजो  
 रुके धिनवे राजुख, घात सुणो पियु मुऊ धरकी ॥ ह  
 मकु ठांरु षछे निरधारी, अक्ष हुं प्रीतम सरणुंकी ॥  
 नेम० ॥ ६ ॥ नेम कहे तु सुण हो राजुख, विपयारस  
 ठे विष सरखी ॥ ए ससार असार निरतर, कर क  
 रनी एक सरनुंकी ॥ नेम० ॥ ७ ॥ पियुजी पासें संघ  
 म छीनो, जिनसें कारज सरनुकी ॥ तपस्या करिन  
 उत्तम करणी, ए जषपार उतरनुकी ॥ नेम० ॥ ८ ॥  
 पियुजी पहेसां राजुख नारी, पहोतां ठे परमपदकी ॥  
 कवल पाये नेम सिधाये, पही शोभा हे जिनकी ॥  
 नेम० ॥ ९ ॥ चतुर कुशख तो कहत छावनी, जिनसें  
 कारज सरनुकी ॥ अरिहत ध्यान धरो दिखमांछे. फिर

फेरा नहि फिरनुंकी ॥ नेम० १० ॥ इति ॥ ७७ ॥

॥ अथ श्रीपारसनाथनी लावणी अठयाशीमी ॥

॥ तेना गावत रंग चंगशुं, ज्ञानध्यानसें खूब खका

॥ तीन लोकमें सच्चा सांढेव, पारसनाथ अवतार वनां

॥ १ ॥ सहसें दिल लगा निशानी, उपर हे निगोवानी ॥

अंजलिगत जल जरया जैसा, जरोंसा पिरुका ऐसा

॥ २ ॥ औरत उर महेल क्या करनां, ठोरु कर एक

दिन चलनां ॥ तेरा नहि कोइ कीसी बातें, चलेगा

एकला रातें ॥ ३ ॥ हम याद करे अरुंग प्रचुसें, जा

मिले गौतमही हमसें ॥ सैयुं यो रोज दिल बेठो, सदा

शुजवीर घरे बेठो ॥ ४ ॥ अरे जिनराज मेरा सच्चा,

तेरे बिन सबी काम कच्चा ॥ नज जन तुंहि अरि-

हंत जगवंत साधु संत संत, थैथा घटमें खेलता

परमात्मा ॥५॥ इति ॥७७॥

॥ अथ श्रीपारसनाथनी लावणी नेवाशीमी ॥

॥ पारसनाथ विख्यात जगतमें जिनशासनमें जय-

कारी ॥ जस गुण महिमा अपरंपार हे, ध्यान धरे सुर

नरनारी ॥ ए आंकणी ॥ नाथ निरंजन नवदुःख नंजन,

तत्त्वज्ञानके दरिया हे ॥ ज्योतिस्वरूपी जगदानंदन.

जग जस कीर्ति बरिया हे ॥ पा० ॥१॥ नगर घनारसी  
मरते जगमें, अश्वसेन नृप अधिकारी ॥ वामाकूखें  
कुस अजुवाखण, प्रगठ्या पारस पटधारी ॥ पा० ॥२॥  
नरक निगोद जग्या अजुवाखा, आसन कप्या सुरपति  
का ॥ ठपन दिक्कुमरी करवा आह, जन्म महोत्सव  
जगपतिका ॥ पा० ॥ ३ ॥ घोसठ सुरपति प्रणमी प्र  
जुने, मेरु गिरि खई न्हवरावे ॥ करी महोत्सव माता  
पासे, मूकी सुर सुरगे जावे ॥ पा० ॥ ४ ॥ अनुक्रमे  
जोधन पाया जिनजी, विषयात्समें वरणावे ॥ मात  
पिता करी हरखे महोत्सव, राणो प्रजावती परणावे  
॥ पा० ॥ ५ ॥ अद्भुत रूप अनूपम जोमी, दपती  
विखसे सुख सारा ॥ महेख मनोहर मनकी मोजां,  
प्रेम पुरातन धरी प्यारा ॥ पा० ॥ ६ ॥ एक दिन गोंखिं  
रमतां रस जर, सारी पासा सुखकारी ॥ छोक कुखा  
हृष कौतुक करतां जातां देखी नरनागे ॥ पा० ॥ ७ ॥  
पास कुमर तव पूठठ प्रेमे, कहां चखत हे अन सारे ॥  
छोक कहे एक आये तापस, कठोरके हे खमनारे  
॥ पा० ॥ ८ ॥ खसक चले दुनियां दरसनकुं, छेइ पू  
जाको पतराखी ॥ मिष्टोन्नादिक मोदक मेवो, स्थान

॥ नकुं घृतसाली ॥ पा० ॥ ए ॥ सुनके पास कुभर पण  
 जोवा, आवे आश्रम काननमें ॥ दीठा जोगी तपही  
 तपता, तमक तेजसें ताननमें ॥ पा० ॥ १० ॥ पंचकुंरु  
 पावक परजलता, अधविच वेठा आसनसें ॥ ऊर्ध्व  
 जुजा करी ग्रही जपमाला, ध्यान धरंता नासनसें ॥  
 ॥ पा० ॥ ११ ॥ जूयें लूठंती जहारो लेइ, इगमुद्रित  
 करी पुनियासें ॥ लाल सिंहर लपेटा चालें, अंग-  
 विभूति जुसियासें ॥ पा० ॥ १२ ॥ नाग जलंता देखी  
 दयाला, अवधिज्ञान धरी माननसें ॥ कहे जोगीकुं  
 क्या तन जाले, जीवदया विन जाननसे ॥ पा० ॥ १३ ॥  
 तव जोगी कहे सुणो नृपनंदन, मत ठेका तुम मुनिय-  
 नकों ॥ गज घोडा रथ खेल खेलाउं, जाउं करावो  
 पुनियनकों ॥ पा० ॥ १४ ॥ हम जोगी अवधूत एकी-  
 ला, वनवासी विचरंदा हे ॥ गुरुके ज्ञान सही घट  
 चींतर, जोगी जिहां शंकरंदा हे ॥ पा० ॥ १५ ॥ कोना  
 गुरु तुज जेख धराया, नवि उलखायो धरमनकु ॥  
 दीक्षा जरम जराया तुजकुं, काया कष्टज करननकुं  
 ॥ पा० ॥ १६ ॥ हम गुरु धरम पिठाना एसें,, माय-  
 ममता नवि धरता ॥ कंचन कामिनी संग न करता,

अविनाशी पद अनुसरता ॥ पा० ॥ १७ ॥ काष्ठचित्तोंसे  
 नाग निकाखा, कान सुनाया नव पदकुं ॥ प्रभुदरसें  
 परमेष्ठिन्यानें छइ अवतार असुर इदकु ॥ पा० ॥ १८ ॥  
 पास कुमरकी थई परशंसा, कमठ लजाणा लोकनमें ॥  
 छेप भरतो पास प्रभु पर, रहेतो अहोनिश शोकनमें  
 ॥ पा० ॥ १९ ॥ कष्टक्रिया अज्ञान करीने, देव थयो  
 घन गर्जनको ॥ अवधि प्रयुजी घेर सुजावे, पूरव  
 पारस तर्जनको ॥ पा० ॥ २० ॥ निज घेर आधी नाथ  
 निहाखे, चित्त राजुख नेमीने ॥ सुख सासरं तजी  
 तनमनथी, घरसी दानें घत छीने ॥ पा० ॥ २१ ॥ तप  
 जप सजम समता सगे, रहेता अहोनिश प्याननमें ॥  
 वरुतखे उजा काठस्सर्गें, तव ऊरु छागी तासनमें ॥  
 ॥ पा० ॥ २२ ॥ जिननासा सगे नीर नराणां, तोजी न  
 चक्षिया प्याननसें ॥ आसन कंपित देखत अपनां,  
 धरणीधर जुवे ज्ञाननसें ॥ पा० ॥ २३ ॥ दमता देखी  
 अपना साहेय, कमठासुर मद हारणकु ॥ धरणीधर  
 पदायती थावे, श्रीजिन कष्ट निवारणकुं ॥ पा० ॥  
 ॥ २४ ॥ सदसपणा शिरठत्र घनाधी, धरणीधर रहे  
 कर जोनी ॥ पदायतीकुं छही शिर साही, कमठ ह

गायो जइ दोली ॥ पा० ॥ २५ ॥ हुंहुजिनाद वजाया  
 वे, रंग राग गुण लच्चरंता ॥ धरणीधर पद्मावती  
 ॥चे, ठमके पायल पग धरता ॥ पा० ॥ २ ॥ जांऊर  
 णके नेपूर रणके, घमके घुघरी पायनमें ॥ घुमरी देता  
 ठूठण लेता ततथई तान मचावनमें ॥ पा० ॥ २७ ॥  
 त्व नवि चांति नाचती नाटव, ललि ललि नाक नमा  
 त हे ॥ अष्ट करम दल दूर हठावी, शुक्लध्यान प्रभु  
 ध्यावत हे ॥ पा० ॥ २८ ॥ नाथके चरणे सीस नमावी,  
 अमर गया निज आवासे ॥ प्रगट्या केवल ज्ञान प्रभु-  
 कुं, पहाता शिवपुर सहवासे ॥ पा० ॥ २९ ॥ ज्ञान  
 ध्यानसें गोठ मचावा, रंग मचावो अनुभवको ॥ जिन-  
 गुण गावो चावना चावो, ताप शमावो चव दवको ॥  
 पा० ॥ ३० ॥ अधिक मास उगणीशेएके, श्रावण  
 मासें सुदि शाली ॥ रंगविजय रही राजनगरमें, कही  
 लावनी लटकाली ॥ पा० ॥ ३१ ॥ इति ॥ ८९ ॥

॥ अथ श्रीपारसनाथनी लावणी नेवुंसी ॥

॥ प्रभु पारस चज ले चाई, ज्ञानध्यान संयम स-  
 मकितसें, सुधरे कमाई ॥ मेल मन अंतरकी आंगी



करम उदय चेतनकुं पनी जय, निगोदकी घांटी ॥ वृ  
 टक ॥ महादुख पाया, महाराज महादुख पाया,  
 जिनवर मुखमें नहि गाया, नहि तिब्रजर शाता पाइ  
 ॥ झा० ॥ १ ॥ तन धन जोषन नहि श्रपना, कुटुंब  
 कशीला मेनी मंदिर, रजनीका सुपनां ॥ वृ० सषी  
 यिरसाखे ॥ महा० ॥ संपत् संगत नहीं आये, फिर  
 चेतन मन पस्तावे धरम निज कर से सुखदाइ ॥  
 झा० ॥ २ ॥ जरम अंतरगतनें खागो, विषय हेत कु  
 मतिसें विषय रस, चाखणकु खागो ॥ वृ० ॥ पापसंग  
 चाखे ॥ महा० ॥ चेतनकु नरकमें नाखे, जिनमारगकुं  
 नहि चालें, जपो जिनवरकु खय लाई ॥ झा० ॥ ३ ॥  
 मेरा पाप जवोजवका कापो, मुक्तिदान अमर पुर  
 पदवी, सेषककु आपो, ॥ वृ० ॥ विनति मानो ॥ महा०  
 ॥ अरदास हेयामां आनो, मुजकु श्रपनो करी जानो,  
 वेष दीठा जिनवर नाई ॥ झा० ॥ ४ ॥ अरज आप  
 कों सेवक करता, जषजसमाहि पार उमारो, में निगो  
 दरसें करता ॥ वृ० ॥ श्रीजिनवाणी ॥ महा० ॥ अमृत  
 सु अधिकी जाणी, जिनदास हर्षयामां आणी, कीर्ति  
 जिनवरकी में गाइ ॥ झा० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथजीनी लावणी एकांठमी ॥

॥ प्रभु पास जिणंदा, दरसन देखी आणंदा, मुख  
 पूनमका चंदा, सास कमलकी सुगंधें जी ॥ निर्मल  
 कांति अति रूपात्री, सब कहेंते जगवाने जी ॥ ए  
 आंकणी ॥ बालपणेके म्याने, प्रभु हे बहोत सियाने,  
 चले कमठा पूजने, हुवे घोडे पर स्वारे जी ॥ आजु-  
 बाजु सब चले सिपाइ, गमहंदा चोपदारे जी ॥ देशी  
 फेंकती ॥ नगरी वाणारसी हे गाम रे, उहां तापसका  
 एक धाम रे, करता अगनानी कोम रे, पाउं वांध्या  
 ऊनने ऊंचे, शीश गया फिर नीचें, नहि दया धरम  
 रुचे, ऊने धिग्वाइती तो अगनेंजी ॥ करुणावंत कृ-  
 पाके सागर, आये वात देखने जी ॥ प्र० ॥ १ ॥ ऊ-  
 सकों कहेंते जगवान, सुण तापस अजाण, तुं तो हे  
 अगनान, नहि खटकायकी तो खबरे ॥ नाग तो ए-  
 कीला जलता, कोष्ठके अंदरे जी ॥ प्रभु निकाला ब-  
 हार, सब देखे नर नार, सेबक दिये नवकार, धरणी-  
 धर पदवी पाया जी ॥ देशी फेंकती ॥ हुये धरणीधर  
 बडवंती रे, नागरायकी हो गई गति रे, अगिले ज-  
 वकी वात हुई ठती रे ॥ प्रभु किया उपगार. टिया

मत्र नवकार, तुम हो जगत आधार, ऐसी स्तुति का  
 रणें जी ॥ धरणीराय पार्श्वनाथ सासत माने जी ॥ प्र०  
 ॥ ३ ॥ प्रजु पारस स्वामी, हुवे मुगतिके कामी, सुख  
 ससार वामी, चारित्र्य अगकार कीया जी ॥ मसाण  
 जूमिके स्याने जाकर, काठस्सग्न अचने लीया जी ॥  
 कमठकी हुई पूरी, मरि हुवा मेघमाखी डूरी, ठने घात  
 विचारी मेरा, दाव तो आजे आया जी ॥ देशी फें  
 करी ॥ वैरजाव आब्या दिख मगने रे, खुब घटा अ  
 नाथी गगने रे, वरसाद पाणी पवनें रे, ज्यां थे पा  
 रस जगवान, प्रजु चुकता नहि ध्यान, पाणी चढार  
 पहेली चढाई धूल, धरणीधर राय हे डूर, ठनके क  
 पतो आसनें जी ॥ प्र० ॥ ३ ॥ पदमावती धरणीधर,  
 रूप महोखदमी कर कर, वेगया खधपर, एतो पास प्रजु  
 किरतारे जी ॥ सहस्रपणीका नाग हो कर, उग्र  
 किया शिरपरें जी ॥ मेघमाखी मस्तान, क्यु करता  
 तोफान, जुद्ध परता असमान, आज क्षेपी तेरी खपरे  
 जी ॥ मूढमति महापापी तु तो, क्यु उतरेगा जवपार  
 जी ॥ देशी फकती ॥ प्रजु पाये छगाया मेघमाखी  
 रे, घहोन तकसीर हुड हमारी रे, जाठ चरण

कमल बलिहारी रे, होय जयवंता जयकारी रे ॥ ज-  
 गतारक जिनदेवा, करे चोसठ इंद्र सेवा, तुम नामें  
 नवनिध मैवा, जवोजव हैं तोरे शरणें जी ॥ अष्ट करम  
 चकचूर लगे जवसागरमें तरनें जी ॥ प्र० ॥ ४ ॥ त्रै-  
 वीशमो जिनराया, एक शो बरसनुं आया, शिवनग-  
 रीकुं सिधाया जी ॥ जन्म मरण जय टाली ए तो, अ-  
 व्याबाध सुख पाया जी ॥ में तो प्रणमुं प्रभु पास, ज  
 वोजव तारो दास, पूरो मनकी आश ,मेंने गुण त-  
 मारा गाया जी ॥ आवागमन मिट जाय, ऐसी की-  
 रपां करो जिनराया जी ॥ देशी फेंकती ॥ तुम साचा  
 साहिव मेरा रे, मिटिया चोराशी फेरा रे, में सेबक ज-  
 वोजव तेरा रे, देखाज मुगतिका डेरा रे, सद्गुरु दिये  
 ज्ञान , बूटे शब्दोके वान, गाजे शास्त्र प्रमाण, कुज स-  
 कल सबको दिये माने जी, एकेक शब्दें तिन तिन क-  
 रियां कोई विरदा पीठाने जी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ जीवउपदेशनी लावणी वाणुंमी ॥

॥ सत्य धरमकुं ठोरु अधर्मे, परुनां ना चइएं ॥  
 तीर्थ ठोरुके उर कुंगरपर, चरुनां ना चइएं ॥ सत्त  
 , गुरुकुं ठोरु कुगुरुकुं सेवनां ना चइएं ॥ कल्पवृक्षकुं

ठोरु लिष फल, खानां ना चक्षुं ॥ जिनमदिरकु  
 ठोरु गुणिका घर, जानां ना चक्षु ॥ शीयल घतकु  
 ठोरु तरियाकु, श्रुनां ना चक्षुं ॥ ती० ॥ १ ॥ दया  
 धरमकु ठोरु हिंसाकु, करनां ना चक्षु ॥ सुमति त  
 जके चार कपायकु, धरनां ना चक्षु ॥ गुरुगम सखा  
 मखा नीचकी संगत, करनां ना चक्षु ॥ गगाजलकु  
 ठोरु द्वारजल, न्हाणां ना चक्षु ॥ जिन आगमकु  
 ठोरु विकथामे, परनां ना चक्षु ॥ ती० ॥ २ ॥ वचन  
 शुद्ध प्रकाश कीसी कु गाखी, देनां ना चक्षु ॥ सु  
 कृत तजके कीसीका अदत्त, खेनां ना चक्षु ॥ अथ  
 गुण पारका कट्टी मरमका बचन, कहेनां ना चक्षु ॥  
 नगर ठोरुके घात उजरुमे, रहेनां ना चक्षु ॥ बुरी  
 जखी सुणी घात कीसीसें नाहक, खरना ना चक्षु  
 ॥ ती० ॥ ३ ॥ मार मार मन मार ठर प्राणीकु, मा  
 रनां ना चक्षु ॥ घत ठोरुके पच इद्रियकु, पालनां  
 ना चक्षु ॥ परसंपतकुं देख आपणा जीव, धाखनां  
 ना चक्षु ॥ चतुर हो के रतन कुयेमे, कारनां ना  
 चक्षु ॥ दीपचद यु कहे किस्ती मूरग्यसें, श्रुनां ना  
 चक्षु ॥ ती० ॥ ४ ॥ इति ॥ ए२ ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजीनी लावणी त्राणुंमी ॥

॥ मेरो बालम बनमें गयोरी, मा मेरो बालम व-  
नमें गयो ॥ मेरो कंथ हाथ नवि रह्योरि ॥ मा मेरो ॥

ए आंकणी ॥ महेल मलपती अवर नारीको, रति  
न मान्यो कह्यो ॥ आत्मको निज कारज करतां, पंथ  
मुक्तिसैं लह्योरी ॥ मा ॥ १ ॥ मोहजालको फंद

काट कर, झानानंदीमांहे थयो ॥ नरक निगोदको  
महेल सासतो, सो तो सघलो छूर थयोरी ॥ मा ॥

॥ २ ॥ बावीस परिसहको दुःख जारी, जो निज  
तन परखियो ॥ अष्ट करमकुं नबलां कीजे, अज्ञान

थू थू जयोरी ॥ मा ॥ ३ ॥ करम निज कुटुंब कंद  
वाला, केवल प्रगटायो ॥ विषय विपत्तिके सागरमांहे,  
जिनदास जरमायोरी ॥ मा ॥ ४ ॥ ए३ ॥

॥ अथ जीवलपदेशनी लावणी चोराणुंमी ॥

॥ निर्धनका धनवान हुवा तब, दानपुण्य करनां  
चश्यें ॥ श्रावण हो के हो जवि प्राणी, द्वादशव्रत धरनां

चश्यें ॥ मनुष्यजनम मिल गया तेरे तांइ, दया धरम  
करनां चश्यें ॥ तीन रतनकुं ओर समकितकुं, शुद्ध स-

मकित मान्या चश्यें ॥ बनी फजरमें कुमति तजकें

जिनमदिर जानां च्छर्ये ॥ विषफल तजके अमृत फ  
 लको, अतुरा तुम खानां च्छर्ये ॥ सात व्यसनकु ठोन  
 नीम दस नित्य करनां च्छर्ये ॥ आ० ॥ १ ॥ उत्तम  
 कुलकी तरिया हो के, पातिव्रत रखनां च्छर्ये ॥ पमित  
 दुई जधि प्राणि मिजससमे, जखनां ना च्छर्ये ॥ उप  
 शम उग्या वृद्ध जिनोका, अमृतफल खानां च्छर्ये ॥  
 सुदृढ करणी करो सखी तुम, अकृतसे करनां च्छर्ये ॥  
 आ० ॥ २ ॥ सीस मुंजा कर चेखा दुवा तव, सुगुरु  
 वचन मान्यां च्छर्ये ॥ प्रोजन हो के हो जधि प्राणी,  
 अजह्न खानां नहि च्छर्ये ॥ जिनशासनका प्रेम्ब स्त्रिया  
 तव, आचारसे च्छर्यां च्छर्ये ॥ काम क्रोध माया खोज  
 उनकु, दूर तजनां च्छर्ये ॥ आ० ॥ ३ ॥ ज्यां ज्यां ती  
 रथ हे जिनधरका, त्यां सयकु च्छर्यां च्छर्ये ॥ काया  
 शक्ति हो जधि प्राणी, तुमकु व्रत करनां च्छर्ये ॥ वार  
 वार नरजय नहि भिखता, ए याद रखनां ॥ च्छर्ये ॥  
 सप्तगुरुकी शीख सुनके, खिजमतमे रवेनां च्छर्ये ॥  
 दीपचढ कर जोनी कहे मेरी शीख, रवे भरनां च्छर्ये  
 ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥ ए४ ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजीनी लावणी पंचाङ्गमी ॥

॥ मेरा हठ मत कर रे जननी, मे जाऊंगी गिर-  
नार, दीक्षा लेऊंगी नवतरणी ॥ ए आंकणी ॥ ठपन  
कोटि कुलजादव आये, खुब वरात बनी ॥ तोरणथी  
ए फेर चला जद, पशुअन वचन सुणी ॥ मे० ॥ १ ॥  
संग समुद्रविजय बलनद्र, मुरारि के सजनी ॥ जई  
मनावो नेमनाथकुं, आ ठवि कोण बनी ॥ मे० ॥ २ ॥  
मात पितादिक सरवे कुटुंबी, दामा करो सजनी ॥ हम  
रहेनेकी नांहि नली हे, करुं श्याम मिलनी ॥ मे० ॥  
३ ॥ अवधि धरी के इंदर आये, पुरुषाकार धरी ॥  
कीसविध पर कहुं राजिमती मिले, प्रिचुवन नाथ  
धनी ॥ मे० ॥ ४ ॥ राजिमती मन सुमति ले कर,  
पियुशुं प्रीत धरी ॥ घोपनमा दिन पतिसें पहेली,  
भावशुं शिवमंदिर संचरी ॥ मे० ॥ ५ ॥ एए ॥

॥ अथ विनीषणे रावणने सीता पाठी आप-  
वा माटे करेलो उपदेशनी लावणी बनुंमी ॥

॥ कहे विनीषण सुण जाइ रावण, अरज करुं तुं  
हितकारी ॥ तीन खंरुको नाथ कहीजें, पाठी आपो  
परनारी ॥ ए आंकणी ॥ राजा जनकनी पुत्री कहीजें,



मिथिला नगरी अधिकारी ॥ जामरुझकी बेहिन क  
 हीजें, विद्याधरमे, सिरदारी ॥ ती० ॥ १ ॥ रामचन्द्रजीपे  
 धनुष्य चक्राया, सीता कीधी घरनारी ॥ विद्याधरक  
 जोर दिखाया, जब सीताकी ठोरु खारी ॥ ती० ॥ २ ॥  
 रामचन्द्रका ठोटा नाई, फोटी शिखानें ऊठावी ॥ सी  
 ताना ते देवर कहियें, लक्ष्मण नाम जे कहेषोवी ॥  
 ॥ ती० ॥ ३ ॥ ते घरनी ठे एह सुदरी, सतीयोमांहे  
 सिरदारी ॥ ठर पुरुषकु नहि आदरे, जो होय इबर  
 श्वतारी ॥ ती० ॥ ४ ॥ सुपनामां नहि बठे सुदर,  
 कीसी गिणतमें सवी तेरी ॥ तु तो राजो अन्ननो कीनो,  
 ठोरु दीयो ठनकी नारी ॥ ती० ॥ ५ ॥ जो तु इनका  
 संग न ठडे, आंख मीच कर अधिकारी ॥ काम श्रद्धिको  
 क्यों कर सुजे फोज दल हुवा तैयारी ॥ ती० ॥ ६ ॥  
 रामचन्द्र सुग्रीव नमाये, विद्याधरकी शिरदारी ॥ वि  
 द्याधरदल सह जगाया, रामचन्द्र हुवा तैयारी ॥ ती०  
 ॥ ७ ॥ कहे मान मेख दे सीता, नीकल खंका खे घेरी  
 ॥ घणा सुनट तुज हार्या जाशे, करशे ते खंका बेरी ॥  
 ती० ॥ ८ ॥ तोरा जोरा कांही न आसे, परतरीया  
 कीधी घेरी ॥ सुपुरुसाको पडे पाधरी अगल नीयो

हृष्टे धोरी ॥ ती० ॥ ए ॥ तुं जाणे हुं घणो जोरावर,  
 तीन खंरुका सिरदारे ॥ सीता पाठी नहि मेळे तो,  
 रामचंद्रजी नहीं हारे ॥ ती० ॥ १० ॥ ए नारीनो संग  
 करे तो, होशे घणी खराबी तोरी ॥ दुनियामें फजेती  
 होवे, नरचव जनसंतर हारी ॥ ती० ॥ ११ ॥ येह मंदिर ने  
 येह माळीयां, सहस वत्रीशे तुज नारी ॥ एक सीताने  
 कारण जाइ, होवे नरकका अधिकारी ॥ ती० ॥ १२ ॥  
 कहुं मान मेळी दे सीता, तो करशुं सेवा तारी ॥  
 नहि तो ऊठीने अमें जाशुं, रामचंद्र शरणा धारी ॥  
 ती० ॥ १३ ॥ रीश करी तव बोटयो रावण, किसी  
 गणती राखुं तारी ॥ सीताने पाठी नहि मेळुं, करशुं  
 मारी पट्टनारी ॥ ती० ॥ १४ ॥ विन्नीषण ऊठीने  
 चाट्य, तीस अहोहिणी लइ सारी ॥ रामचंद्र कहे  
 आवो लंकेसर, आदर मान दियो चारी ॥ ती० ॥ १५ ॥  
 हितशीख नहीं मानी दुष्टें, नरक मेळ पहोंच्यो जाई ॥  
 कहे जिनदास समज जा चेतन, सुगुरुवचन चित्त  
 सुखदाई ॥ ती० ॥ १६ ॥ इति ॥ ए६ ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वजिन लावणी सत्ताणुंमी ॥

॥ सुणीयो रे सुणीयो सुगुण तमें, जो चाहो चव

जख तरनां ॥ परिणति सममें धिप फलस रिखे, सकस  
 धिपय सुख परिहरनां ॥ सु० ॥ १ ॥ ए आं कणी ॥  
 जगदानदन पात्र निकदन, जगददन जिनके धरणां ॥  
 ऐसे प्रजु पोरस जिनधरके नित, निज धिसमें समरन  
 धरनां ॥ सु० ॥ २ ॥ इड चड नागेंड सुरासुर, नित  
 करते जसु गुण वग्ना ॥ नाग नागिणी जुगस तार फा,  
 जाये कमठका मद हरणा ॥ सु० ॥ ३ ॥ गुणगजीरता  
 ये जिन जीस्यो, धरण जखधि खयंचूरमणा ॥ धीरज  
 गुणते जीत लोयो प्रजु, सडू नीर धरणीधरना ॥ सु० ॥  
 ४ ॥ सजख जखद गरजत सम मधुरा, जिनवाणी  
 जगमत हरनां ॥ प्रजुके वधन सिंधुते प्रगटी, निरुपम  
 अमृत रस ऊरनां ॥ सु० ॥ ५ ॥ जवि जन सकस  
 मोह अति हरखित, निसुणी जये सब मद सरनां ॥  
 कारण पात्र करी पान करनते, डु लोपे है जव वन  
 फिरनां ॥ सु० ॥ ६ ॥ एसे निमपद सफस करणते,  
 करीये कर्मकी निर्जरनां ॥ तिनसे जिनधर तुरत छहे  
 हे, अनुपम शिवरमणी धरनां ॥ सु० ॥ ७ ॥ अति  
 विशाख जवसिंधु तरणको, जये श्याम तरुणी धरनां ॥  
 तीन जगत जिन शिरपर शिरपे, जिनकी आणा गुण

वरनां ॥ सु० ॥ ७ ॥ जगत बंधु जगत्सल सुणियें,  
 अरज एह मेरी अवधरनां ॥ अहित निवारक करुणा  
 धारक, सुनजर करी करियें करुना ॥ सु० ॥ ८ ॥ दुरित  
 निवारण मंगल कारण, तुहो प्रभु अशरण शरणां ॥  
 तुम प्रभु चरण शरण शिवचंदके, होजो प्रतिदिन सुख-  
 करनां सु० ॥ १० ॥ ९७ ॥

॥ अथ श्रीगोमीपार्श्वनाथनी लावणी अष्टाष्टमी ॥

॥ सुणो सधणा एसे सांइ सबूणा, घनि घनि मेरे  
 दिल आवे ॥ लाख सोवन में देऊं हजूरा, गोमी पास  
 कोई दिखलावे ॥ ९ आंकणी ॥ चरण शरण हे तरण  
 चविककुं, करण ठरण हे शिवसुखको ॥ हरण विघन  
 घन पवन मरण हे, धरणरूप हे श्रीवृखको ॥ जग-  
 दानंद त्रिलोकन अमुना, जनक तेजकुं हठावे ॥ लाख  
 सोवन में देऊं हजूरा, गोमी पास कोई दिखलावे ॥१॥  
 काशी बनारस चंग सुरंगी, अश्वसेन अंबा वामा ॥  
 जोवनजोर गोरसें जोगी, कुंवर है पारस नामा ॥ आ-  
 पहि सोखे गोखमें बेठे, पातर लोककुं नचावे ॥ लाख०  
 ॥ गो० ॥ १ ॥ नव नव चारी वेश समारी, जाते जिन  
 जनने देखी ॥ जिने बोलाया कहे दरिद्री, बंजण

सुखी दुनियां देखी ॥ कमठ नाम तापस जये तुम  
 वन, पचासि तनु तपावे ॥ साख० ॥ गो० ॥ ३ ॥ उनकुं  
 नमत पूजत जन सुखसें, जाते यु प्रजुजी सुणीने ॥  
 बस हसकारी नइ असाधारी, देखन जिन आया मु  
 निने ॥ बडे लकडेमें नागहि जसता, देखी कमठकु  
 बोलावे ॥ साख० ॥ गो० ॥ ४ ॥ सुण हो तपसी क्यों  
 तुम जपसी, जीवदया दिन फल नावे ॥ क्रोधी क  
 मठ कहे अश्व खेलाठ, धरम बात तुम क्यों आवे ॥  
 सांई ठुकम सेवक जन तामें, देखा मुनि फणी नि  
 कसावे ॥ साख० ॥ गो ॥ ५ ॥ नाग सुणत हे सेवके  
 मुखसें, सांइ दिखाया नवकारा ॥ क्रोधी कमठ ठुषो  
 मेघमाखी, धरयेँड छहीअवतारा ॥ वरसीदान वरसी  
 छइ दीक्षा, ध्यान छहे फालस्तग ठावे ॥ साख० ॥ गो०  
 ॥ ६ ॥ सांइ सुराधम नाण निहाखी, विकूवेँ अघकार  
 घटो ॥ परजजन जजन गिरि तरुआ, गीरद बहोत ध  
 नी विकटा ॥ ठतकट फटक गगन गरजनसें टहुक ट  
 हुक शिखी टहुकावे ॥ साख० ॥ गो० ॥ ७ ॥ दावजाखऊ  
 बके बीजखीयां, बादखीयां जसबुद ठांटे ॥ सांइके शिर  
 मूशख धारा, अयुं वरसावे मेघ घटे ॥ ध्यान अचख प्रजु

चंद्र पवनसे, मेरु कहो कुण कंपावे ॥ लाखण ॥ गो० ॥ ७ ॥  
 धरणराय पद्मावती आवे, जब नासायें जल जावे ॥  
 उपसर्ग टालो देव हकारे, पारस शरण चरण आवे ॥  
 नाटक देखत धरणरायको, मेघमात्री समकित पावे ॥  
 लाखण ॥ गो० ॥ ए ॥ केवल लई विहरी शिवमंदिर, अगुरु  
 लघु गुण नीपाया ॥ गोनी पास सांशरूप निहाली, जो  
 वंदे मन वच काया ॥ श्रीशुतवीरविजय सुरमंजरी,  
 अंब लेहरीयां सुख पावे ॥ ला० गो० ॥ १० ॥ ए० ॥

॥ अथ श्रीनेमजीनी लावणी नवाणुंमी ॥

॥ गयो महेलको खेल, सखी मोहें उजरु होय ला-  
 गे ॥ विरह वालमको यो जागे ॥ गयो हियाको हार,  
 नाथ दूर गये को दुःख दागे, दूर अबलासे उठ चागे  
 ॥ दोहा ॥ सोम सखूणो साहेबो, उर जाय गिरनार ॥  
 त्रिलसे शिवपुर सेजकु, तज कर राजुल नार ॥ प्रभु  
 मोहे दूर दीनी मूकी, किसीसैं चित्तसैं नां चूकी  
 ॥ १ ॥ पडे पलक नहीं चैन सखूणी, सूना मंदिरसैं ॥  
 पुरुष दूजाकुं कुन परसे ॥ मेरो पति बसो परबतमें,  
 सखी अब तन मेरो तरसे ॥ नेम बिन नैनां नीर ब-  
 रसे ॥ दोहा ॥ खबर नहीं पूठी उने, गुना किया में

कौन ॥ सदाइ दुर्वल बेखपें सो दोय लारे गौन ॥ १ ॥  
 सजन तेरो मुगरकी चूकी ॥ कि० ॥ १ ॥ कहां बल  
 कहां काठकी ढाया, कहां मलशे अन्न पाणी, नाथ  
 मेरो एसो निर्वाणी ॥ ज्यों तजे कांचली नाग इसी  
 विध, काया कर जानी ॥ गुण मेरो दिखमें नहीं आणी  
 ॥ दोहा ॥ इण जवमें जपनी नहीं, और पुरुषकी आश  
 ॥ नेम मोहेकु तज गया सो में धी छहुं वनवास ॥ ३ ॥  
 इयाम बिन गुना किया मूकी ॥ कि० ॥ ३ ॥ जसो ज  
 गतकी जाख, सखी संपतकु क्या करनी ॥ नेम मुज  
 गया अधर परनी ॥ दीनी मुजे ठटकाय, जान कर  
 जगलकी हरनी ॥ आदरी मुक्ति की करनी ॥ दोहा ॥  
 मनकुजरकु बश करो, प्रीतिं पासि शीख ॥ शुद्ध सम  
 साही हृदये भरो, सो छोया परसीख ॥ ४ ॥ बासम मोहे  
 थोकी चाव धूकी ॥ कि० ॥ ४ ॥ कीसी गयो पीहरको  
 प्यार, नार मेरे शिर धरता ॥ मेरो आदर कोइ नहीं  
 करता ॥ बिना पुरुषकी नार देख, सत्र जगमें जख  
 यखता ॥ आँखमें आँसूयो भरता ॥ दोहा ॥ मेखो मारा  
 नाथको, जगत होय दुःखदाय ॥ जूठ आँख मेरे  
 शिर भरे, सो तो सखो न जाय ॥ खसक मेरे खाल

बिना लूकी ॥ कि० ॥ ५ ॥ जबर जोर जोवनको  
 देख, लोग मसलां मोहि बोले ॥ मेरो निरणो कहो  
 कुण तोले ॥ नेमनाथ सुरपति रतिमें नहीं मोले, वसुं हुं  
 मुंगरकी उले ॥ दोहा ॥ आग लगो सुख सेजकुं, उर  
 मालक दीनी मूक ॥ फुल परवालां जोरहे, जिनदास  
 कहे मेरी चूक ॥ ६ ॥ मेरी छुर छुर काया सूकी ॥  
 किसीसें चित्तसें नां चूकी ॥ ६ ॥ एए ॥

॥ अथ श्रीनेमजीनी लावणी सोमी ॥

॥ नेमजी जान बनी चारी, देखनकुं आयें नर  
 नारी ॥ ए आंकणी ॥ अनंता घोडा ओर हाथी, मन  
 खरी गिनती नहीं आती ॥ उंट पर धजा जो फरराती,  
 गमकसें फिरती फरराती ॥ दोहा ॥ समुद्रविजयका  
 लाफिला, नेम उनुंका नाम ॥ राजूलदेकुं आये पर-  
 एवा, उग्रसेन घर ठाम ॥ प्रसन्न नई नगरी सब  
 सारी ॥ नेमजी जान बनी चारी ॥ १ ॥ कसुंबल वाघा  
 अति चारी, काने कुंरुल बवि हे न्यारी ॥ कलंगी  
 तूरा सुखकारी, माल गले मोतीयनकी मारी ॥ दोहा ॥  
 काने कुंरुल जगमगे, शीश खूब जलकार ॥ कोदि  
 जानुंकी करुं उपमा, शोभा अधिक अपार ॥ वाज



रक्षां वोजां टकसारी ॥ नेम० ॥ २ ॥ बूट रही ऊनकी  
 वरराई, व्याहनमें आये षडे नार्ई ॥ ऊरूखे राजुखे  
 आई, जोनकू देखी सुख पाई ॥ दोहा ॥ उग्रसेनजी  
 देखके, मनमें करे विचार ॥ बहोत जीव करी एकठा,  
 वामो नखो अपार ॥ करी सध जोजनकी त्यारी ॥  
 नेम० ॥ ३ ॥ नेमजी तोरण पर आये, पशुजीव स  
 षही कुरसाप ॥ नेमजी वचन फरमाये, पशुजीव का  
 येकू लाये ॥ दोहा ॥ याको जोजन होवसी, जान वा  
 सते एक ॥ एह वचन सुनी नेमजी, घरहर कपि देह  
 ॥ जावसें चढ गये गिरनारी ॥ नेम० ॥ ४ ॥ पीठेसु  
 राजुखे आइ हाथ जब पकड़्यो ठिनमांही ॥ कांहीं  
 तु जावे मेरी जाइ, ठर धर है तुऊ मोकसाई ॥  
 दोहा ॥ मेरे तो धर एकही, हो गया नेम कुमार ॥  
 ठर जुधनमें वर नहि, कोटो करो विचार ॥ दीक्षा  
 जद राजुखने धारी ॥ नेम० ॥ ५ ॥ सादेख्यां सधही  
 समजावे, हिये राजुखके नहि आवे ॥ जगत सध जुगो  
 दरसावे, मेरे मन नेम कुमार जावे ॥ दोहा ॥ तोख्या  
 कंकण दौरमा, तोख्या नवसर हार ॥ काजख टीकी  
 पान सोपारी, त्याग्यो सध सणगार ॥ सादेख्यां सधही

बिलखाणा ॥ नेम० ॥ ६ ॥ तज्या सब सोळे सिणगा-  
 रा, आचूषण रत्नजकित सारां ॥ लगे मोहे सबही  
 सुख आरा, ठोरु कर चाळी निरधारा ॥ दोहा ॥ मात  
 पिता परिवारकूं, तजतां न लागी वार ॥ विजोग कर  
 चली आपशुं, जाय चढी गिरनार ॥ जूरती ठोकी मा  
 प्यारी ॥ नेम० ॥ ७ ॥ दया दिल पशुअनकी आई,  
 त्याग जब कौनो ढिनमांइ ॥ नेम जिन गिरनारे जाई,  
 पशुके बंधन बुरुवांइ ॥ दोहा ॥ नेम राजुल गिरनारपें,  
 लीनो संजम दान ॥ नवलराम करी लावनी, उप-  
 न्यो केवलज्ञान ॥ जिनोकी किरिया बुद्धि सारी  
 ॥ नेम० ॥ ८ ॥ १०० ॥

॥ अथ आदिनाथजीनी लावणी एकसो एकमी ॥

॥ सरसती मोतो सुमतिकी दाता, तुंही विधाता  
 त्रिपुरारी ॥ अकल बुद्धि तुम दे हो ईश्वरी, कहूं ला-  
 वणी हृद प्यारी ॥ १ ॥ ऋषज देव तो बडे देव हे, उ-  
 नकी शोजा अति जारी ॥ धुलेवा नगरमें आप विराजे,  
 आदिनाथ प्रभु अधिकारी ॥ २ ॥ अनरु पर-  
 वता अनरु पहारुमें, जगा बनी हे हृद प्यारी ॥ देशी  
 प्रदेशी आवे जातरा. सामली सरन पण

३० ॥ ३ ॥ नाजिराय कुष जान प्रगट हे, मछ्देवीके  
 तुम नदा ॥ तिषक जाल शिर ठत्र धिराजे, मुख सिरी  
 हे पूजनमचदा ॥ ३० ॥ ४ ॥ काने कुमल शिर मुकुट  
 धिराजे, वांहे वेरखा हृद सोहे ॥ सामरी सुरत ह  
 द मुरत धिराजे, सब संतनको मन मोहे ॥ ३०  
 ॥ ५ ॥ आंगी अजय धनी प्रजुजीकी, कुंमलकी ठरी हे  
 न्यारी ॥ गळे मोतीयनको हार धिराजे, सुदर सुरत  
 हे प्यारी ॥ ३० ॥ ६ ॥ मृत्युलोक पाताल्लोकमें  
 स्वर्गलोकमें तुम चदा ॥ सरथ देवमें आप घडेरा,  
 आदिनाथ प्रजु जिणंदा ॥ ३० ॥ ७ ॥ साख चोरासी जे  
 गवी आयु, पीठे केवल प्रजु पाया ॥ नरत सरीखा हु  
 धाज वेटा, कनक जमित विष करवायो ॥ ३० ॥ ८ ॥  
 चार खूटमें नाम तुमारा, ध्यान धरे सब मुर्षादा ॥  
 राय राणा तोकु आय नमे हे, करो आप सब पावंदा  
 ॥ ३० ॥ ९ ॥ पगधियां चरुतां प्रायश्चित्त जावे, द  
 रिसनसें दिख होय राजी ॥ रोग सोग सब जाय ना  
 जके, गल जावे दुशमन पाजी ॥ ३० ॥ १० ॥ एक  
 वात तो अजय तुमारी, हु जाणु हु वुनफोखा ॥ तेरे  
 नामसें शूटे बेनी, और शूटे छोहका ताखा ॥ ३०

॥ ११ ॥ मन शुद्ध करके समरण करतां, एहे चित्त  
 तुजकुं ध्यावे ॥ अन्न धन्न अरु माणक मोती, पुत्र  
 कलत्र लह्मी पावे ॥ ॠ० ॥ १२ ॥ देवल तो मजबूत  
 बन्या हे, उपर इंद्रा सोनेका ॥ उँलु दोलु कोट व-  
 नाया, सब सिंगी बंध चूनेका ॥ ॠ० ॥ १३ ॥ तो-  
 रण थन्न बन्या अति नीका, पंचरंग नेजा फररे ॥  
 वीरघंट चिहुं दिशि वाजंतां, ते जाणे अंबर घररे ॥ ॠ०  
 ॥ १४ ॥ अगुरुवम् अगुरुवम् बाजे नोवतां, जणण  
 जणण जह्वरी वाजे ॥ किंकरत किंकरत तालज ऊकर,  
 प्रणन प्रणन घूघर वाजे ॥ ॠ० ॥ १५ ॥ शीश ति-  
 लक शिर जाल विराजे, उँर ऊलकत हे हीरकणी ॥  
 चमर उत्र शिर ऊपर धरते, ऐसी शोजा अजव वनी ॥  
 ॠ० ॥ १६ ॥ सनूमुख हस्ती एक पटाजर, जिनकी  
 शोजा हृद कहेता ॥ ऋषजदेवके मात पिता दो, ऐरा-  
 वत ऊपर वेठा ॥ ॠ० ॥ १७ ॥ दोनुं वाजु हस्ती घूमे,  
 जिनकुं ऐसा सणगारी ॥ कंठ चरण घूघर घमकंता,  
 वाजत है सुंदर प्यारी ॥ ॠ० ॥ १८ ॥ जवसागरसें  
 आप तरे हो, अत्र सेवककुं तुम तारो ॥ मायाजालमें  
 लपट रहा है, जिनगुं मेरो नहि सारो ॥ ॠ० ॥ १९ ॥

अष्ट करम दस घेर रहा है, जिनशु समरन नहीं कदा  
 ॥ जव जव प्रजुजी सेवा दीजे, तुम साहेब ने हम वदा  
 ॥ ३० ॥ २० ॥ हु तो प्रजुजी सेवक सागे, किरपा क-  
 रजो जिनशरजी ॥ मेरे आसरो एक तुमारा, तुम द  
 रिसणसें दिख राजी ॥ ३० ॥ २१ ॥ कहत सावणी  
 रोना गुरजी, अरज सुणो प्रजुजी मेरी ॥ चोरासी दु  
 र्गतिकु टाखो, उर टाखो जवजव फेरी ॥ ३० ॥ २२ ॥  
 अधिक ऊपमा तुमकु सोहे, कहेतां पार नाही आवे ॥  
 नरजव पाय तुऊ नहीं घ्यावे, ते नर अतिही दु  
 पावे ॥ ३० ॥ २३ ॥ एक चित्तसें सुणे सावनी, तिनके  
 सब प्राहित जावे ॥ रुद्धि सिद्धि नवे निधि होवे  
 विपत जाय संपन्न आवे ॥ ३० ॥ २४ ॥ संघत् अडारे  
 शाठा वरसें, माहीपूनम गुरुधारे ॥ कही सावनी अरुप  
 बुद्धिसें, सहेर सखुवरमां प्यारे ॥ ३० ॥ २५ ॥ २०१ ॥

॥ अथ वैराग्यमय सावणी एकसो वेमी ॥ -

अरज हमारी सुणो दीनपति, कोन पांति तिरणां ॥  
 हम दु खो फिरत संसार चतुर्गति, सो तुमसे तिरनां ॥  
 अ० ॥ १ ॥ घोराघोर नरकके जीतर, नाना दुःख  
 जरना ॥ माग्न तारुन वेदन जेदन, उर देह धरनां ॥

अ० ॥ १ ॥ कबहुं तिरियंच योनी पायके, गळे पास  
 परनां ॥ ह्युधा तृषा अरु शीत ऊष्णतो, मार मार करना ॥  
 अ० ॥ ३ ॥ देवविभ्रूति पायके सुंदर, देख देख फुरनां ॥  
 जब मोला मुरजावण लागी, सोच किये मरना ॥ अ०  
 ॥ ४ ॥ मनुष्यजनम पायके जटक्यो, कहुं नाहीं थिर-  
 नां ॥ साहिव तुम शरणागत राखो, जनम मरण  
 हरनां ॥ अ० ॥ ५ ॥ १०१ ॥

॥ अथ लावणी एकसो त्रणमी ॥

॥ सद्गुरुजी महारा सरण आयांकी लज्जा राख-  
 जो ॥ स० ॥ पतित उद्धारण विरुद सुणीने, आयो  
 तुमारे पास ॥ अब मनवंडित पूरो महारां, एहीज  
 दिलकी आस जी ॥ स० ॥ १ ॥ काम क्रोध मद लोच  
 तजी में, तज दियो सब संसार ॥ नवपदनु एक ध्यान  
 धरीने, पाया सहु गुणपार जी ॥ स० ॥ २ ॥ देश देशमें  
 शुच विराजे, परचा जग विख्यात ॥ इण कलिमांहे सु-  
 रतरु सरिखा, प्रगट रह्या साक्षात जी ॥ स० ॥ ३ ॥  
 चिंतामणि और कामधेनु सम, माहरे तुंहीज देव ॥  
 आण धरुं शिर ताहरी, (सिरे) करुं तुमारी सेव जी  
 ॥ ४ ॥ मात पिता वंधव तं जगमें. हितकारी गद्गद्य

॥ राजा राणा सद्गु जगमांहे सेवे तुमारा पाय जी ॥  
 स० ॥ ५ ॥ आज प्रभु तुम धरण पसार्ये, सीधां बां  
 ठित काज ॥ क्षत्री प्रधान तुमारां दरिस्ण, मोहन  
 गुणका राज जी ॥ स० ॥ ६ ॥ १०३ ॥

॥ अथ क्षावणी एकसो चारमी ॥

॥ देख पराई रीत, रोवे क्युं होसु रे ॥ जपिया न  
 जाय जिनराज, जीधमा तोसु रे ॥ पूरव पुण्य पसाय,  
 नरतन सायो रे ॥ आदोसर सरिखो देव दुर्लज पायो  
 रे ॥ १ ॥ तेंतज्या तीर्थकर देव, जोरे जोवे रे ॥ ह्यान  
 रतनकी गांठ, समज धिन खोवे रे ॥ २ ॥ जूठी जग  
 तकी जोरु, जीध घेर छेतो रे ॥ नरजबमें सागे खोरु,  
 चेतन चेतो रे ॥ ३ ॥ सुख दुःखनां फल होय, कर्मकां  
 टाखो रे ॥ समकित सरधाकी रीत, रुमी पासो रे ॥  
 ॥ ४ ॥ युं समजावे जिनदास, मनको अपनो रे ॥ जिन  
 राज जन धिन जाय, जनम ज्यु सुपनो रे ॥ ५ ॥ १०४ ॥

॥ अथ श्रीचतामणि पार्श्वनाथनी क्षावणी

एकसो पांचमी ॥

॥ वे कर जोकी शीश नमाके, गुण गाऊ अथ में  
 तेरे ॥ श्रीचितामणि पार्श्व प्रजुजी, लक्षा राखो तुम

मेरे ॥ ए टेक ॥ अश्वसेनके कुंवर कनैया, वामदेवी  
 माता थारे ॥ तीन लोकको नाथ कहीजे, पारसनाथ  
 हे अवतारे ॥ चोशठ इंद्र चमर डुलावे देवी तीर्थकर,  
 थारे ॥ सुर नर अनेक देवता, हाजर रहेता तुम्हारे ॥  
 मोहनगारी मूरत प्रभुकी, दरसन करते बहु तेरे ॥  
 श्रीचिं० ॥ १ ॥ मस्तक मुकुट काने युग कुंकल, ति-  
 लक पनेकी मन महोते ॥ वांहे वाजुबंध जंर बेर-  
 खा, हंस गले विच जग जोते ॥ कटि कंदोरा कर्मां हा-  
 थमें, सुंदर मूरत हृद शोते ॥ सुंदर मूरत दरसन क-  
 रकें, आनंद दिलमें बहु होते ॥ देश देशमें शोभा सु-  
 नकें, आयो शरणे में तेरे ॥ श्री० ॥ २ ॥ लख चोराशी  
 चटकत कोट्यो, जीवाजोनि जुगते सारे ॥ अब तो प्र-  
 भुजी आप निजावो, जव जव शरणां हे थारे ॥ मात  
 पिता तुम शेष हमारे, तुंही हमारे शिग्दारे ॥ संकट  
 काटो विघ्न निवारो, शरणे आयो हुं थारे ॥ कृद्धि  
 सिद्धि काज मन कामना, सुख संपत्ति कर दे मेरे ॥  
 श्री० ॥ ३ ॥ पार्श्व यद्ग अधिष्टायक थारे, पदमावती  
 शोहे सारे ॥ काला गोरा दोय मतवाला, मेरु खका  
 तेरे दरवारे ॥ परचा पूरण पार्श्व प्रभुजी, चिंता चूरो



हमारे ॥ जैनप्रकाशक मन्मथी श्रव तो, शरणे आई  
 प्रजु तारे ॥ चदगोपाल प्रजु तुम गुन गावे, आशा  
 पूरो तुम मेरे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ १०५ ॥

॥ अथ उपदेशनी सावणी एकसो ठही ॥

॥ सुनियो रे प्यारे वात हमारी, सब काऊ नर  
 नारी, खसककी केसी कहु न्यारी ॥ एआंकणी ॥ ५  
 समे रे पुनियादारीके, रसम बसमे हे सारी, खेकन  
 कुठ साधुकी ता न्यारी ॥ कुण हे रे मात पिता सुत  
 यधु, कोन कहो प्यारी, सुपनकी जेसी बनी गुजक्या  
 री ॥ सरन किसीका नइ हे रे, जिसमें बसमनसे  
 धारी, उनोंकी बातों हे जारी ॥ जमत हे जब जग  
 लके बिचमं, सबही संसारी, जमर उर्धु फुलण फुल  
 धारी ॥ जिसमें रे कोउ नहीं हे डूजा, दिख धरो इक  
 तारी ॥ ख० ॥ सु० ॥ १ ॥ भन जोवन सब डूर रहे  
 जन, तनजी नहीं तेरा, आखर तो हे जगलमें बेरा ॥  
 अजब बहार बनी बाहिरसें, अदर असुचेरा, धोषो  
 तुम उनकु बहूतेरा ॥ मिथ्यामतिके घास बसे हे,  
 आहु कर्म घेरा ॥ जिसमेरे संघर अघर उमै, रस्ता  
 कर जेरा ॥ सोइ होय संतनका घेरा ॥ देख डुरस्तासें

दिलमस्ती, जस्ती हे रे ज़ारी ख० ॥ स० ॥ १ ॥ इ-  
 हज़ी रे वात उसीने दाखी, साखी सब जाई, निर्जरा  
 सबहीमें स्वाही ॥ चौदे रोजको लोक कहतु हे, गति  
 चारो आई, पंचमी शिवगति बतलाइ ॥ तिसमें रे चे-  
 तनरूप अरूपी, गति जिसने पाई, उनोंकी कही न  
 संक काई ॥ सब हे रे जोडु लोक विचारे, आपणी ठ-  
 गवाई, उनोंके हाथे बनवाई ॥ इह गत जानत सोइ,  
 जन मानत संत कहे सारी ॥ ख० ॥ स० ॥ ३ ॥ जो  
 कोऊ साच कहो रे पूरे, सो गुरु नहीं जाता, उरनसें  
 दिलजर रंग लाता ॥ जिसकुं नहीं रस्तेकी माबुम,  
 सोउ नर भूलाता, येही एक नुकता कहिलाता ॥ सब  
 कहे साहिव तारणहारा, इह जाणी जाता, तवि कुठ  
 इनसें बनि आता ॥ ठंड लावणी वारे जावना, षाल-  
 चंद गा ।, खुसीसें दिलकुं समजाता ॥ इसकुं रे गावे  
 दिल विच जावे, सेई समजं सारी ॥ ख० ॥ सु० ॥ ४ ॥  
 ॥ नवपदनी लावणी तुरानी चालमां एकसो सातमी ॥

॥ सकल सुखदायक नर नारी, जजो सिद्धचक्र सु-  
 जस धारी ॥ स० ॥ दुर्लभ मानवभव पाया, जगतमें  
 उत्तम कुल आया ॥ मिला संजोग सुगुरुराया, धर-

मका ध्यान धरो ज्ञाया ॥ आत्मका कल्याण करोजी,  
 परिहर पर गुण दूर ॥ आश्रवका सब रस्ता रोको,  
 सवर कर नरपूर ॥ मिटे दुर्गतिका दुःख नारी ॥ नज  
 ॥ १ ॥ देवत्वकी अधिकार, जेद कहे दोय सुखदाई  
 ॥ जिनवर सिद्ध नजो नार्ह, ज्योतिगु ज्योति मिछ  
 जाई ॥ तीन जेद गुरुतत्वकाजी, आचारिज उब  
 जाई ॥ रक्षत्रयी आराधतां रे, मुनिवरजी माहाराय  
 ॥ परम मंगल ठे हितकारी ॥ न० ॥ २ ॥ तत्वधरमें  
 सुखकारी, जेद कहत हे चक्षारी ॥ दरिसन पद ठे उ  
 पकारी, ग्यान तरब गुण सिणगारी ॥ संजम सत्तर प्र  
 कार धिराजे, तप पद ठे श्रीकार ॥ मन बच काया धिर  
 करी पूजो, जिम पामो नवपार ॥ एही नवपदकी बसि  
 हारी ॥ न० ॥ ३ ॥ कहे गणधर गौतम ऐसी, श्रेणिकर्म  
 प्रजुसे सुणी तैसी ॥ वीर प्रजु पण कही जैसी, आज त  
 लक अखितथ वेसी ॥ नृप श्रीपाल प्रमुख सुख पाया  
 सिद्धधर परताप ॥ उगणीसमें बोधीसमें, षणी सावणी  
 ठाप ॥ कही मुनिवर अघरषद सारी ॥ न० ॥ ४ ॥ १९७ ॥  
 ॥ सावणी कल्याण रागमां एकसो आवमी ॥  
 ॥ आरति करुं श्रीपार्श्व प्रजुकी, जन्म बनाग्मी हे

जिनका ॥ घननं घननं वाजे घंटा घण, ऐसा ध्यान  
 धरुं जिनवरका ॥ आ० ॥ १ ॥ जब कमठासुर कोप  
 कियो तव, श्याम घटा विजरी चमकी ॥ गिरुठ गा-  
 जत मूसलधारा, धरु धरुका जगशंका ॥ आ० ॥  
 ॥ २ ॥ थररर आसन कंपे सुरको, तव धरणीधर चित्त  
 चमका ॥ फण विस्तार हजार किये तव, ऊमक जाय  
 प्रभु तन ठंका ॥ आ० ॥ ३ ॥ जब पद्मावती सब सि-  
 णगारे, ताथेइ नाचत ले फिरका ॥ ध्रमक ध्रमक धौं-  
 मादल बाजत, घननं घूधुरके घरका ॥ आ० ॥ ४ ॥  
 दीदीदीं कट नोवत वाजे, धौंधौं कट डुंडुजि धौका ॥  
 याविध गीत संगीत वाजत सब, गांधर्व गान करे जि-  
 नका ॥ आ० ॥ ५ ॥ तननं खिरर तंत ताल सब, रुफ  
 रौंरौं करते रुंका ॥ जेरण फेरण के ऊणकारे, जाग-  
 रुदी जालरके ऊंका ॥ आ० ॥ ६ ॥ सुर नर इंद्र सब  
 जे जे करते, जीवित सफल जया जिनका ॥ अमृत उ-  
 दय तिण वेर जयो सुख, को विस्तार कहे तिनका ॥  
 आ० ॥ ७ ॥ १०७ ॥

॥ लावणी-होरीनी चालमां एकसो नवमी ॥

आदि जिनेसर कियो पोरणो, आ रस सेलकीयां

॥ आ० ॥ ए टेक ॥ घना एकसो आठ सेरमी, रस ज  
 रिया ठे नीका रे ॥ छलट जात्र श्रेयांस बहोरावे, मांन  
 देषी आबुका रे ॥ आ० ॥ २ ॥ वेवडुडुजि वाज रही हे,  
 सोनझ्यारी विरखा रे ॥ घारे मासशु कियो पारणो,  
 गइ जूख खयर तिरम्बा रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ अद्धि सिद्धी  
 कारज मन कामना, घर घर मगखाचार ॥ पुनिया ह  
 रख बधामणां कांइ, अखात्रीज तिवार रे ॥ अ० ॥  
 ॥ ३ ॥ सकट काटो विघन निवारो, राखो हमारी  
 खाज रे ॥ बे कर जोनी नान्हू कहिता, अयजदेव  
 महाराज रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ १०ए ॥

॥ अथ नेमनाथजीनी खावणी एकसो दशमी ॥

॥ काली पटा कायल बन चार्ह ॥ ए देषी

॥ ठाही घटा गगनमें कारी, राजुलकु विरहडु ख  
 त्तारी ॥ ठा० ॥ टेक ॥ चोमासा खग्या रस चीना,  
 आया आषाढ रग महीनां, चारु तरफसें वादख पीना,  
 विजुखीनें चमकनां कीना, दिख होत भरुकत सीना,  
 में अषखा सखि पति हीना, ठकाना सररररर खलत  
 समीर, भररररर करत समीर, ठररररर अरथ समीर,  
 आखि कैसी करु सदधीर, बुरी तकदीर ॥ पीया बिन

प्यारी ॥ राजुलकुं विरहदुःख चारी ॥ ढा० ॥ १ ॥ ए  
 आंकणी ॥ सहसावननें श्याम घनघोर, जर जोर बो-  
 लते मोर, दादुर मिल करते दोर, पिऊ पिऊ पपैया  
 सोर, जरु लग्या बुंद ऊकजोर, विच दमके दामिनी  
 कोर, उकावणी खरुकरुकरु रव घन माला, तरुकरुकरु  
 जल परनाला, अरुकरुकरु नाला खाला ॥ में दुःखी  
 हुइ बेहाल हीयेमें, सात्र हुइ जलधारी ॥ रा० ॥ २ ॥  
 जादोमें पवन प्रवीणा, बादलमै धनुष रंगीणा, जंग-  
 लमै नदी स्वर जीणा, जुं वाजे मनोहर वीणा, अव  
 एसें कहो क्या जीना, प्रीतमनें मुजे दुःख दीना ॥ उ-  
 काना युं विलपत मुख मुरजाइ, सखीयन मिल दोरु  
 जगाई, विलखत वचन सुनाइ ॥ सखी देखो पीयाकी  
 रीन, तोरुके प्रीतम गये गिरनारी ॥ रा० ॥ ३ ॥ आ-  
 सोजमे जरा नहीं धीर, यादुचंद जये वेपीर, उठ  
 चली नेमके तीर, काटनकुं कर्म अंजीर, प्रीतमसें ली-  
 यो अकसीर, व्रत संजम समकित हीर ॥ उरानी शि-  
 व राजुल नेम सिधाये, इंद्रादिक जस गुण गाये, ज-  
 वि जन मिल शीश नमाये ॥ मुनि कहे कपूरचंद प्रेमसें,  
 वंद जाउं बलिहारी ॥ रा० ॥ ४ ॥ ११० ॥

॥ श्रीश्वजितनाथ महाराजनी छावणी ॥

॥ एकसो श्रग्यारमी ॥

॥ श्रीश्वजितनाथ महाराज, गरीबनिवाज, जकरे  
 जिनवर जी ॥ सेवक शिर नामी तुने उद्यारेश्वरजी ॥ कर  
 माफी मारा धांक, रज्ज्हीयो रांक, अनता जवमें (१)  
 श्याव्यो बुतारा शरण, धळी दुःख दवमें ॥ क्रोधादिक  
 धुकता चार, खरेस्वर स्वार, सग्या मुज केडे (१) वळी  
 पापो मारो नाथ, ठेक ठेडे ॥ ध्या मुजरो मुज जग  
 धान, करु गुणगान, ध्यानमां धरजी (१) सेव० ॥ १ ॥  
 में पूरण कर्यां ठे पाप, सुणजो श्याप, कहु कर जोमी  
 (१) मुज जुनामां जगधान, चूख नहीं थोमी ॥ जीव  
 हिंसा श्रपरपार, करी किरतार, हवे शु करवु (१)  
 जुवु वहु बोखी, साचने शु हरवु ॥ तुज खोखामां मुज  
 शीश, जाण जगदीश, गमे ते करजी (१) सेव० ॥  
 ॥ २ ॥ में कर्षां वहु कुकर्म, धरी नहीं धर्म, पूर्य हु  
 पापी (१) श्रवळो धई तोरी श्याण, मेंज उत्थापी  
 ॥ में मूरख निदा घणी, मुनि परतणी करी हरखायो  
 (१) परदारा वेखी लवाम, हु लखचायो ॥ किंकर

कहे केशवदास, आणीने व्हाल, दुःख तुं हरजी ( १ )  
सेवक ॥ ३ ॥ इति ॥ १११ ॥

॥ मिथ्यात्वी वर्णन लावणी एकसो वारमी ॥

॥ कंकरकुं शंकर करी माने, ए कुमतिकी बाताहै ॥

आक धतूरा बेल पांतशुं, पूजत शिव रंग राता है ॥

कं ॥ १ ॥ चमी जीवका गला कटावे, लोक कहे ए

माता है ॥ ताकुं पूज मगन मन मोहन, सो नर नरकै

जाता है ॥ कं ॥ २ ॥ कुगुरुशुं परत्नव दुःख पामे, नहि

त्रिलजर एक शाता है ॥ कुदेवकुं चेतन युं सेवत, हिं-

साधर्म दुःखदाता है ॥ कं ॥ ३ ॥ कुगुरु त्याग सुगुरु

निज सेवे, नित्य निर्ग्रथ गुण गाता है ॥ जिनवर गु-

ण जिनदास बखाने, ए मुक्तिका खाता है ॥ कं ॥ ४ ॥

॥ अथ श्रीशंखेश्वरजीनी लावणी एकसो तेरमी ॥

॥ श्रीशंखेश्वर गाम विराजे, अद्भुत महिमा हे

जिनका ॥ पारसनाथ प्रभु सुखदायक, बन्ना पराक्रम हे

जनका ॥ जगत वत्सल जरत कहावे, जवि जन सेवो

सुख कामें ॥ १ ॥ जपो संखेसर समरथ साहिव, ऐसो

और न दुनियामें ॥ ए आंकणी ॥ जिनके आगे वा-

जित्र वाजे, नाटक नाचे नर नारी ॥ आठूं जामही



नोवस धाजे, देवदुदुजि अनुसारी ॥ देश देशके संभ  
 पति आवे, जात्रा करनकु ठन ठामे ॥ जपो० ॥ १ ॥  
 अघे जनकु आंखज देवे, निधनियाकु धन देवे ॥ सुत  
 चाहे ठनकु सुत देवे, थिर करी मन जो प्रभु सेवे ॥  
 रोग शोक संताप मिटावे, जय सब नासे सब नासे नामे  
 ॥ जपो० ॥ ३ ॥ संकट पनिया जय जादवकु, तय क  
 ष्यजी आराधे ॥ जरु धरणींइ तिहां दीनी प्रतिमा, नमन  
 करयो तस गाविंदे ॥ जरु ठांट जय जरा निवारी, ह  
 रख जया सब वसुधामें ॥ जपो० ॥ ४ ॥ इति ॥ ११३  
 ॥ अथ कुमति सुमति संवाद सावणी एकसो चौदमी ॥  
 ॥ दुरमति दूर खनी रहोरी, प्रभुजीने विदाकरी  
 महाराज ॥ ए टेक ॥ जय लग तेरी जास न जानी,  
 तय तक अग रमाइ ॥ अय अछे कर हमने जानी,  
 तु ठे मोहकी जाइ ॥ दुर ० ॥ १ ॥ तु ठे सहीयर  
 विषयजोगकी, तिहशु अय नहि नाता ॥ निकस पु  
 रीशु बाहिर हो जा, प्रभुधरणकी रतसा ॥ दुर० ॥ २ ॥  
 दुरमति राणी यु ठठ घोखी, सुण चेतनतु अग्यानी ॥  
 जिणे समताशु स्नेह लगायो, अछ मर्या नहि पानी ॥  
 दुर० ॥ ३ ॥ तु दुरमति दिन दिन द्रखीने, सब घोरासी

चरमावे ॥ चेतनराय कहे सुण ठगणी, ढिन ढिन चित्त  
 चोरावे ॥ दुरण ॥ ४ ॥ मिल मिल महमुंदिकेरे महेलमे,  
 नित वाघे वदलाऊ ॥ समताका तुं संग ठोरु दे, तु-  
 ऊकुं गिलमे विठाऊं ॥ दुरण ॥ ५ ॥ चेतनराय कहे  
 सुण दुरमति, तुऊकुं लेहर न लाऊं ॥ हमने रतन अ-  
 मूलक पाया, तुऊकुं धक्का दिलाऊं ॥ दुरण ॥ ६ ॥  
 जब दुर्मति यह जइ खिसानी, कंत बिना कांहां जाऊं ॥  
 ॥ जाई पुकारुं पिता मोहकुं, चेतन पकरु मगाऊं ॥  
 दुरण ॥ ७ ॥ जाइ पुकारया पिता मोहकुं, चेतन कूडे  
 कुमाया ॥ समताकुं पटराणी कीनी, हमकुं धक्का दि-  
 लाया ॥ दुरण ॥ ८ ॥ कोप जरे राजा तब बोले, राग  
 द्वेष बोलवाऊं ॥ अब तुं महारे पास बैठ जा, चेतन  
 पकरु बोलाऊं ॥ दुरण ॥ ९ ॥ पकरु मगाऊं जोर न  
 पाऊं, काम क्रोध उपजाऊं ॥ आठ सुचुट वाके संग  
 देके, बहुविध नाच नचाऊं ॥ दुरण ॥ १० ॥ राग द्वेष  
 दो परकुं जेज्या, सुण चेतन अग्यानी ॥ दुरमतिकुं  
 धक्का दिलाया, मोहकी कहाण नहि मानी ॥ दुरण  
 ॥ ११ ॥ कहाण न मानी जई गुमानी, सुमताने वह-  
 काया ॥ मसक बंधागी मार पडेगी. मोहराजा चरु

आया ॥ दुर० ॥ १२ ॥ इतनी सुन कर चेतन चमक्या  
 धीरज खरुग उठाया ॥ राग द्वेयके सिरपर ताड्या  
 मोहराय पर आया ॥ दुर० ॥ १३ ॥ नीरु पनी राजा  
 अय मोरघा, सेना जागी जाया ॥ मोन पकर कर  
 दुर्मति रोह, अब मेरे कबु न घचाई ॥ दुर० ॥ १४ ॥  
 कबु न घचाई पीठा पुरकुं, आइ अकल एक ऊपाई ॥  
 समताकु जाय काना दीना, चेतन करी वनाई ॥ दुर०  
 ॥ १५ ॥ तुं समता मेरी कषकी वैरण, मेरा बंध यह  
 काया ॥ नगन दिगवर वनमें राखा, घर घर छार फि  
 राया ॥ दुर० ॥ १६ ॥ में जुनी गोरीने सय सुख दीना,  
 याके संग दु ख पाया ॥ बाह पकर जब शिवपुर जेज्या  
 फिर जुगमें नहि आया ॥ दुर० ॥ १७ ॥ जुगमें नहि  
 आया चेतन जीवता, ठाणक राज कहाया ॥ सुमति  
 कुमति दोऊकुं तजके, अविच्छ मन समजाया ॥  
 दुर० ॥ १८ ॥ ११४ ॥

॥ अथ उपदेशनी लावणी एकसो पहरमी ॥

॥ चतुर नर दिखकु समजानां, निकट घाट पाखरु-  
 जग सरवर, पार उतर जानां ॥ ईसमें गोता नहीं  
 खानां, आसपास रसता है खोटा, इनमें टख जानां

॥ च० ॥ १ ॥ मधुवन धरन मिथ्या जल उनका, इं-  
द्रिके उनमाना ॥ पात्र धरे तो पकरु सुवावे, कुयुरु सु-  
गरवाना ॥ च० ॥ २ ॥ निकट घाटका जल पीवे सो,  
होवे हेरोना ॥ जल खारा अति रोग वढावे, राय द्वेष  
माना ॥ च० ॥ ३ ॥ कुधरम उजारु रस्ता है खोटा,  
मोहमांहे जरम ठानां ॥ काम जोग दोय चोर लूटारे,  
करत बहोत जानां ॥ च० ॥ ४ ॥ सुविधिनाथ सद्-  
गुरुकी वतीयां, एक चित्त न्याना ॥ खरची विमल ज्ञा-  
वनाकी उहां, लीजें सनमाना ॥ च० ॥ ५ ॥ कुविध  
पवन नावरुगुजु लै, इलाज करवानां ॥ देवचंद कहे  
शिवपुर चालो, सावधान श्याना ॥ च० ॥ ६ ॥ १२५ ॥  
॥ उपदेशनी लावणी एकसो शोद्धमी दक्षणी चालमां ॥

॥ सुगुण नर श्रीजिन गुण गानां, विकट कोट सं-  
कट जव अटवी, ताकू लंघ जानां ॥ प्रभुजीसैं कर  
इक तानां, मोहजाला विच हे अति दूर्गम, तनही उ-  
लजानां ॥ सु० ॥ १ ॥ गुण अंनत पारस प्रभुजीके,  
तामें चित्त देनां ॥ करमकीच कलुपित आतम गुण,  
निर्मल कर लेनां ॥ सु० ॥ २ ॥ निर्विकार प्रभु विविध  
, निहारित, निज अक्षय वरनां ॥ ते जीवजाव परिण-

आया ॥ दुर० ॥ १२ ॥ इतनी सुन कर चेतन चमक्या  
 धीरज खरुग उठाया ॥ राग छेपक सिरपर ताड्या  
 मोहराय पर आया ॥ दुर० ॥ १३ ॥ जीरु पनी राजा  
 जय मोरपा, सेना जागी जाया ॥ मोन पकरु कर  
 दुर्मति रोह, अब मेरे कतु न बचाई ॥ दुर० ॥ १४ ॥  
 कतु न बचाई पीठा पुरकु, आइ अकस एक ऊपाई ॥  
 समताकु जाय काना दीना, बेनन करी बसाई ॥ दुर०  
 ॥ १५ ॥ तुं समता मेरी कयकी घेरण, मेरा कथ बह  
 काया ॥ नगन दिगवर बनमें राखा, घर घर छार फि  
 राया ॥ दुर० ॥ १६ ॥ में जुनी गोरीने सब सुख दीना,  
 याके संग दु ख पाया ॥ बाह पकरु जय शिवपुर जेज्या  
 फिर जुगमें नहि आया ॥ दुर० ॥ १७ ॥ जुगमें नहि  
 आया चेतन जीवता, ठाणक राज कहाया ॥ सुमति  
 कुमति दोऊकु तजके, अविषस मन समजाया ॥  
 दुर० ॥ १८ ॥ ११४ ॥

॥ अथ उपदेशनी लावणी एकसो पहरमी ॥

॥ चतुर नर दिखकु समजानां, निकट घाट पाखरु  
 जग सरवर, पार उत्तर जानां ॥ ईसमें गोता नहीं  
 खानां, आसपास रसता है खोटा, इनमें टस जानां

॥ च० ॥ १ ॥ मधुवन धरन मिथ्या जल उनका, इं-  
द्रिके उनमाना ॥ पात्र धरे तो पकन खुवावे, कुशु-  
गरवाना ॥ च० ॥ २ ॥ निकट घाटका जल पीवे सो,  
होवे हेरोना ॥ जल खारा अति रोग बढावे, राय द्वेष  
माना ॥ च० ॥ ३ ॥ कुधरम उजाम रस्ता है खोटा,  
मोहमांहे जरम ठानां ॥ काम जोग दोय चोर लुटारे,  
करत बहोत जानां ॥ च० ॥ ४ ॥ सुविधिनाथ सद्-  
गुरुकी वतीयां, एक चित्त न्याना ॥ खरची विमल ज्ञा-  
वनाकी उहां, लीजें सनमाना ॥ च० ॥ ५ ॥ कुविध  
पवन नावरुगुजु लै, इलाज करवानां ॥ देवचंद कहे  
शिवपुर चालो, सावधान श्याना ॥ च० ॥ ६ ॥ ११५ ॥  
॥ उपदेशनी लावणी एकसो शोलमी दक्षणी चालमां ॥

॥ सुगुण नर श्रीजिन गुण गानां, विकट कोट सं-  
कट जव अटवी, ताकू लंघ जानां ॥ प्रभुजीसैं कर  
इक तानां, मोहजाला विच हे अति दूर्गम, तनही उ-  
लजानां ॥ सु० ॥ १ ॥ गुण अंनत पारस प्रभुजीके,  
तामैं चित्त देनां ॥ करमकीच कलुपित आनम गुण,  
निर्मल कर लेनां ॥ सु० ॥ २ ॥ निर्विकार प्रभु विविध  
, निहारित, निज अक्षय वरनां ॥ २ ॥

ति परमगें, शुद्ध परिणति धरनां ॥ सु० ॥ ३ ॥ नि  
 रुपाधिक जार्वे चेतनतें, निज घरमें रमनां ॥ परम प्र  
 मोद आनद मोजसैं, इन्द्रियकों दमनां ॥ सु० ॥ ४ ॥  
 ऐसैं आतम सगति उह्लासैं, आतमगुण सजनां ॥ शुद्ध  
 कृमा कल्याण परमपद, संपदकृ जजनां ॥ सु० ॥ ५ ॥  
 ॥ अथ श्रीनेमनाथनी छावणी एकसो सत्तरमी ॥

॥ पीया चक्षा गिरिधरकुं, मेरा दुख मत कर ज  
 ननी ॥ घरी मेरा दुख मत कर जननी, में जाऊगी  
 गिरनार, खेळंगी दीक्षा जवतरणी ॥ ए० ॥ १ ॥ सूख  
 धरात करीके व्याहन आये नेम जिनहरिणी ॥ तोर  
 णसैं रथ फेर दीयो जिन, पशुपोकार सुनी ॥ ए०  
 ॥ २ ॥ करत करमको नास नेम जिन, कामिनी शिव  
 धरनी ॥ हमकृ ठाम् चक्षे जग जीतर, अब कैसें क-  
 रनी ॥ ए० ॥ ३ ॥ मात तात सुत बेन जानजी, करो  
 कृमा सगरी सजनी ॥ अथ स्नेहकी नाहीं माइ हम,  
 करु नेम मिलनी ॥ ए० ॥ ४ ॥ दुईर दुख निवार  
 विदारक, दयाधरम करनी ॥ पूरषजवके पाप उद  
 यसैं, यह अचरिज धरनी ॥ ए० ॥ ५ ॥ देव मनुष्य  
 तिर्यच् नरक गति, इत्य पावे करणी ॥ मिथ्यामति

मत पीया हाजाहज, वैर वैर मरनी ॥ ए० ॥ ६ ॥ सं-  
 यम दरसन ग्यान रमण सुख, वखत चढी वरनी ॥  
 पाये ऐसा कोउ न देखा, एहि काल करनी ॥ ए०॥७॥  
 ॥ आदिनाथ स्तवन एकसो अठारमुं ॥

॥ विहाग तथा कालिगडा रागमां ॥

॥ पोढो पोढोजी रूपत्र विहारे, निद्रावश नयन तिहारे  
 ॥ पो० ॥ प्रभु आलस अंग हुलसाइ, पूठे मरुदेवा  
 माइ ॥ पो० ॥ १ ॥ प्रभु नारि सुनंदा राणी उन रुच  
 रुच सहेज समारी ॥ पो० ॥ २ ॥ प्रभु नवलसुं नेह  
 सनेहा, मनवंडित फल देहा ॥ पो० ॥ ३ ॥ प्यारे  
 सेवक हितकर गावे, मनवंडित फल पावे ॥ पो०  
 ॥ ४ ॥ अजर अमर पद पावे, कर जोमी शीश न-  
 मावे ॥ पो० ॥ ५ ॥ इति ॥ ११७ ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर जिन स्तवन एकसो उंगणीशमुं ॥

॥ साहिवा श्रीसीमंधर साहिवा, साहिवा तुमें  
 प्रभु देवाधिदेव ॥ सनमुख जुवोने माहारा साहिवा,  
 मनशुद्धें करुं तुऊ सेव ॥ एकवार मलोने मोरो सा-  
 हिवा ॥ ए० ॥ १ ॥ साहिवा सुख दुःख वातो मारे अति  
 घणी, साहिव कुण आगल कहुं नाथ ॥ साहिव केवल-



ति परसंगे, शुद्ध परिणति धरनां ॥ सु० ॥ ३ ॥ नि  
 रुपाधिक ज्ञावे चेतनते, निज घरमें रमनां ॥ परम प्र  
 मोद श्यानद मोजसें, इन्द्रियको दमनां ॥ सु० ॥ ४ ॥  
 ऐसें श्यातम सगति उह्लासें, श्यातमगुण सजनां ॥ शुद्ध  
 कृमा कल्याण परमपद, संपदकृ जजनां ॥ सु० ॥ ५ ॥  
 ॥ अथ श्रीनेमनाथनी सावणी एकसो सत्तरमी ॥

॥ पीया चक्षा गिरिवरकृ, मेरा दुख मत कर ज  
 ननी ॥ परी मेरा दुख मत कर जननी, में जाऊगी  
 गिरनार, छेठगी दीक्षा जवतरणी ॥ ए० ॥ १ ॥ खूब  
 वरात करीके व्याहन श्याये नेम जिनहरिणी ॥ तोर  
 णसें रथ फेर दीयो जिन, पशुपोकार सुनी ॥ ए०  
 ॥ २ ॥ करत करमको नास नेम जिन, कामिनी शिव  
 धरनी ॥ हमकृ ठांरु चक्षे जग जीतर, अब कैसें क  
 रनी ॥ ए० ॥ ३ ॥ मात तात सुत बेन ज्ञानजी, करो  
 कृमा सगरी सजनी ॥ अब स्नेहकी नाहीं माइ हम,  
 करु नेम मिष्टनी ॥ ए० ॥ ४ ॥ दुर्द्धर दुख निवार  
 विदारक, दयाधरम करनी ॥ पूरवजबके पाप उद  
 यसें, यह अचरिज धरनी ॥ ए० ॥ ५ ॥ देव मनुष्य  
 तिर्येषू नरक गति, दुःख पावे करणी ॥ भिष्यामति

मत पीया हात्राहल, वैर वैर मरनी ॥ ए० ॥ ६ ॥ सं-  
यम दरसन ग्यान रमण सुख, बखत जली बरनी ॥  
पाये ऐसा कोउ न देखा, एहि काल करनी ॥ ए०॥७॥

॥ आदिनाथ स्तवन एकसो अठारसुं ॥

॥ विहाग तथा कालिंगडा रागमां ॥

॥ पोढो पोढोजी ऋषन्न विहारे, निद्रावश नयन तिहारे  
॥ पो० ॥ प्रभु आलस अंग हुलसाइ, पूढे मरुदेवा  
साइ ॥ पो० ॥ १ ॥ प्रभु नारि सुनंदा राणी उन रुच  
रुच सहेज समारी ॥ पो० ॥ २ ॥ प्रभु नवलसुं नेह  
सनेहा, मनवंडित फल देहा ॥ पो० ॥ ३ ॥ प्यारे  
सेवक हितकर गावे, मनवंडित फल पावे ॥ पो०  
॥ ४ ॥ अजर अमर पद पावे, कर जोमी शीश न-  
मावे ॥ पो० ॥ ५ ॥ इति ॥ ११७ ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर जिन स्तवन एकसो उगणीशसुं ॥

॥ साहिबा श्रीसीमंधर साहिबा, साहिबा तुमें  
प्रभु देवाधिदेव ॥ सनमुख जुवोने माहारा साहिबा,  
मनशुद्धें करुं तुज सेव ॥ एकवार मलोने मोरा सा-  
हिबा ॥ ए० ॥ १ ॥ साहिबा सुख दुःख वातो मारे अति  
घणी, साहिव कुण आगल कहुं नाथ ॥ साहिव केवळ-

ज्ञानी प्रभु जां मखे, साहिय तो थाठ हु रे सनाथ ॥  
 ए० ॥ २ ॥ साहिय जरतखेत्रमां हु अथतरपो, साहिय  
 श्रोतु जे पटसुं पुण्य ॥ साहिय ज्ञानीनो बिरह प  
 ष्यो थाकरो, साहिवा ज्ञाना रणो अति दूर ॥ ए०  
 ॥ ३ ॥ साहिय दश दृष्टांतें दोहिलो, साहिय उत्तम  
 कुल अथतार ॥ साहिय पाम्यो पण हारी गयो, जिम  
 रत्न ठकाळ्यो काग ॥ ए० ॥ ४ ॥ साहिय खटरस जो  
 जन घट्टु करथां, साहिय तृप्ति न पाम्यो खगार ॥ सा  
 हिय हु रे अनादि शूलमां, तेणें रजस्यो घणो ससार ॥  
 ए० ॥ ५ ॥ साहिय सजन कुटुघ मेखी घणा, साहिय  
 सेने दुःखे दू खी थाय ॥ साहिय जीव एक ने कर्म जू  
 जवां, ते कर्मथी दूर्गति जाय ॥ ए० ॥ ६ ॥ साहिय  
 धन मेखववा हु भसमस्यो, साहिय तृष्णानो नाव्यो  
 पार ॥ साहिय छोजें खटपट बहु करी, तेणें न जोयुं  
 पुण्य ने पाप ॥ ए० ॥ ७ ॥ साहिय जमी ठपर शुद्ध  
 अशुद्ध ठे, जेम रवि करे तेज प्रकाश ॥ साहिय तेम  
 रे ज्ञानी मखे थके, ते तो थापे समकित घास ॥ ए०  
 ॥ ८ ॥ साहिय मेघ वरस ठे धारुमां, साहिय वरसें ठे  
 गामोगाम ॥ साहिय ठाम कुठाम जुवे नहि, साहिय  
 णवु महोदानु काम ॥ ए० ॥ ९ ॥ साहिय हु घस्यो

चरतने ठेरुले, तमें वस्या महाविदेह मजार ॥ साहिव  
 घूर रहि करुं वंदना, साहिव चवसनुद्र जतारो पार ॥  
 ए० ॥ १० ॥ साहिव तुम पासे देव घणा वसे, एक  
 सोकलजो महाराज ॥ साहिव सुखनो संदेशो सांनकुं,  
 तो सहेजे सरे मुऊ काज ॥ ए० ॥ ११ ॥ साहिव हुं त-  
 मारा पगनी मोजनी, साहिव हुं तमारा दासनो दास  
 ॥ साहिव ज्ञानविमलसूरि एम जणे, साहिव मने  
 राखो तमारी पात ॥ ए० ॥ १२ ॥ ॥ १२ ए ॥ इति ॥

॥ दोलत विषे दोहा ॥

॥ दोलत तुजेनि रंग है, सकल जगत् वश कीन ॥  
 आण फिराइ दश दिशी, नर पशु सब आधीन ॥ १ ॥  
 जाके घर दोलत हुवे, सोइ सरवतें श्रेष्ठ ॥ ताकूं स-  
 व चाहत अरु, सो न चहै मद पुष्ट ॥ २ ॥ धन चा-  
 हत है सरव जत, जूलि जात किरतार ॥ जिन धन  
 अरु जनकू किए, तांही दीन विसार ॥ ३ ॥ लक्ष्मी  
 दोलत द्रव्य धन, मायाहू पुनि नाम ॥ अनेकविध  
 और हु कहत, जग जन सकल सकाम ॥ ४ ॥  
 धन है असत् पदार्थ जग, सो जन जानत नांहि ॥  
 लालचमें लपटायके, जूलि फिरै चवमांहि ॥ ५ ॥  
 संग लाय नहि कोइ धन, संग न को ले जात ॥ ता

कारण जगडे करन, बांधव हू विश्रस्वात ॥ ६ ॥ साधु  
संत योगी यती, संन्यासी श्रु शेख ॥ सबही धन  
कारन खिये, विविध प्रकार जु जेख ॥ ७ ॥ धनमें  
हैं पसी मोहिनी, सबकु वश करि छेत ॥ याकू किसने  
वश कियो, कोइ बनाइ देत ॥ ८ ॥

॥ दैव विपे सोरठा ॥

॥ जाता तणां जुहार, वखता तणां वधामणां ॥  
दैव तणो व्यषहार, मिक्षिप के मिक्षिये नहीं ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सरपर केहें दीहडे, कठोकठे नीर ॥ दैव सयोगे  
विहि वसें, उगठा मांहि करीर ॥ १ ॥ दैवह रूठो शु  
करे, नाहु उथसे कूश्च ॥ के वेस्या घर पाठवे, के  
रमकावे जुश्च ॥ २ ॥ दैव न काहु तें टरत, खिसयो  
करै सो सत्य ॥ विधिने देव कियो प्रगट, तांहिन  
त्यागत नित्य ॥ ३ ॥ दैव कर्म वश हे अगत, दोमें  
आदि कौन ॥ याको करो विचार जन, सुख पाव  
हुगे जोन ॥ ४ ॥ दैव नांहि इतही अधिक, देव दे  
बमें श्रेष्ठ ॥ देव दैव वश पुनि गिरत, जोगत पुनी-  
अनिष्ट ॥ ५ ॥ दैव न होवे अन्याया, कथा सुनो जग  
मांहि ॥ राम दैव वश वन किये, राषण नाश करांहि ॥ ६ ॥

## वाक्यामृत.

१. स्त्री ऋतुषोडश (१६) दिवसप्रमाण, तेजां प्रथमना ३-४ दिवस पठी समरात्री (४-६-७ विगेरे) मां गर्भ रहे तो पुत्र अने विषम रात्री (५-७-९) मां गर्भ रहे तो पुत्री जाणवी. १६ मी रात्रीए गर्भ रहे तो सुलक्षण पुत्र जाणवो.

२. दिवा निषेधः (दिवसे मैथुन क्रीडानो निषेध) त्रीजे मासे माताने दोहलो (गर्भ ने लइ मनोरथ) थाय; ते जातिनो दोहलो थाय ते रीते पुत्रादिक संज्ञये.

३. पुरुषने ७०० नामी अने ए धमनी होय ठे त्यारे स्त्रीने ६०० अने नपुंसकने ६७० नामी होय ठे.

४. कोइ जाग्यशाळी पुरुषनेज (पूरा) ३२ दांत होय ठे अने गर्भमां स्थिति प्रायः २७७॥ दिवसनी होय ठे.

५. जो दांत सहित बाळक जन्मे अथवा सात मासनी अंदर दांत आवे तो कुळक्षय थाय माटे शान्तिकर्म करवुं जोइए.

६. ज्यां गुणीजनोनो निवास होय, सत्य-सरल व्यवहार होय, पवित्रता चोरुखाइ सचवाती होय,

प्रतिष्ठा, गुण गौरव अने अपूर्व गुणनो छात्र यतो हाय,  
त्यांज (तेवा स्थळ विशेषमाज) बुद्धिशाली जाइ ध्वे  
नोए वसवु उचित ठे

७ दरेक अप्टमी, चतुदर्शी, पूर्णिमा, अमावास्या,  
मरण सूतक अने चंद्र-सूर्य ग्रहण समये सेमज बीजा अ  
नेक अस्वाभ्यायवाळा स्थळे अने समये जणवु घटे नहि

८ शास्त्र अनुगण (प्रेम प्रीति) आोग्य, विनय,  
उद्यम अने बुद्धि अथे अन्यासना अतरंग कारण जाणवा  
अने सहाभ्यायी, जोजन, वस्त्र, गुरु तथा पुस्तक प  
घर्षा धास्य कारण जाणवा

९ व्यापार या व्यवसाय करतां जे डव्य (पैसा)  
नो छात्र थोय सेना चार जाग करवा १ जकार नि  
मित्ते, २ धर्म निमित्ते, ३ जोग निमित्ते, अने ४ कुटुंब  
पोषण निमित्ते

१० नाती हरबे (हिमज) जीणी धारीक घाटेखी अने  
साकर जीणी धारीक घाटेखी ते बंनेने सरखा जागे बे  
वसत सवार सांजे खेवाची प्रमेहनो व्याधि मटी शके ठे

